M-09825696131

(राजअ : 35)

ذَنْبِهِ)). [راجع: ٣٥]

बाब 29 : इस बयान में कि दीन आसान है

٢٩- بَابُ الدِّيْنُ يُسْرٌ،

جैसा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इर्शाद है कि अल्लाह को सबसे ज़्यादा वो दीन पसंद है जो सीधा और सच्चा हो। (और वो यक़ीनन दीने इस्लाम है जो सच है)

وَقَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَحَبُّ الدِّيْنِ إِلَى اللهِ الْحَنِيفِيَّةُ السَّمْحَةُ))

(39) हमसे अ़ब्दुस्सलाम बिन मुतह्हिर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको उ़मर बिन अ़ली ने मअ़न बिन मुहम्मद ग़िफ़ारी से ख़बर दी, वो सईद बिन अबू सईद मक़बरी से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बेशक दीन आसान है और जो शख़्स दीन में सख़्ती इख़्तियार करेगा तो उस पर दीन ग़ालिब आ जाएगा (और उसकी सख़्ती न चलेगी) बस (इसलिये) अपने अ़मल में पुख़्तग़ी इख़्तियार करो और जहाँ मुम्किन हो मियानारवी (मध्यमार्ग) बरतो और ख़ुश हो जाओ (कि इस तर्ज़े अ़मल से तुमको दोनों जहाँ के फ़वाइद ह़ासिल होंगे) और सुबह और दोपहर और शाम और किसी क़द्र रात में (इबादत से) मदद ह़ासिल करो। (पंज वक़्ता नमाज़ कभी मुराद हो सकती है कि पाबन्दी से अदा करो) (दीगर मक़ाम : 5673, 6463, 7235)

٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلاَمِ بْنُ مُطَهَّرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ مَعْنِ بْنِ مُحَمَّدٍ الْغِفَارِيِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((إِنَّ الدِّيْنَ يُسْرٌ، وَلَنْ يُشَادَّ الدِّيْنَ أَحَدٌ إِلاَّ غَلَبَهُ، فَسَدِّدُوْا وَقَارِبُوا، وَأَبْشِرُوْا، وَاسْتَعِيْنُوْا بِالْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنَ الدُّلْجَةِ)).

[أطرافه في : ٥٦٧٣، ٦٤٦٣، ٧٢٣٥].

तश्रीह : सूरह ह़ज्ज में अल्लाह पाक ने फ़र्माया है 'मा जअ़ल अ़लैकुम फ़िद्दीनि मिन ह़रजिन मिल्लत अबीकुम इब्राहीम' (अल ह़ज्ज : 78) यानी 'अल्लाह ने दुनिया में तुम पर कोई सख़्ती नहीं रखी बल्कि ये तुम्हारे बाप ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की मिल्लत है।' आयतें और अह़ादीष़ से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ है कि इस्लाम हर त़रह़ से आसान है। उसके उसूली और फ़ुरूई अह़काम और जिस क़द्र अवामिर व नवाही हैं सब में इसी ह़क़ीक़त को मल्हूज़ (दृष्टिगत) रखा गया है मगर स़द अफ़सोस कि बाद के ज़मानों में ख़ुद साख़्ता ईजादात से इस्लाम को इस क़द्र मुश्किल बना लिया गया है कि अल्लाह की पनाह, अल्लाह नेक समझ दे। आमीन!!

बाब 30 : इस बारे में कि नमाज़ ईमान का ह़िस्सा है और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ईमान को ज़ाया करनेवाला नहीं, यानी तुम्हारी वो नमाज़ें जो तुमने बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ मुँह करके पढ़ी हैं, क़ुबूल हैं

٣٠- بَابٌ: الصَّلاَةُ مِنَ الإِيْمَانِ، وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِيْعَ إِيْمَانَكُمْ﴾ يَعْنِي صَلاَتَكُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ

(40) हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनको ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब ने ख़बर दी कि

٤٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ أَوَّلَ مَا قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ نَزَلَ

नबवी में ग़श खाकर गिर पड़ा करते थे। शहर से निकलते तो सवारी में गधा होता, जिस पर मामूली नमदह कसा होता है। छाल की रस्सी की लगाम होती। जब सामने कोई आ जाता तो मज़ाक़न ख़ुद कहते, रास्ता छोड़ो अमीर की सवारी आ रही है।

बड़े मेहमान-नवाज़ थे, अल्लाह तआला आज किसी को मामूली फ़ारिग़ुलबाली (बेनियाज़ी) भी अता करता है तो ग़ुरूर से हालत कुछ और हो जाती है मगर अल्लाह ने आपको ज़मीन से उठाकर अर्श पर बिठा दिया, लेकिन सादगी का वही आलम रहा।

बाब 37: हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का आँहज़रत (ﷺ) से ईमान, इस्लाम और एहसान और क़यामत के इल्म के बारे में पूछना

٣٧- بَابُ سُؤَالِ جِبْرِيْلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الإِيْمَانِ، وَالإِسْلاَمِ، وَالإِحْسَانِ، وَعِلْمِ السَّاعَةِ، وَبَيَانِ النَّبِيِّ ﷺ لَهُ. ثُمَّ قَالَ: ((جَاءَ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ)) فَجَعَلَ ذَلِكَ كُلَّهُ دِيْنًا. وَمَا بَيَّنَ النَّبِيُّ ﷺ لِوَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ مِنَ الإِيْمَانِ. وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلاَمِ دِيْنًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ﴾.

और उसके जवाब में नबी करीम (ﷺ) का बयान फ़र्माना फिर आख़िर में आपने फ़र्माया कि यह जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे जो तुमको दीन की ता'लीम देने आए थे। यहाँ आपने उन तमाम बातों को (जो जिब्राईल अलैहिस्सलाम के सामने बयान की गई थीं) दीन ही क़रार दिया और उन बातों के बयान में जो आँहज़रत (ﷺ) ने ईमान से मुता'ल्लिक़ अब्दुल क़ैस के वफ़्द के सामने बयान की थी और अल्लाह पाक के इस इर्शाद की तफ़्सील में कि जो कोई इस्लाम के अलावा कोई दूसरा दीन इख़्तियार करेगा वो हर्गिज़ क़ुबूल न किया जाएगा।

इस आयते-शरीफ़ा में भी इस्लाम को लफ़्ज़े-दीन से ता'बीर किया गया है।

(50) हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू हय्यान तैमी ने अबू ज़ुरआ से ख़बर दी, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से नक़ल किया कि एक दिन आँहज़रत (ﷺ) लोगों में तशरीफ़ फ़र्मा थे कि आपके पास एक शख़्स आया और पूछने लगा कि ईमान किसे कहते है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमान यह है कि तुम अल्लाह पाक के वजूद और उसकी वहदानियत पर ईमान लाओ और उसके फ़रिश्तों के वजूद पर और उस (अल्लाह) की मुलाक़ात के बरहक़ होने पर और उसके रसूलों के बरहक़ होने पर और मरने के बाद दोबारा उठने पर पर ईमान लाओ। फिर उसने पूछा कि इस्लाम क्या है? आप (ﷺ) ने फिर जवाब दिया कि इस्लाम यह है कि तुम ख़ालिस अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और नमाज़ क़ायम करो और ज़काते फ़र्ज़ अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। फिर उसने एहसान के बारे में पूछा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया एहसान यह है कि

٥٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَارِزًا يَوْمًا لِلنَّاسِ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: مَا الإِيْمَانُ؟)) قَالَ: ((الإِيْمَانُ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلاَئِكَتِهِ، وَبِلِقَائِهِ، وَبِرُسُلِهِ، وَتُؤْمِنَ بِالْبَعْثِ)). قَالَ: مَا الإِسْلاَمُ؟ قَالَ: ((الإِسْلاَمُ أَنْ تَعْبُدَ اللهَ وَلاَ تُشْرِكَ بِهِ، وَتُقِيْمَ الصَّلاَةَ، وَتُؤَدِّيَ الزَّكَاةَ الْمَفْرُوضَةَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ)). قَالَ: مَا الإِحْسَانُ؟ قَالَ: ((أَنْ تَعْبُدَوا

जिन बर्तनों के इस्ते'माल से आपने मना फ़र्माया उनमें अरब के लोग शराब रखा करते थे। जब शराब पीना हराम क़रार पाया तो चंद रोज़ तक आँहज़रत (ﷺ) ने उन बर्तनों के इस्ते'माल की भी मुमानअत फ़र्मा दी। M-09825696131

याद रखने के क़ाबिल : यहाँ हज़रत मौलाना मुबारकपुरी मुद्दज़िल्लहु ने एक याद रखने के क़ाबिल बात फ़र्माई है। चुनाँचे फ़र्माते हैं, **'क़ालल हाफ़िज़ु व फ़ीहि दलीलुन अला तक़द्दुमि इस्लामि अब्दिल क़ैसि अला क़बाइलि मुज़र अल्लज़ीन कानू बैनहुम व बैनल मदीनति व यदुल्लु अला सबक़िहिम इलल इस्लामि अयजन मा रवाहुल बुख़ारी फिल जुम्अति अनिब्नि अब्बासिन क़ाल इन्न अव्वल जुम्अतिन जुमिअत बअद जुम्अति फ़ी मस्जिदि रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़ी मस्जिदि अब्दिल क़ैसि बिजवाषी मिलन बहरैनि व इन्नमा जमऊ बअद रुजूइ वफ़दिहिम इलैहिम फदल्ल अला अन्नहुम सबक़ू जमीअल क़ुरा इलल इस्लामि इन्तहा वहफज्हु फ़इन्नहू यन्फ़उक फ़ी मस्अलतिल जुम्अति फ़िल क़ुरा'** (मिरआत जिल्द अव्वल पेज नं. 44)

यानी हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) ने कहा कि इस हदीष मे दलील है कि अब्दुल क़ैस का क़बीला मुज़र से पहले इस्लाम क़ुबूल कर चुका था जो उनके और मदीना के बीच में रहते थे। इस्लाम में उनकी सबक़त पर बुख़ारी की वो हदीष भी दलील है जो नमाज़े जुम्आ के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि) से मन्क़ूल है कि मस्जिदे नबवी में इक़ामते जुम्आ के बाद पहला जुम्आ जवाषी नामी गाँव में जो बहरीन में वाक़ेअ था, अब्दुल क़ैस की मस्जिद में क़ायम किया गया। ये जुम्आ उन्होंने मदीना से वापसी के बाद क़ायम किया था। पस षाबित हुआ कि वो देहात में सबसे पहले इस्लाम क़ुबूल करने वाले हैं। इसे याद रखो ये गाँव में जुम्आ अदा होने के षुबूत में तुमको नफ़ा देगी।

बाब 41 : इस बात के बयान में कि अमल बग़ैर निय्यत और ख़ुलूस के सहीह नहीं होते और हर आदमी को वही मिलेगा जो वो निय्यत करे

٤١- بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الأَعْمَالَ بِالنِّيَّةِ وَ الْحِسْبَةِ، وَلِكُلِّ امْرِءٍ مَانَوَى فَدَخَلَ فِيْهِ الإِيْمَانُ وَالْوُضُوءُ وَالصَّلاَةُ وَالزَّكَاةُ وَالْحَجُّ وَالصَّوْمُ وَالأَحْكَامُ. وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ﴾ عَلَى نِيَّتِهِ. وَنَفَقَةُ الرَّجُلِ عَلَى أَهْلِهِ - يَحْتَسِبُهَا - صَدَقَةٌ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

तो अमल में ईमान, वुज़ू, नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज्ज सारे अहकाम आ गए, और (सूरह बनी इस्राईल में) अल्लाह ने फ़र्माया ऐ पैग़म्बर! कह दीजिए कि हर कोई अपने तरीक़ यानी अपनी निय्यत पर अमल करता है और (उसी वजह से) आदमी अगर षवाब की निय्यत से अल्लाह का हुक्म समझकर अपने घरवालों पर ख़र्च कर दे तो उसमें भी उसको सदक़े का षवाब मिलता है और जब मक्का फ़तह हो गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अब हिजरत का सिलसिला ख़त्म हो गया लेकिन जिहाद और निय्यत का सिलसिला बाक़ी है।

٥٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ عَنْ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَلِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ

(54) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्होंने यह्या बिन सईद से, उन्होंने मुहम्मद बिन इब्राहीम से, उन्होंने अलक़मा बिन वक़्क़ास से, उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि.) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अमल निय्यत ही से सहीह होते हैं (या निय्यत ही के मुताबिक़ उनका बदला मिलता है) और हर आदमी को वही मिलेगा जो निय्यत करेगा। बस जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की रज़ा के लिए हिजरत करे उसकी हिजरत अल्लाह और उसके

عَادَتْ حَرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالأَمْسِ، وَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ)). فَقِيْلَ لأَبِي شُرَيْحٍ : مَا قَالَ عَمْرٌو؟ قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ مِنْكَ يَا أَبَا شُرَيْحٍ، إِنَّ مَكَّةَ لاَ تُعِيْذُ عَاصِيًا، وَلاَ فَارًّا بِدَمٍ، وَلاَ فَارًّا بِخَرْبَةٍ.

[طرفاه في : ١٨٣٢، ٤٢٩٥].

पूछा गया कि (आपकी यह बात सुनकर) अ़म्र ने क्या जवाब दिया? कहा यूँ कि ऐ (अबू शुरैह़!) ह़दीष़ को मैं तुमसे ज़्यादा जानता हूँ मगर ह़रमे (मक्का) किसी ख़त़ाकार को या ख़ून करके और फ़ित्ना फैलाकर भाग आनेवाले को पनाह नहीं देता।

(दीगर मक़ाम : 1832, 4290)

M-09825696131

तश्रीह : अ़म्र बिन सईद, यज़ीद की त़रफ़ से मदीना के गवर्नर थे, उन्होंने ह़ज़रत अबू शुरैह़ से ह़दीषे़ नबवी (ﷺ) सुनकर तावील से काम लिया और अल्लाह के रसूल (ﷺ) के सह़ाबी ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) को बाग़ी (विद्रोही) व फ़सादी (उपद्रवी) क़रार देकर मक्का शरीफ़ पर फ़ौजकशी का जवाज़ निकाला। ह़ालाँकि उनका ख़्याल बिलकुल ग़लत़ था। ह़ज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि) न बाग़ी थे, न फ़सादी थे। नस़्स़ के मुक़ाबले पर राय व क़यास व फ़ासिद तावीलों से काम लेने वालों ने हमेशा इसी त़रह़ फ़सादात बरपा करके अहले ह़क़ को सताया है। ह़ज़रत अबू शुरैह़ का नाम ख़ुवेलिद बिन अ़म्र बिन स़ख़र है और बुख़ारी शरीफ़ में उनसे सिर्फ़ तीन अह़ादीष़ मरवी हैं। 68 हिजरी में आपने इंतिक़ाल फ़र्माया रह़िमहुल्लाहु व रज़ियल्लाहु अ़न्हु

चूँकि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने यज़ीद की बैअ़त से इंकार करके ह़रमे मक्का शरीफ़ को अपने लिये जाए पनाह (शरणस्थली) बनाया था। इसीलिये यज़ीद ने अ़म्र बिन सईद को मक्का पर फ़ौजकशी करने का हुक्म दिया। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) शहीद किये गये। और ह़रमे मक्का की सख़्त बेह़ुर्मती की गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि) रसूलल्लाह (ﷺ) के फूफीज़ाद भाई और ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि) के नवासे थे। आजकल भी अहले बिदअ़त ह़दीषे़ नबवी को ऐसे ही बहाने निकाल कर रद्द कर देते हैं।

١٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ ذُكِرَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ- قَالَ مُحَمَّدٌ: وَأَحْسِبُهُ قَالَ وَأَعْرَاضَكُمْ - عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي شَهْرِكُمْ هَذَا. أَلاَ لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ مِنْكُمُ الْغَائِبَ))، وَكَانَ مُحَمَّدٌ يَقُولُ: صَدَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، كَانَ ذَلِكَ ((أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) مَرَّتَيْنِ. [راجع: ٦٨]

(105) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे ह़म्माद ने अय्यूब के वास्ते से नक़ल किया, वो मुह़म्मद से रिवायत करते हैं कि (एक बार) अबूबक्र (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का ज़िक्र किया कि आप (ﷺ) ने (यूँ) फ़र्माया, तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल, मुह़म्मद कहते हैं कि मेरे ख़्याल में आप (ﷺ) ने अअ़राज़ुकुम का लफ़्ज़ भी फ़र्माया। (यानी) और तुम्हारी आबरूएँ तुम पर ह़राम हैं जिस त़रह़ तुम्हारे आज के दिन की ह़ुर्मत तुम्हारे इस महीने में। सुन लो! यह ख़बर ह़ाज़िर ग़ायब को पहुँचा दे। और मुह़म्मद (ह़दीष़ के रावी) कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सच फ़र्माया। (फिर) दोबारा फ़र्माया कि क्या मैंने (अल्लाह का यह हुक्म) तुम्हें नहीं पहुँचा दिया। (राजेअ : 68)

मक़्स़द ये कि मैं इस ह़दीषे़ नबवी की ता'मील कर चुका हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज्जतुल विदाअ़ में ये फ़र्माया था, दूसरी ह़दीष़ में तफ़्स़ील से इसका ज़िक्र आया है।

बाब 38 : इस बयान में कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर झूठ बांधने वाले का गुनाह किस दर्जे का है

٣٨- بَابُ إِثْمِ مَنْ كَذَبَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

बाब 38 : इस बयान में कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर झूठ बांधने वाले का गुनाह किस दर्जे का है

٣٨- بَابُ إِثْمِ مَنْ كَذَبَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

(106) हमसे अ़ली बिन जअ़दी ने बयान किया, उन्हें शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्होंने रबई बिन ह़िराश से सुना कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को यह फ़र्माते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर झूठ मत बोलो क्योंकि जो मुझ पर झूठ बांधे वो दोज़ख़ में दाख़िल हो।

M-09825696131

١٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَنْصُورٌ قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَلِجِ النَّارَ)).

यानी मुझ पर झूठ बाँधने वाले को चाहिए कि वो दोज़ख़ मे दाख़िल होने को तैयार रहे।

(107) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे जामेअ़ बिन शद्दाद ने, वो आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से और वो अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। उन्होंने कहा मैंने अपने बाप यानी ज़ुबैर (रज़ि.) से पूछा कि मैंने कभी आपसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की अह़ादीष़ नहीं सुनीं। मैंने आपको यह भी फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स मुझ पर झूठ बांधेगा वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ: إِنِّي لاَ أَسْمَعُكَ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَمَا يُحَدِّثُ فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أُفَارِقْهُ، وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

इसीलिये मैं ह़दीष़े रसूल (ﷺ) बयान नहीं करता कि मुबादा कहीं ग़लत़बयानी न हो जाए।

(108) हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के वास्ते से नक़ल किया कि अनस (रज़ि.) फ़र्माते थे कि मुझे बहुत सी ह़दीष़ें बयान करने से यह बात रोकती है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुझपर जान—बूझकर झूठ बांधे तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قَالَ أَنَسٌ: إِنَّهُ لَيَمْنَعُنِي أَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : ((مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

(109) हमसे मक्की इब्ने इब्राहीम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स मेरे नाम से वो बात बयान करे जो मैंने नहीं कही तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٩- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ هُوَ بْنُ الأَكْوَعِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

ये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) की पहली ष़लाष़ी ह़दीष़ है। ष़लाष़ी वो ह़दीष़ हैं जिनमें रसूले करीम (ﷺ) और इमाम बुख़ारी (रह़) तक दरम्यान में सिर्फ़ तीन ही रावी हों। ऐसी ह़दीष़ों को ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह़) कहा जाता है। और जामेअ़

(106) हमसे अ़ली बिन जअ़दी ने बयान किया, उन्हें शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्होंने रबई बिन ह़िराश से सुना कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को यह फ़र्माते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर झूठ मत बोलो क्योंकि जो मुझ पर झूठ बांधे वो दोज़ख़ में दाख़िल हो।

M-09825696131

١٠٦– حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَنْصُورٌ قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَلِجِ النَّارَ)).

यानी मुझ पर झूठ बाँधने वाले को चाहिए कि वो दोज़ख़ मे दाख़िल होने को तैयार रहे।

(107) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे जामेअ़ बिन शद्दाद ने, वो आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से और वो अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। उन्होंने कहा मैंने अपने बाप यानी ज़ुबैर (रज़ि.) से पूछा कि मैंने कभी आपसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की अह़ादीष़ नहीं सुनीं। मैंने आपको यह भी फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स मुझ पर झूठ बांधेगा वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ: إِنِّي لاَ أَسْمَعُكَ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَمَا يُحَدِّثُ فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أُفَارِقْهُ، وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

इसीलिये मैं ह़दीष़े रसूल (ﷺ) बयान नहीं करता कि मुबादा कहीं ग़लतबयानी न हो जाए।

(108) हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के वास्ते से नक़ल किया कि अनस (रज़ि.) फ़र्माते थे कि मुझे बहुत सी ह़दीष़ें बयान करने से यह बात रोकती है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुझपर जान–बूझकर झूठ बांधे तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٨– حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قَالَ أَنَسٌ: إِنَّهُ لَيَمْنَعُنِي أَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : ((مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

(109) हमसे मक्की इब्ने इब्राहीम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स मेरे नाम से वो बात बयान करे जो मैंने नहीं कही तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٩– حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ هُوَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

ये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) की पहली ष़लाष़ी ह़दीष़ है। ष़लाष़ी वो ह़दीष़ हैं जिनमें रसूले करीम (ﷺ) और इमाम बुख़ारी (रह़) तक दरम्यान में सिर्फ़ तीन ही रावी हों। ऐसी ह़दीष़ों को ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह़) कहा जाता है। और जामेअ़

अस्सहीह में उनकी ता'दाद सिर्फ़ बाईस है। ये फ़ज़ीलत इमाम बुख़ारी (रह़) के दूसरे हम अस्र उलमा (समकालीन विद्वान) जैसे ह़ज़रत इमाम मुस्लिम वग़ैरह, को ह़ासिल नहीं हुई। स़ाहिबे अन्वारुल बारी ने यहाँ ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह़) का ज़िक्र करते हुए ष़नाइयाते इमाम अबू ह़नीफ़ा के लिये मुस्नदे इमाम आज़म नामी किताब का ह़वाला देकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) पर ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा की बरतरी ष़ाबित करने की कोशिश की है मगर ये वाक़िया है कि फ़न्ने ह़दीष़ में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा की लिखी हुई कोई किताब दुनिया में मौजूद नहीं है और मुस्नदे इमाम आज़म नामी किताब मुह़म्मद ख़्वारिज़्मी की जमाकर्दा है जो 674 हिज्री में राइज हुई (बुस्तानुल मुह़द्दिष़ीन पेज नं. 5)

M-09825696131

(110) **हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे अबू अवाना ने अबी हुसैन के वास्ते से नक़ल किया, वो अबू स़ालेह से रिवायत करते हैं, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से, वो रसूलुल्लाह (ﷺ) से कि (अपनी औलाद) का मेरे नाम के ऊपर नाम रखो। मगर मेरी कुन्नियत इख़्तियार न करो और जिस शख़्स ने मुझे ख़्वाब में देखा तो बिलाशुब्हा उसने मुझे देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता और जो शख़्स मुझ पर जान–बूझकर झूठ बोले वो जहन्नम में अपना ठिकाना तलाश करे।**

(दीगर मक़ाम : 3539, 6188, 6197, 6993)

١١٠- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تَسَمَّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي، وَمَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ فِي صُورَتِي. وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

[أطرافه في : ٣٥٣٩، ٦١٨٨، ٦١٩٧، ٦٩٩٣].

तश्रीह़ : इन मुसलसल अह़ादीष़ का मक़्सद ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ लोग ग़लत़ बात मन्सूब करके दुनिया मे ख़ल्क़ (लोगों) को गुमराह न करें। ये ह़दीष़ें बजाते ख़ुद इस बात पर दलालत करती हैं कि आम त़ौर पर अह़ादीष़ नबवी (ﷺ) का ज़ख़ीरा मुफ़्सिद (फ़ासिद, उपद्रवी) लोगों के दस्तेबुर्द से मह़फ़ूज़ रहा है और जितनी अह़ादीष़ लोगों ने अपनी त़रफ़ से गढ़ लीं थीं उनको उलम–ए–ह़दीष़ ने स़ह़ीह़ अह़ादीष़ से अलग छांट दिया।

इसी त़रह़ आप (ﷺ) ने ये भी वाज़ेह़ फ़र्मा दिया कि ख़्वाब मे अगर कोई शख़्स मेरी सूरत देखे तो वो भी स़ह़ीह़ होनी चाहिए क्योंकि शैतान ख़्वाब मे भी रसूलुल्लाह (ﷺ) की सूरत में नहीं आ सकता।

मौज़ूअ और स़ह़ीह़ अह़ादीष़ को परखने के लिये अल्लाह पाक ने जमाअते मुह़द्दिष़ीन ख़ुस़ूस़न इमाम बुख़ारी व मुस्लिम (रह़) जैसे अकाबिरे उम्मत को पैदा फ़र्माया। जिन्होंने इस फ़न की वो ख़िदमत की कि जिसकी पिछले दौर में नज़ीर नहीं मिल सकती, इल्मुर्रिजाल व क़वानीने जरह़ व तअ़दील ईजाद किये कि क़यामत तक उम्मते मुस्लिमा उन पर फ़ख़्र किया करेगी मगर स़द अफ़सोस! कि आज चौदहवीं स़दी में कुछ ऐसे भी मुतअ़स्सिब मुक़ल्लिदे जामिद वजूद में आ गये हैं जो ख़ुद उन बुज़ुर्गों को ग़ैर फ़क़ीह नाक़ाबिले ए'तिमाद ठहरा रहे हैं। ऐसे लोग मह़ज़ अपने मज़्ऊमा तक़्लीदी मज़ाहिब की ह़िमायत में ज़ख़ीर–ए–अह़ादीष़े नबवी (ﷺ) को मशकूक (संदिग्ध) बनाकर इस्लाम की जड़ों को खोखला करना चाहते हैं। अल्लाह उनको नेक समझ दे। आमीन!! ये ह़क़ीक़त है कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) को ग़ैर फ़क़ीह ज़ूदो-रंज बतलाने वाले ख़ुद बेसमझ हैं जो छोटा मुँह और बड़ी बात कहकर अपनी कम अ़क़्ली का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) करते हैं। उसकी मुक़ाम की तफ़्सील में जाते हुए स़ाहिबे अनवारुल बारी ने जमाअ़ते अहले ह़दीष़ और अकाबिरे अहले ह़दीष़ को बार–बार लफ़्ज़ जमाअ़ते ग़ैर मुक़ल्लिदीन से जिस त़ंज़ व तौहीन के साथ याद किया है वो ह़द दर्जा क़ाबिले मज़म्मत है। मगर तक़्लीदे जामिद का अष़र ही ये है कि ऐसे मुतअ़स्सुब ह़ज़रात ने उम्मत में बहुत से अकाबिर की तौहीन व तख़्फ़ीफ़ की है। क़दीमुद्दयाम (प्राचीन काल) से ये सिलसिला जारी है। मुआनिदीन (निंदा करने वालों) ने तो स़ह़ाबा को भी नहीं छोड़ा। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि), उ़क़्बा बिन आमिर, अनस बिन मालिक (रज़ि) वग़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम को ग़ैर फ़क़ीह ठहराया है।

बाब 40 : (दीनी) इल्म को क़लमबंद करने के जवाज़ में

٤٠- باب كِتابة العِلم

M-09825696131

(111) हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्हें वक़ीअ़ ने सुफ़यान से ख़बर दी, उन्होंने मुतर्रफ़ से सुना, उन्होंने शअ़बी (रह.) से, उन्होंने अबू जुहैफ़ा से, वो कहते हैं कि मैंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) से पूछा कि क्या तुम्हारे पास कोई (और भी) किताब है? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं, मगर अल्लाह की किताब क़ुर्आन है या फिर फ़हम है जो वो मुसलमानों को अ़ता करता है। या फिर जो कुछ इस सहीफ़े में है। मैंने पूछा, इस सहीफ़े में क्या है? उन्होंने कहा, दियत और क़ैदियों की रिहाई का बयान है और यह हुक्म है कि मुसलमान, काफ़िर के बदले में क़त्ल न किया जाए।

(दीगर मक़ाम : 1870, 3047, 4172, 3179, 6755, 6903, 6915, 7300)

١١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: قُلْتُ لِعَلِيٍّ هَلْ عِنْدَكُمْ كِتَابٌ؟ قَالَ: لاَ إِلاَّ كِتَابُ اللهِ، أَوْ فَهْمٌ أُعْطِيَهُ رَجُلٌ مُسْلِمٌ، أَوْ مَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ، قَالَ قُلْتُ: وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ؟ قَالَ : الْعَقْلُ، وَفَكَاكُ الأَسِيرِ، وَلاَ يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ.

[أطرافه في : ١٨٧٠، ٣٠٤٧، ٤١٧٢، ٣١٧٩، ٦٧٥٥، ٦٩٠٣، ٦٩١٥، ٧٣٠٠].

बहुत से शिया ये गुमान करते थे कि हज़रत अ़ली (रज़ि) के पास कुछ ऐसे ख़ास अहकाम और पोशीदा बातें किसी सहीफ़े में दर्ज हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके अ़लावा किसी और को नहीं बताए, इसलिये अबू जुहैफ़ा ने हज़रत अ़ली (रज़ि) से ये सवाल किया और आपने साफ़ लफ़्ज़ों में इस बातिल (झूठे) ख़्याल की तर्दीद फ़र्मा दी।

(112) हमसे अबू नुऐम अल फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उनसे शैबान ने यह्या के वास्ते से नक़ल किया, वो अबू सलमा से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि क़बील–ए–ख़ुज़ाआ (के किसी शख़्स) ने बनू लैष के किसी आदमी को अपने किसी मक़्तूल के बदले में मार दिया था, यह फ़तहे मक्का वाले साल की बात है, रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह ख़बर दी गई, आपने अपनी ऊँटनी पर सवार होकर ख़ुत्बा पढ़ा और फ़र्माया कि अल्लाह ने मक्का से क़त्ल या हाथी को रोक लिया। इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं इस लफ़्ज़ को शक के साथ समझो, ऐसे ही अबू नुऐम वग़ैरह ने अल क़त्ल और अल फ़ील कहा है। उनके अलावा दूसरे लोग अल फ़ील कहते हैं। (फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया) कि अल्लाह ने उन पर अपने रसूल और मुसलमानों को ग़ालिब कर दिया और समझ लो कि वो (मक्का) किसी के लिये हलाल नहीं हुआ। न मुझसे पहले और न (बाद में) कभी होगा और मेरे लिये भी सिर्फ़ दिन के थोड़े हिस्से के लिये हलाल कर दिया गया था।

١١٢- حدّثنا أبو نُعيمٍ الفَضْلُ بنُ دُكَين قال: حدّثنا شَيْبانُ عن يَحيى عن أبي سَلَمَةَ عن أبي هُرَيرَةَ أنَّ خُزاعَةَ قتلوا رَجُلاً من بني لَيثٍ عامَ فَتحِ مَكَّةَ بقَتيلٍ منهم قَتَلوه، فأُخبِرَ بذلكَ النبيُّ ﷺ فرَكِبَ راحلَتَه فخطَبَ فقال : ((إنَّ اللهَ حَبَسَ عن مَكَّةَ القَتْلَ - أو الفِيلَ. قالَ مُحَمَّدٌ وَجَعَلُوْهُ عَلَى شَكٍّ أبوعبدِ اللهِ - وسَلَّطَ عليهم رسولَ اللهِ ﷺ والمُؤمِنِينَ. ألا وإنَّها لم تَحِلَّ لأحَدٍ قَبلي، ولا تَحِلُّ لأحَدٍ بَعدي. ألا وإنَّها حَلَّتْ لي ساعةً مِن نهار. ألا وإنَّها ساعتي هذه حَرامٌ : لا يُختلى

شَوْكُها، ولا يُعْضَدُ شَجَرُها، ولا تُلْتَقَطُ سَاقِطَتُها إلا لِـمُنْشِدٍ. فَمَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ إِمَّا أَنْ يُعْقَلَ، وإِمَّا أَنْ يُقَادَ أهلُ القَتِيلِ)). فجاءَ رَجُلٌ من أهلِ اليَمَنِ فقال: اكْتُبْ لِي يا رسولَ اللهِ. فقال: ((اكتبوا لأبي فلان)). فقال رجلٌ من قُرَيْشٍ: إلاَّ الإِذْخِرَ يا رسولَ اللهِ، فإنّا نَجعَلُهُ في بيوتِنا وقبورِنا. فقال النبيُّ ﷺ: ((إلاَّ الإِذْخِرَ)).

[طرفاه في : ٢٤٣٤، ٦٨٨٠]

सुन लो कि वो इस वक़्त हराम है। न इसका कोई कांटा तोड़ा जाए, न इसके पेड़ काटे जाएँ और इसकी गिरी–पड़ी चीज़ें भी वही उठाए जिसका मंशा यह हो कि वो उस शै का तआरुफ़ करा देगा। तो अगर कोई शख़्स मारा जाए तो (उसके अ़ज़ीज़ों को) इख़्तियार है दो बातों का, या तो दियत लें या बदला। इतने में एक यमनी आदमी (अबू शाह नामी) आया और कहने लगा (यह मसाइल) लिख दो तो एक क़ुरैशी शख़्स ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मगर इज़ख़र (यानी इज़ख़र काटने की इजाज़त दे दीजिए) क्योंकि उसे हम घरों की छतों पर डालते हैं। (या मिट्टी मिलाकर) और अपनी क़ब्रों में भी डालते हैं (यह सुनकर) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि (हाँ) मगर इज़ख़र, मगर इज़ख़र। (दीगर मक़ाम : 2434, 2880)

यानी उसके उखाड़ने की इजाज़त है। आँहज़रत (ﷺ) ने यमनी साइल की दरख़्वास्त पर ये सारे मसाइल उसके लिये क़लमबन्द करवा दिये। जिससे मा'लूम हुआ कि तदवीने अहादीष़ व किताबते अहादीष़ की बुनियाद ख़ुद ज़मान–ए–नबवी (ﷺ) से शुरू हो चुकी थी, जिसे हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ज़माने में निहायत एहतिमाम के साथ तरक़्क़ी दी गई। पस जो लोग अहादीष़े नबवी (ﷺ) में ऐसे शुकूक व शुब्हात पैदा करते और ज़ख़ीर–ए–अहादीष़ को कुछ अ़ज्मियों की गढ़ी हुई बताते हैं, वो बिलकुल झूठे कज़्ज़ाब और मुफ़्तरी बल्कि दुश्मने इस्लाम हैं, उनकी ख़ुराफ़ात पर हर्गिज़ कान न धरना चाहिए। जिस सूरत में क़त्ल का लफ़्ज़ माना जाए तो मतलब ये होगा कि अल्लाह पाक ने मक्का वालों को क़त्ल से बचा लिया। बल्कि क़त्ल व ग़ारत को यहाँ हराम क़रार दे दिया। और लफ़्ज़ फ़ील की सूरत में उस क़िस्से की तरफ़ इशारा है जो क़ुर्आन पाक की सूरह फ़ील मे मज़्कूर है कि आँहज़रत (ﷺ) के विलादत वाले साल में हब्श का बादशाह अब्रहा नामी बहुत से हाथी लेकर ख़ाना कअ़बा को गिराने आया था मगर अल्लाह पाक ने रास्ते ही में उनको अबाबील परिन्दों की कंकरियों के ज़रिये हलाक कर डाला।

١١٣ – حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرٌو قَالَ: أَخْبَرَنِي وَهْبُ بْنُ مُنَبِّهٍ عَنْ أَخِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: مَا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَحَدٌ أَكْثَرَ حَدِيثًا عَنْهُ مِنِّي، إِلاَّ مَا كَانَ مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو فَإِنَّهُ كَانَ يَكْتُبُ وَلاَ أَكْتُبُ. تابَعَهُ مَعْمَرٌ عن هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

(113) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अ़म्र ने, वो कहते हैं कि मुझे वहब बिन मुनब्बा ने अपने भाई के वास्ते से ख़बर दी, वो कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को यह कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) के अ़लावा मुझसे ज़्यादा कोई हदीष़ बयान करने वाला न था, मगर वो लिख लिया करते थे और मैं लिखता नहीं था। दूसरी सनद से मअ़मर ने वहब बिन मुनब्बा की मुताबअ़त की, वो हमाम से रिवायत करते हैं, वो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से।

इससे और ज़्यादा वज़ाहत हो गई कि ज़मान–ए–नबवी (ﷺ) में अहादीष़ को भी लिखने का तरीक़ा जारी हो चुका था। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) ये समझे कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने मुझसे ज़्यादा अहादीष़ रिवायत की होंगी, मगर बाद की तहक़ीक़ से मा'लूम हुआ कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) की मरवियात पाँच हज़ार से ज़ाइद अहादीष़ (5376 अहादीष़) हैं। जबकि अ़ब्दुल्लाह

ताईद मे जगह जगह हदीषुल्बाब अफ़आल वला हरज को भी लाए हैं। (अनवारुल बारी जिल्द 4 पेज नं. 104)

मा'लूम होता है कि स़ाहिबे अनवारुल बारी को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) के दिल का पूरा हाल मा'लूम है, इसीलिये तो वह उनके ज़मीर पर ये फ़त्वा लगा रहे हैं। इस्लाम की ता'लीम थी कि मुसलमान आपस में हुस्ने ज़न्न (अच्छे गुमान) से काम लिया करें, यहाँ ये सूए ज़न्न (बुरा गुमान) है। अस्तग़्फ़िरुल्लाह आगे स़ाहिबे अनवारुल बारी मज़ीद वज़ाहत फ़र्माते हैं।

आज इसी क़िस्म के तशद्दुद से हमारे ग़ैर मुक़ल्लिद भाई और हरमैन शरीफ़ेन के नज्दी उ़लमा अइम्मा हनफ़िया के ख़िलाफ़ महाज़ (मोर्चा) बनाते हैं, हनफ़िया को चिढ़ाने के लिये इमाम बुख़ारी (रह़) की इकतरफ़ा अहादीष़ पेश किया करते हैं। (हवाला मज़्कूर)

स़ाहिबे अनवारुल बारी के इस इल्ज़ाम पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है क़ायदा है, **'अल मरउ यक़ीसु अ़ला नफ़्सिही'** (इंसान दूसरों को भी अपने नफ़्स पर क़यास किया करता है) चूँकि इस तशद्दुद और चिढ़ाने का मंज़र किताब अनवारुल बारी के बेशतर मक़ामात पर ज़ाहिर व बाहिर है। इसलिये वो दूसरों को भी इसी ऐनक से देखते हैं, हालाँकि वाक़ियात बिलकुल उसके ख़िलाफ़ हैं। मुक़ामे स़द शुक्र है कि यहाँ आपने अपनी सबसे मअ़तूब जमाअ़त अहले हदीष़ को लफ़्ज़ ग़ैर मुक़ल्लिद भाई से तो याद फ़र्माया। अल्लाह करे कि ग़ैर मुक़ल्लिदो को ये भाई बनाना बिरादराने यूसुफ़ की नक़ल न हो और हमारा तो यक़ीन है कि ऐसा हर्गिज़ न होगा। अल्लाह पाक हम सबको नामूसे इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये आपसी इत्तिफ़ाक़ अ़ता फ़र्माए। सहवन ऐसे मौक़ा पर इतनी तक़्दीम व ताख़ीर मुआफ़ है। हदीष़ का यही मंशा है, हनफ़िया को चिढ़ाना हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) का मंशा नहीं है।

बाब 48 : अल्लाह तआ़ला के इस फ़र्मान की तशरीह में कि तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया है

٤٨- بَابُ قَولِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا أُوْتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيْلاً﴾

(125) हमसे क़ैस बिन हफ़्सी ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद ने, उनसे अअ़मश सुलैमान बिन मुहरान ने इब्राहीम के वास्ते से बयान किया, उन्हों ने अलक़मा से नक़ल किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से रिवायत किया, वो कहते हैं कि (एक बार) में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना के खंडहरात में चल रहा था और आप (ﷺ) खजूर की छड़ी पर सहारा देकर चल रहे थे, तो कुछ यहूदियों का (उधर से) गुज़र हुआ, उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि आपसे रूह के बारे में कुछ पूछो, उनमें से किसी ने कहा मत पूछो, ऐसा न हो कि वो कोई ऐसी बात कह दे जो तुम्हें नागवार गुज़रे (मगर) उनमें से कुछ ने कहा कि हम ज़रूर पूछेंगे, फिर एक शख़्स ने खड़े होकर कहा, ऐ अबुल क़ासिम! रूह क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़र्माई, मैंने (दिल में) कहा कि आप पर वह्य आ रही है। इसलिये मैं खड़ा हो गया। जब आपसे (वो कैफ़ियत) दूर हो गई तो आप ﷺ ने (क़ुर्आन की यह आयत जो उस वक़्त नाज़िल हुई थी) तिलावत फ़र्माई (ऐ नबी!) तुमसे ये लोग रूह के बारे में पूछ रहे हैं। कह दो

١٢٥- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ سُلَيْمَانُ بْنُ مُهْرَانَةَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: بَيْنَا أَنَا أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي خِرَبِ الْمَدِيْنَةِ – وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ مَعَهُ – فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ الْيَهُودِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ : سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ تَسْأَلُوهُ، لا يَجِيءُ فِيهِ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَهُ. فَقَالَ بَعْضُهُمْ لَنَسْأَلَنَّهُ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، مَا الرُّوحُ؟ فَسَكَتَ. فَقُلْتُ إِنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ، فَقُمْتُ. فَلَمَّا انْجَلَى عَنْهُ فَقَالَ: وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ، قُلِ الرُّوحُ

मِنْ أَمْرِ رَبِّي، وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾) قَالَ الأَعْمَشُ: هَكَذَا فِي قِرَاءَتِنَا. وَمَا أُوتُوا.

[أطرافه في : ٤٧٢١، ٧٢٩٧، ٧٤٥٦، ٧٤٦٢].

कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म का बहुत थ़ोड़ा हिस़्सा दिया गया है। (इसलिये तुम रूह की ह़क़ीक़त नहीं समझ सकते) अ़अ़मश कहते हैं कि हमारी क़िरात में वमा ऊतू है। वमा (ऊतीतुम) नहीं।

(दीगर मक़ाम : 4721, 7297, 7456, 7662)

तश्रीह़ : चूँकि तौरात में भी रूह़ के बारे में यही बयान किया गया है कि वो अल्लाह की त़रफ़ से एक चीज़ है, इसलिये यहूदी मा'लूम करना चाहते थे कि उनकी ता'लीम भी तौरात के मुताबिक़ है या नहीं? या रूह़ के सिलसिले में ये भी मुलाह़िदे व फ़लसफ़े की त़रह दूर अज़ कार बातें कहते हैं। कुछ रिवायात से मा'लूम होता है कि ये सवाल आपसे मक्का शरीफ़ में भी किया गया था, फिर मदीना के यहूदी ने भी उसे दोहराया। अहले सुन्नत के नज़दीक रूह़ जिस्मे लत़ीफ़ है जो बदन में इसी त़रह सरायत किये हुए है, जिस त़रह गुलाब की ख़ुश्बू उसके फूल में समाई हुई होती है। रूह़ के बारे में सत्तर अक़्वाल हैं ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह़) ने किताबुर् रूह़ में उन पर ख़ूब रोशनी डाली है। वाक़िया यही है कि रूह़ ख़ालिस़ एक लत़ीफ़ शै है, इसलिये हम अपनी मौजूदा ज़िंदगी में जो कष़ाफ़त से भरपूर है किसी त़रह रूह़ की ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं हो सकते, अकाबिर अहले सुन्नत की यही राय है कि अदब का तक़ाज़ा यही है कि रूह़ के बारे में सुकूत इख़्तियार किया जाए, कुछ उ़लमा की राय है कि मिन अम्रि रब्बी से मुराद रूह़ का आ़लमे अम्र से होना है जो आ़लमे मल्कूत है, जम्हूर का इत्तिफ़ाक़ है कि रूह़ ह़ादिष़ है जिस त़रह दूसरे तमाम अजज़ा ह़ादिष़ हैं। ह़ज़रत इमाम क़द्दस सिर्रुहु का मंशा–ए–बाब ये है कि कोई शख़्स़ कितना ही बड़ा आ़लिम, फ़ाज़िल, मुह़द्दिष़, मुफ़स्सिर बन जाए मगर फिर भी इंसानी मा'लूमात का सिलसिला महदूद (सीमित) है और कोई शख़्स़ नहीं कह सकता कि वो जुम्ला उ़लूम (सारे ज्ञान) पर ह़ावी हो चुका है, इल्ला मन शाअल्लाह!

٤٩- بَابُ مَنْ تَرَكَ بَعْضَ الاِخْتِيَارِ مَخَافَةَ أَنْ يَقْصُرَ فَهْمُ بَعْضِ النَّاسِ عَنْهُ فَيَقَعُوا فِي أَشَدَّ مِنْهُ

बाब 49 : इस बारे में कि कोई शख़्स कुछ ब ातों को इस ख़ौफ़ से छोड़ दे कि कहीं लोग अपनी कम फ़हमी की वजह से उससे ज़्यादा सख़्त (यानी नाजाइज़) बातों में मुब्तला न हो जाएँ

١٢٦- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: قَالَ لِي ابْنُ الزُّبَيْرِ: كَانَتْ عَائِشَةُ تُسِرُّ إِلَيْكَ كَثِيرًا، فَمَا حَدَّثَتْكَ فِي الْكَعْبَةِ؟ قُلْتُ: قَالَتْ لِي: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا عَائِشَةُ لَوْلاَ أَنَّ قَوْمَكِ حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ - قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ: بِكُفْرٍ - لَنَقَضْتُ الْكَعْبَةَ فَجَعَلْتُ لَهَا بَابَيْنِ: بَابٌ يَدْخُلُ النَّاسُ، وَبَابٌ يَخْرُجُونَ)) مِنْهُ

(126) हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने इस्राईल के वास्ते से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्ह़ाक़ से अस्वद के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) तुमसे बहुत बातें छुपाकर कहती थीं, तो क्या तुमसे क़ाबा के बारे में भी कुछ बयान किया, मैंने कहा (हाँ) मुझसे उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (एक बार) इर्शाद फ़र्माया था कि ऐ आ़इशा! अगर तेरी क़ौम (दौरे जाहिलियत के साथ) क़रीब न होती (बल्कि पुरानी हो गई होती) इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा यानी ज़मान–ए–कुफ़्र के साथ (क़रीब न होती) तो मैं क़ाबा को तोड़ देता और उसके लिये दो दरवाज़े बना देता। एक दरवाज़े से लोग दाख़िल होते और दूसरे दरवाज़े से बाहर

(142) हमसे आदम ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब के वास्ते से बयान किया, उन्होंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, वो कहते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) जब (क़ज़ा-ए-हाजत के लिए) बैतुल ख़ला में दाख़िल होते तो ये (दुआ) पढ़ते। ऐ अल्लाह! मैं नापाक जिन्नों और नापाक जिन्नियों से तेरी पनाह चाहता हूँ। (दीगर मक़ाम : 6322)

M-09825696131

١٤٢ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ الْخَلاَءَ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ)). [طرفه في : ٦٣٢٢].

इस हदीष़ में ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) का ये दुआ पढ़ना मज़्कूर है और मुस्लिम की एक रिवायत में लफ़्ज़े अम्र के साथ है कि जब तुम बैतुल ख़ला में दाख़िल हो तो ये दुआ पढ़ो। **बिस्मिल्लाहि अऊ़ज़ू बिल्लाहि मिनल् ख़ुबुषि वल् ख़बाइषि** इन लफ़्ज़ों में पढ़ना भी जाइज़ है। ख़ुबुष और ख़बाइष से नापाक जिन्न और जिन्नियाँ मुराद हैं। हज़रत इमाम ने फ़ारिग़ होने के बाद वाली दुआ की हदीष़ को इसलिए ज़िक्र नहीं किया कि वो आपकी शर्तों के मुवाफ़िक़ न थी। जिसे इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने हिब्बान ने हज़रत आइशा (रज़ि) से रिवायत किया है कि आप फ़ारिग़ होने के बाद **ग़ुफ़रानक** पढ़ते और इब्ने माजा मे ये दुआ आई है, **अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्हब अ़न्निल्अज़ा व आफ़ानी** (सब ता'रीफ़ें उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझको आफ़ियत दी और इस गंदगी को मुझसे दूर कर दिया) फ़ारिग़ होने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ये दुआ भी पढ़ा करते थे।

बाब 10 : इस बारे में कि बैतुल ख़ला के पास पानी रखना बेहतर है

١٠- بَابُ وَضْعِ الْمَاءِ عِنْدَ الْخَلاَءِ

(143) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे हाशिम इब्ने अल क़ासिम ने, कहा कि उनसे वर्क़ा बिन शुक्री ने उ़बैदुल्लाह बिन अबी यज़ीद से नक़ल किया, वो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) पाख़ाना के लिये गए। मैंने आपके लिए वुज़ू का पानी रख दिया। (बाहर निकलकर) आपने पूछा ये किसने रखा? जब आपको बतलाया गया तो आपने (मेरे लिए दुआ की और) फ़र्माया, ऐ अल्लाह! इसको दीन की समझ अ़ता फ़र्मा। (राजेअ़ : 75)

١٤٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ قَالَ: حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي يَزِيْدَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ الْخَلاَءَ فَوَضَعْتُ لَهُ وَضُوءًا. قَالَ: ((مَنْ وَضَعَ هَذَا؟)) فَأُخْبِرَ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ فَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ)).

[راجع: ٧٥]

ये उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना बिन्ते हारिष़ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) की ख़ाला के घर का वाक़िया है। आपको ख़बर देने वाली भी हज़रत मैमूना ही थीं। आपकी दुआ की बरकत से हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) फ़क़ीहे उम्मत क़रार पाए।

बाब 11 : इस मसले में कि पैशाब और पाखाना के वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुँह नहीं करना चाहिये लेकिन जब किसी इमारत या दीवार वग़ैरह की आड़ हो तो कुछ हर्ज नहीं

١١- بَابُ لاَ تُسْتَقْبَلُ الْقِبْلَةُ بِغَائِطٍ أَوْ بَوْلٍ، إِلاَّ عِنْدَ الْبِنَاءِ : جِدَارٍ أَوْ نَحْوِهِ

(144) हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने ज़िब ने, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने अ़ता बिन यज़ीद अल लैषी के वास्ते

١٤٤ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ

١١ – بَابُ لاَ تُسْتَقْبَلُ الْقِبْلَةُ بِغَائِطٍ أَوْ بَوْلٍ، إِلاَّ عِنْدَ الْبِنَاءِ : جِدَارٍ أَوْ نَحْوِهِ

बाब 11 : इस मसले में कि पैशाब और पाखाना के वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुँह नहीं करना चाहिये लेकिन जब किसी इमारत या दीवार वग़ैरह की आड़ हो तो कुछ हर्ज नहीं

١٤٤ – حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ

(144) हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने ज़िब ने, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने अ़ता बिन यज़ीद अल लैषी के वास्ते

يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَى أَحَدُكُمُ الْغَائِطَ فَلاَ يَسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ وَلاَ يُوَلِّهَا ظَهْرَهُ، شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا)).

[طرفه في : ٣٩٤].

से नक़ल किया, वो हज़रत अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुममें से कोई पाख़ाने में जाए तो क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे न उसकी तरफ़ पीठ करे (बल्कि) मश्रिक़ की तरफ़ मुँह कर लो या मग़्रिब की तरफ़।

(दीगर मक़ाम : 394)

M-09825696131

तश्रीह : ये हुक्म मदीना वालों के लिए ख़ास़ है क्योंकि मदीना मक्का से शिमाल (उत्तर दिशा) की त़रफ़ वाक़ेअ है। इसलिए आपने क़ज़ा–ए–ह़ाजत के वक़्त पश्चिम या पूरब की त़रफ़ चेहरा करने का हुक्म दिया, ये बैतुल्ल़ाह का अदब है। इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़दीष़ के उ़न्वान से ये ष़ाबित करना चाहा है कि अगर कोई आड़ सामने हो तो क़िब्ला की त़रफ़ चेहरा कर सकता है। आपने जो ह़दीष़ इस बाब में ज़िक्र की है वो बाब के तर्जुमा के मुत़ाबिक़ नहीं होती क्योकि ह़दीष़ से मुत़लक़ मुमानअ़त निकलती है और बाब के तर्जुमा में इमारत को मुस्तष़्ना (अलग) किया है। कुछ ने कहा है कि आपने ये ह़दीष़ मह़ज़ मुमानअ़त ष़ाबित करने के लिए ज़िक्र की है और इमारत का इस्तिष़्ना आगे वाली ह़दीष़ से निकाला है जो इब्ने उ़मर से मरवी है। कुछ ने लफ़्ज़े ग़ायत़ से सिर्फ़ मैदान मुराद लिया है और इस मुमानअ़त से समझा गया कि इमारत में ऐसा करना दुरुस्त है।

ह़ज़रत अ़ल्लामा शैख़ुल ह़दीष़ मौलाना उ़बैदुल्लाह मुबारकपुरी ने इस बारे में दोनों तरफ़ की दलीलों पर मुफ़स्स़ल (विस्तारपूर्वक) रोशनी डालते हुए अपना आख़िरी फ़ैसला ये दिया है, **'व इन्दी अल इहतिराज़ु अनिल इस्तिक़्बालि वल इस्तिदबारि फ़िल बुयूति अहवतु वुजूबन ला नुदुबन'** यानी मेरे नज़दीक भी वजूबन एह़तियात़ का तक़ाज़ा है कि घरों में भी बैतुल्ल़ाह की त़रफ़ पीठ या मुँह करने से परहेज़ किया जाए। (मिर्आत जिल्द अव्वल पेज नं. 241) अ़ल्लामा मुबारकपुरी (रह़) स़ाह़िबे **तोह़फ़तुल अह़वज़ी** ने भी ऐसा ही लिखा है।

से नक़ल किया, वो ह़ज़रत अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुममें से कोई पाख़ाने में जाए तो क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे न उसकी तरफ़ पीठ करे (बल्कि) मश्रिक़ की तरफ़ मुँह कर लो या मग़्रिब की तरफ़।

(दीगर मक़ाम : 394)

يَزِيْدَ اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَى أَحَدُكُمُ الْغَائِطَ فَلاَ يَسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ وَلاَ يُوَلِّهَا ظَهْرَهُ، شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا)).

M-09825696131

[طرفه في : ٣٩٤].

तश्रीह : ये हुक्म मदीना वालों के लिए ख़ास है क्योंकि मदीना मक्का से शिमाल (उत्तर दिशा) की तरफ़ वाक़ेअ है। इसलिए आपने क़ज़ा–ए–हाजत के वक़्त पश्चिम या पूरब की तरफ़ चेहरा करने का हुक्म दिया, ये बैतुल्लाह का अदब है। इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़दीष़ के उन्वान से ये षाबित करना चाहा है कि अगर कोई आड़ सामने हो तो क़िब्ला की तरफ़ चेहरा कर सकता है। आपने जो ह़दीष़ इस बाब में ज़िक्र की है वो बाब के तर्जुमा के मुताबिक़ नहीं होती क्योंकि ह़दीष़ से मुत्लक़ मुमानअ़त निकलती है और बाब के तर्जुमा में इमारत को मुस्तष़्ना (अलग) किया है। कुछ ने कहा है कि आपने ये ह़दीष़ मह़ज़ मुमानअ़त षाबित करने के लिए ज़िक्र की है और इमारत का इस्तिष़्ना आगे वाली ह़दीष़ से निकाला है जो इब्ने उ़मर से मरवी है। कुछ ने लफ़्ज़े ग़ायत से सिर्फ़ मैदान मुराद लिया है और इस मुमानअ़त से समझा गया कि इमारत में ऐसा करना दुरुस्त है।

ह़ज़रत अ़ल्लामा शैख़ुल ह़दीष़ मौलाना उ़बैदुल्लाह मुबारकपुरी ने इस बारे में दोनों तरफ़ की दलीलों पर मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) रोशनी डालते हुए अपना आख़िरी फ़ैसला ये दिया है, '**व इन्दी अल इहतिराज़ु अनिल इस्तिक़्बालि वल इस्तिदबारि फ़िल बुयूति अहवतु वुजूबन ला नुदुबन**' यानी मेरे नज़दीक भी वजूबन एह़तियात का तक़ाज़ा है कि घरों में भी बैतुल्लाह की तरफ़ पीठ या मुँह करने से परहेज़ किया जाए। (मिर्आत जिल्द अव्वल पेज नं. 241) अ़ल्लामा मुबारकपुरी (रह़) स़ाह़िबे **तोह़फ़तुल अह़वज़ी** ने भी ऐसा ही लिखा है।

बाब 12 : इस बारे में कि कोई शख़्स दो ईंटों पर बैठकर क़ज़ा-ए-हाजत करे (तो क्या हुक्म है?)

١٢ - بَابُ مَنْ تَبَرَّزَ عَلَى لَبِنَتَيْنِ

(145) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने यह़्या बिन सईद से ख़बर दी। वो मुह़म्मद बिन यह़्या बिन ह़िब्बान से, वो अपने चचा वासेअ़ बिन ह़िब्बान से रिवायत करते हैं, वो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। वो कहते थे कि लोग कहते थे कि जब क़ज़ा-ए-हाजत के लिए बैठो तो न क़िब्ले की तरफ़ मूँह करो न बैतुल मक़्दिस की तरफ़ (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि एक दिन मैं अपने घर की छत पर चढ़ा तो आँह़ज़रत (ﷺ) को देखा आप बैतुल मक़्दिस की तरफ़ मुँह करके दो ईंटों पर क़ज़ा-ए-हाजत के लिए बैठे हैं। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (वासेअ़ से) कहा कि शायद तुम उन लोगों में से हो जो अपने कूल्हों के बल नमाज़ पढ़ते हैं। तब मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता (कि आपका क्या मतलब है?) इमाम मालिक

١٤٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَمِّهِ وَاسِعِ بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ: إِنَّ نَاسًا يَقُوْلُوْنَ إِذَا قَعَدْتَ عَلَى حَاجَتِكَ فَلاَ تَسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ وَلاَ بَيْتَ الْمَقْدِسِ. فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ: لَقَدِ ارْتَقَيْتُ يَوْمًا عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ لَنَا، فَرَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَلَى لَبِنَتَيْنِ مُسْتَقْبِلاً بَيْتَ الْمَقْدِسِ لِحَاجَتِهِ. وَقَالَ: لَعَلَّكَ مِنَ الَّذِيْنَ يُصَلُّوْنَ عَلَى أَوْرَاكِهِمْ، فَقُلْتُ : لاَ أَدْرِيْ

मुनासिब होगा कि कुत्ते के लुआब के बारे में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) के मसलक के बारे में हज़रत अल्लामा मौलाना अनवर शाह साहब देवबन्दी (रह़) का क़ौल भी नक़ल कर दिया जाए जो साहिबे अनवारुल बारी की रिवायत से ये है

इमाम बुख़ारी (रह़) से ये बात मुस्तब्अद है कि वो लुआबे कल्ब (कुत्ते के थूक) की त़हारत के क़ाइल हों, जबकि इस बाब में क़त्इयात से नजासत का षुबूत हो चुका है। ज़्यादा से ज़्यादा ये कह सकते हैं कि इमाम बुख़ारी (रह़) ने दोनों त़रफ़ की अह़ादीष़ ज़िक्र कर दी हैं। नाज़िरीन ख़ुद ये फ़ैसला कर लें क्योंकि ये भी उनकी एक आदत है। जब वो किसी बाब में दोनों जानिब क़ुव्वत देखते हैं तो दोनों त़रफ़ की अह़ादीष़ ज़िक्र कर दिया करते हैं। जिससे ये इशारा होता है कि वो ख़ुद भी किसी एक जानिब का यक़ीन नहीं फ़र्माते वल्लाहु आलम। (अनवारुल बारी जिल्द नं. 5 पेज नं. 107) कल्बि मुअल्लम की ह़दीष़ नीचे लाने से भी ज़ाहिर है कि ह़ज़रत इमाम उमूमी त़ौर पर लुआबे कल्ब की त़हारत के क़ाइल नहीं हैं।

कल्बि मुअल्लम (सधाया हुआ कुत्ता) वो कुत्ता जिसमें इत़ाअ़त शिआरी (वफ़ादारी) का माद्दा बहुत ज़्यादा हो और जब भी वो शिकार करे कभी उसमें से ख़ुद कुछ न खाए। (किरमानी)

M-09825696131

١٧٥- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ ابْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كَلْبَكَ الْمُعَلَّمَ فَقَتَلَ فَكُلْ، وَإِذَا أَكَلَ فَلاَ تَأْكُلْ فَإِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ)). قُلْتُ: أُرْسِلُ كَلْبِي فَأَجِدُ مَعَهُ كَلْبًا آخَرَ. قَالَ:- ((فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّمَا سَمَّيْتَ عَلَى كَلْبِكَ وَلَمْ تُسَمِّ عَلَى كَلْبٍ آخَرَ)).

[أطرافه في : ٢٠٥٤، ٥٤٧٥، ٥٤٧٦، ٥٤٧٧، ٥٤٨٣، ٥٤٨٤، ٥٤٨٥، ٥٤٨٦، ٥٤٨٧، ٧٣٩٧].

(175) हमसे ह़फ़्स़ बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने इब्ने अबिस्सफ़र के वास्ते से बयान किया, वो शुअ़बी से नक़ल फ़र्माते हैं, वो अदी बिन ह़ातिम से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से (कुत्ते के शिकार के बारे में) पूछा तो आपने फ़र्माया कि जब तू अपने सधाए हुए कुत्ते को छोड़ दे और वो शिकार कर ले तो तू उस (शिकार) को खा और अगर वो कुत्ता उस शिकार में से ख़ुद (कुछ) खा ले तो तू (उसको) न खाइयो क्योंकि अब उसने शिकार अपने लिए पकड़ा है। मैंने कहा कि कभी–कभी (शिकार के लिए) अपने कुत्ते छोड़ता हूँ, फिर उसके साथ दूसरे कुत्ते को भी पाता हूँ। आपने फ़र्माया, फिर मत खा क्योंकि तुमने बिस्मिल्लाह अपने कुत्ते पर पढ़ी थी। दूसरे कुत्ते पर नहीं पढ़ी।

(दीगर मक़ाम : 2054, 5475, 5476, 5477, 5483, 5484, 5485, 5486, 5487, 7397)

इस ह़दीष़ की अस़ल बह़ष़ किताबुस्सैद में आएगी, इंशाअल्लाहु तआला! मा'लूम हुआ कि आम कुत्ते की नजासत के हुक्म से सधाए हुए कुत्तों के शिकार का इस्तिष्ना है, बशराइते मा'लूमा मज़्कूरा।

बाब 35 : इस बारे में कि कुछ लोगों के नज़दीक सिर्फ़ पेशाब और पाख़ाने की राह से कुछ निकलने से वुज़ू टूटता है

٣٥- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ الْوُضُوءَ إِلاَّ مِنَ الْمَخْرَجَيْنِ الْقُبُلُ وَالدُّبُرِ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ فِيْمَنْ يَخْرُجُ مِنْ دُبُرِهِ الدُّودُ أَوْ مِنْ ذَكَرِهِ نَحْوُ الْقَمْلَةِ: يُعِيْدُ

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि जब तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाजत से फ़ारिग़ होकर आए तो तुम पानी न पाओ तो तयम्मुम कर लो। अ़ता कहते हैं कि जिस शख़्स के पिछले हिस्से

बाब 35 : इस बारे में कि कुछ लोगों के नज़दीक सिर्फ़ पेशाब और पाख़ाने की राह से कुछ निकलने से वुज़ू टूटता है

٣٥- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ الْوُضُوءَ إِلاَّ مِنَ الْمَخْرَجَيْنِ الْقُبُلِ وَالدُّبُرِ

लِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ فِيمَنْ يَخْرُجُ مِنْ دُبُرِهِ الدُّودُ أَوْ مِنْ ذَكَرِهِ نَحْوُ الْقَمْلَةِ: يُعِيدُ

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि जब तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाज़त से फ़ारिग़ होकर आए तो तुम पानी न पाओ तो तयम्मुम कर लो। अ़ता कहते हैं कि जिस शख़्स के पिछले हिस्से

الْوُضُوءَ. وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: إِذَا ضَحِكَ فِي الصَّلاَةِ أَعَادَ الصَّلاَةَ وَلَمْ يُعِدِ الْوُضُوءَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنْ أَخَذَ مِنْ شَعَرِهِ أَوْ أَظْفَارِهِ أَوْ خَلَعَ خُفَّيْهِ فَلاَ وُضُوءَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ : لاَ وُضُوءَ إِلاَّ مِنْ حَدَثٍ. وَيُذْكَرُ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ فَرُمِيَ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَنَزَفَهُ الدَّمُ فَرَكَعَ وَسَجَدَ وَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: مَا زَالَ الْمُسْلِمُونَ يُصَلُّونَ فِي جِرَاحَاتِهِمْ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ وَعَطَاءٌ وَأَهْلُ الْحِجَازِ : لَيْسَ فِي الدَّمِ وُضُوءٌ. وَعَصَرَ ابْنُ عُمَرَ بَثْرَةً فَخَرَجَ مِنْهَا الدَّمُ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. وَبَزَقَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى دَمًا فَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَالْحَسَنُ فِيمَنْ يَحْتَجِمُ : لَيْسَ عَلَيْهِ إِلاَّ غَسْلُ

से (यानी दुबुर से) या अगले हिस्से से (यानी ज़कर या फ़रज से) कोई कीड़ा या जूँ की क़िस्म का कोई जानवर निकले उसे चाहिये कि वुज़ू लौटाए और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि जब (आदमी) नमाज़ में हंस पड़े तो नमाज़ लौटाए और वुज़ू न लौटाए और ह़सन (बस़री) ने कहा कि जिस शख़्स ने (वुज़ू के बाद) अपने बाल उतरवाए या नाख़ून कटवाए या मोज़े उतार डाले उस पर वुज़ू नहीं है। ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं कि वुज़ू ह़दष़ के सिवा किसी और चीज़ से फ़र्ज़ नहीं है और ह़ज़रत जाबिर से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ातुर्रिक़ाअ की लड़ाई में (तशरीफ़ फ़र्मा) थे। एक शख़्स के तीर मारा गया और उस (के जिस्म) से बहुत ख़ून बहा मगर फिर भी उसने रुकूअ और सज्दा किया और नमाज़ पूरी कर ली और ह़सन बस़री ने कहा कि मुसलमान हमेशा अपने ज़ख़्मों के बावजूद नमाज़ पढ़ा करते थे और त़ाऊस, मुहम्मद बिन अ़ली और अहले हिजाज़ के नज़दीक ख़ून (निकलने) से वुज़ू (वाजिब) नहीं होता। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (अपनी) एक फुंसी को दबा दिया तो उसमें से ख़ून निकला। मगर आपने (दोबारा) वुज़ू नहीं किया और इब्ने अबी औफ़ा ने ख़ून थूका। मगर वो अपनी नमाज़ पढ़ते रहे और इब्ने उ़मर और ह़सन (रज़ि.) पछने लगवाने वाले के बारे में ये कहते हैं कि जिस जगह पछने लगे हों उसको धो ले, दोबारा वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं।

M-09825696131

से (यानी दुबुर से) या अगले हिस्से से (यानी ज़कर या फ़रज से) कोई कीड़ा या जूँ की क़िस्म का कोई जानवर निकले उसे चाहिये कि वुज़ू लौटाए और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि जब (आदमी) नमाज़ में हंस पड़े तो नमाज़ लौटाए और वुज़ू न लौटाए और ह़सन (बस़री) ने कहा कि जिस शख़्स़ ने (वुज़ू के बाद) अपने बाल उतरवाए या नाख़ून कटवाए या मोज़े उतार डाले उस पर वुज़ू नहीं है। ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं कि वुज़ू ह़दष़ के सिवा किसी और चीज़ से फ़र्ज़ नहीं है और ह़ज़रत जाबिर से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई में (तशरीफ़ फ़र्मा) थे। एक शख़्स के तीर मारा गया और उस (के जिस्म) से बहुत ख़ून बहा मगर फिर भी उसने रुकूअ़ और सज्दा किया और नमाज़ पूरी कर ली और ह़सन बस़री ने कहा कि मुसलमान हमेशा अपने ज़ख़्मों के बावजूद नमाज़ पढ़ा करते थे और त़ाऊस, मुह़म्मद बिन अ़ली और अहले हिजाज़ के नज़दीक ख़ून (निकलने) से वुज़ू (वाजिब) नहीं होता। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (अपनी) एक फुंसी को दबा दिया तो उसमें से ख़ून निकला। मगर आपने (दोबारा) वुज़ू नहीं किया और इब्ने अबी औफ़ा ने ख़ून थूका। मगर वो अपनी नमाज़ पढ़ते रहे और इब्ने उ़मर और ह़सन (रज़ि.) पछने लगवाने वाले के बारे में ये कहते हैं कि जिस जगह पछने लगे हों उसको धो ले, दोबारा वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं।

(176) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद अल मक़्बरी ने बयान किया, वो ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं, वो कहते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बन्दा उस वक़्त तक नमाज़ ही में रहता है जब तक कि मस्जिद में नमाज़ का इंतिज़ार करता है। उस वक़्त तक कि वो ह़दष़ न करे। एक अ़जमी आदमी ने पूछा कि ऐ अबू हुरैरह (रज़ि.)! ह़दष़ क्या चीज़ है? उन्होंने फ़र्माया कि हवा जो पीछे से ख़ारिज हो। (जिसे उर्फ़े आ़म में गूज़ मारना कहते हैं)

(दीगर मक़ाम : 445, 477, 647, 648, 659, 2119, 3229, 4717)

M-09825696131

الْوُضُوءَ. وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: إِذَا ضَحِكَ فِي الصَّلَاةِ أَعَادَ الصَّلَاةَ وَلَمْ يُعِدِ الْوُضُوءَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنْ أَخَذَ مِنْ شَعَرِهِ أَوْ أَظْفَارِهِ أَوْ خَلَعَ خُفَّيْهِ فَلَا وُضُوءَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ : لَا وُضُوءَ إِلَّا مِنْ حَدَثٍ. وَيُذْكَرُ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ فَرُمِيَ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَنَزَفَهُ الدَّمُ فَرَكَعَ وَسَجَدَ وَمَضَى فِي صَلَاتِهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: مَا زَالَ الْمُسْلِمُونَ يُصَلُّونَ فِي جِرَاحَاتِهِمْ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ وَعَطَاءٌ وَأَهْلُ الْحِجَازِ : لَيْسَ فِي الدَّمِ وُضُوءٌ. وَعَصَرَ ابْنُ عُمَرَ بَثْرَةً فَخَرَجَ مِنْهَا الدَّمُ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. وَبَزَقَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى دَمًا فَمَضَى فِي صَلَاتِهِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَالْحَسَنُ فِيمَنْ يَحْتَجِمُ : لَيْسَ عَلَيْهِ إِلَّا غَسْلُ مَحَاجِمِهِ.

١٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((لَا يَزَالُ الْعَبْدُ فِي صَلَاةٍ مَا كَانَ فِي الْمَسْجِدِ يَنْتَظِرُ الصَّلَاةَ مَا لَمْ يُحْدِثْ)). فَقَالَ رَجُلٌ أَعْجَمِيٌّ: مَا الْحَدَثُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ : الصَّوْتُ (يَعْنِي الضَّرْطَةَ).

[أطرافه في : ٤٤٥، ٤٧٧، ٦٤٧، ٦٤٨، ٦٥٩، ٢١١٩، ٣٢٢٩، ٤٧١٧].

رफ़अ़े ह़ाजत के लिए तशरीफ़ ले गए (जब आप वापस आए, आप ﷺ ने वुज़ू शुरू किया) तो मुग़ीरह बिन शुअ़बा आपके (अअ़ज़ा–ए–वुज़ू) पर पानी डालने लगे। आप (ﷺ) वुज़ू कर रहे थे आपने अपने मुँह और हाथों को धोया, सर का मसह़ किया और मौज़ों पर मसह़ किया।

(दीगर मक़ाम : 203, 206, 363, 388, 2918, 4421, 5798, 5799)

عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ وَأَنَّهُ ذَهَبَ لِحَاجَةٍ لَهُ وَأَنَّ مُغِيرَةَ جَعَلَ يَصُبُّ الْمَاءَ عَلَيْهِ وَهُوَ يَتَوَضَّأُ، فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ وَمَسَحَ عَلَى الْخُفَّيْنِ.

[أطرافه في : ٢٠٣، ٢٠٦، ٣٦٣، ٣٨٨، ٢٩١٨، ٤٤٢١، ٥٧٩٨، ٥٧٩٩].

M-09825696131

बाब 37 : बेवुज़ू होने की ह़ालत में तिलावते क़ुर्आन करना वग़ैरह और जो जाइज़ हैं उनका बयान

٣٧- بَابُ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ بَعْدَ الْحَدَثِ وَغَيْرِهِ

मंसूर ने इब्राहीम से नक़ल किया है कि ह़म्माम (ग़ुस्लख़ाना) में तिलावते क़ुर्आन में कुछ ह़र्ज नहीं, इसी त़रह़ बग़ैर वुज़ू ख़त़ लिखने में (भी) कुछ ह़र्ज नहीं और ह़म्माद ने इब्राहीम से नक़ल किया है कि अगर उस (ह़म्माम वाले आदमी के बदन) पर तह्बन्द हो तो उसको सलाम करो, और अगर (तह्बन्द) न हो तो सलाम मत करो।

وَقَالَ مَنْصُورٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ: لاَ بَأْسَ بِالْقِرَاءَةِ فِي الْحَمَّامِ، وَبِكَتْبِ الرِّسَالَةِ عَلَى غَيْرِ وُضُوءٍ. وَقَالَ حَمَّادٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ: إِنْ كَانَ عَلَيْهِمْ إِزَارٌ فَسَلِّمْ، وَإِلاَّ فَلاَ تُسَلِّمْ.

(183) हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने मख़रमा बिन सुलैमान के वास्ते से नक़ल किया, वो कुरैब—— इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के आज़ादकर्दा ग़ुलाम——से नक़ल करते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि उन्होंने एक रात रसूले करीम (ﷺ) की ज़ोज–ए–मुत़ह्हरा और अपनी ख़ाला ह़ज़रते मैमूना (रज़ि.) के घर में गुज़ारी। (वो फ़र्माते हैं कि) मैं तकिया के अ़र्ज़ (यानी गोशे) की त़रफ़ लेट गया और रसूले करीम (ﷺ) और आपकी अहलिया ने (मा'मूल के मुत़ाबिक़) तकिये की लम्बाई पर (सर रखकर) आराम फ़र्माया। रसूलुल्लाह (ﷺ) सोते रहे और जब आधी रात हो गई या उससे कुछ पहले या उसके कुछ बाद आप बेदार हुए और अपने हाथों से अपनी नींद को दूर करने के लिए आँखें मलने लगे। फिर आपने सूरह आले इमरान की आख़िरी दस आयतें पढ़ीं, फिर एक मश्कीज़े के पास जो (छत में) लटका हुआ था आप खड़े हो गए

١٨٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَاتَ لَيْلَةً عِنْدَ مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ - وَهِيَ خَالَتُهُ - فَاضْطَجَعْتُ فِي عَرْضِ الْوِسَادَةِ، وَاضْطَجَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَهْلُهُ فِي طُولِهَا، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا انْتَصَفَ اللَّيْلُ - أَوْ قَبْلَهُ بِقَلِيلٍ، أَو بَعْدَهُ بِقَلِيلٍ - اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَجَلَسَ يَمْسَحُ النَّوْمَ عَنْ وَجْهِهِ بِيَدِهِ. ثُمَّ قَرَأَ الْعَشْرَ الآيَاتِ الْخَوَاتِيمَ مِنْ سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ. ثُمَّ قَامَ إِلَى شَنٍّ مُعَلَّقَةٍ

बाब 39 : इस बारे में कि पूरे सर का मसह करना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि अपने सरों का मसह करो

٣٩- بَابُ مَسْحِ الرَّأْسِ كُلِّهِ، لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَامْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ﴾

और इब्ने मुसय्यब ने कहा है कि सर का मसह करने में औरत मर्द की तरह है। वो (भी) अपने सर का मसह करे। इमाम मालिक (रह.) से पूछा गया कि क्या कुछ हिस्सा सर का मसह करना काफ़ी है? तो उन्होंने दलील में अब्दुल्लाह बिन ज़ैद की (ये) हदीष पेश की, या'नी पूरे सर का मसह करना चाहिये

وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: الْمَرْأَةُ بِمَنْزِلَةِ الرَّجُلِ تَمْسَحُ عَلَى رَأْسِهَا. وَسُئِلَ مَالِكٌ: أَيُجْزِىءُ أَنْ يَمْسَحَ بَعْضَ الرَّأْسِ؟ فَاحْتَجَّ بِحَدِيْثِ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ.

(185) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने अम्र बिन यह्या अल माज़िनी से ख़बर दी, वो अपने बाप से नक़ल करते हैं कि एक आदमी ने अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) जो अम्र बिन यह्या के दादा हैं, से पूछा कि क्या आप मुझे दिखा सकते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किस तरह वुज़ू किया है? अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कहा कि हाँ! फिर उन्होंने पानी का बर्तन मंगवाया पहले पानी अपने हाथों पर डाला और दो बार धोए। फिर तीन बार कुल्ली की, तीन बार नाक साफ़ की, फिर तीन बार अपना चेहरा धोया। फिर कुहनियों तक अपने दोनों हाथ दो-दो बार धोये। फिर अपने दोनों हाथों से अपने सर का मसह किया। इस तौर पर अपने हाथ (पहले) आगे लाए फिर पीछे ले गए। (मसह) सर के इब्तिदाई हिस्से से शुरू किया। फिर दोनों हाथ गुद्दी तक ले जाकर वहीं वापस लाए जहाँ से (मसह) शुरू किया था, फिर अपने पैर धोए।

(दीगर मक़ाम : 186, 191, 196, 197, 199)

١٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ رَجُلاً قَالَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ - وَهُوَ جَدُّ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى - أَتَسْتَطِيْعُ أَنْ تُرِيَنِي كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَوَضَّأُ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنِ زَيْدٍ : نَعَمْ. فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ فَغَسَلَ مَرَّتَيْنِ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثَلاَثًا، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلاَثًا ثُمَّ غَسَلَ يَدَيْهِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ، ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ : بَدَأَ بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ حَتَّى ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ، ثُمَّ رَدَّهُمَا إِلَى الْمَكَانِ الَّذِيْ بَدَأَ مِنْهُ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ.

[أطرافه في : ١٨٦، ١٩١، ١٩٢، ١٩٧، ١٩٩].

M-09825696131

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह) और इमाम मालिक (रह) का मसलक ये है कि पूरे सर का मसह करना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह पाक ने अपने इर्शाद **वम्सहू बिरुऊसिकुम** (अल माइदा : 6) में कोई हद मुक़र्रर नहीं की कि आधे या चौथाई सर का मसह करो। जैसे हाथों में कोहनियों तक और पैरों में टख़नों तक की क़ैद मौजूद है तो मा'लूम हुआ कि सारे सर का मसह फ़र्ज़ है जब सर पर अमामा न हो और अगर अमामा हो तो पेशानी से सर का मसह शुरू करके अमामा पर हाथ फेर लेना काफ़ी है। अमामा उतारना ज़रूरी नहीं। हदीष की रू से यही मसलक सहीह है।

बाब 40 : इस बारे में कि टख़नों तक पांव धोना ज़रूरी है

٤٠- بَابُ غَسْلِ الرِّجْلَيْنِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ

(186) हमसे मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वहब

١٨٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ

बाब 60 : बच्चों के पेशाब के बारे में

M-09825696131

٦٠- بَابُ بَوْلِ الصِّبْيَانِ

(222) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने हिशाम बिन उ़र्वा से ख़बर दी, उन्होंने अपने बाप (उ़र्वा) से, उन्होंने ह़ज़रते आइशा उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) के पास एक बच्चा लाया गया। उसने आपके कपड़े पर पेशाब कर दिया तो आप (ﷺ) ने पानी मंगाया और उस पर डाल दिया।

(दीगर मक़ाम : 5468, 6002, 6355)

٢٢٢- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخبرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنَّهَا قَالَتْ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِصَبِيٍّ فَبَالَ عَلَى ثَوْبِهِ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَتْبَعَهُ إِيَّاهُ.

[أطرافه في : ٥٤٦٨، ٦٠٠٢، ٦٣٥٥].

(223) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमें मालिक ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, वो उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा (बिन मसऊ़द) से ये ह़दीष़ रिवायत करते हैं, वो उम्मे क़ैस बिन्ते मिह़्सन नामी एक ख़ातून से कि वो रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अपना छोटा बच्चा लेकर आईं जो खाना नहीं खाता था (यानी शीरख़्वार था) रसूले करीम (ﷺ) ने उसे अपनी गोद में बिठा लिया। उस बच्चे ने आप (ﷺ) के कपड़े पर पेशाब कर दिया। आप (ﷺ) ने पानी मंगाकर कपड़े पर छिड़क दिया और उसे नहीं धोया। (दीगर मक़ाम : 5693)

٢٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ أَنَّهَا أَتَتْ بِابْنٍ لَهَا صَغِيْرٍ لَمْ يَأْكُلِ الطَّعَامَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَجْلَسَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي حِجْرِهِ، فَبَالَ عَلَى ثَوبِهِ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَنَضَحَهُ وَلَمْ يَغْسِلْهُ.

[طرفه في : ٥٦٩٣].

शीरख़्वार (दूधपीता) बच्चा जिसने कुछ भी खाना पीना नहीं सीखा है, उसके पेशाब पर पानी के छींटे काफ़ी हैं। मगर ये हुक्म स़िर्फ़ मर्द बच्चों के लिए है बच्चियो का पेशाब बहरहाल धोना ही होगा।

बाब 61 : इस बयान में कि खड़े होकर और बैठकर पेशाब करना (ह़स्बे मौक़े दोनों त़रह़ से जाइज़ है)

٦١- بَابُ الْبَوْلِ قَائِمًا وَقَاعِدًا

(224) हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने अअ़मश के वास्ते से नक़ल किया, वो अबू वाइल से, वो ह़ुज़ेफ़ा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) किसी क़ौम की कूड़ी पर तशरीफ़ लाए (पस) आप (ﷺ) ने वहाँ खड़े होकर पेशाब किया। फिर पानी मंगाया, मैं आप (ﷺ) के पास पानी लेकर आया तो आप (ﷺ) ने वुज़ू किया। (दीगर मक़ाम : 225, 226, 2471)

٢٢٤- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ ﷺ سُبَاطَةَ قَوْمٍ فَبَالَ قَائِمًا، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ، فَجِئْتُهُ بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ.

[أطرافه في : ٢٢٥، ٢٢٦، ٢٤٧١].

मा'लूम हुआ कि किसी ज़रूरत के तह़त खड़े होकर भी पेशाब किया जा सकता है। और जब ज़रूरतन खड़े होकर पेशाब करना जाइज़ हुआ तो बैठकर तो यक़ीनन जाइज़ होगा मगर आजकल कोट पतलून वालों ने खड़े होकर करना अंग्रेज़ों से सीखा है एक मर्द मुसलमान के लिए ये सरासर नाजाइज़ और इस्लामी तहज़ीब के ख़िलाफ़ है क्योंकि उसमें न तो पर्दे का लिहाज़ रखा जाता है और न छींटों से परहेज़ किया जाता है।

अबू अवाना ने अपनी सहीह में निकाला है। अबू अवाना की रिवायत के लिये हदीष नं. 260 मुलाहज़ा की जा सकती है।

बाब 22 : इस बयान मेंकि जब औरत को एहतलाम हो तो उस पर भी ग़ुस्ल वाजिब है

٢٢- بَابٌ إِذَا احْتَلَمَتِ الْمَرْأَةُ

M-09825696131

(282) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने हिशाम बिन उर्वा के वास्ते से, उन्होंने अपने वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर से, वो ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा से, उन्होंने उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) से, आपने फ़र्माया कि उम्मे सुलैम अबू तलहा (रज़ि.) की औरत रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और कहा कि अल्लाह तआला हक़ से हया नहीं करता। क्या औरत पर भी जबकि उसे एहतलाम हो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। तो रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ अगर (अपनी मनी का) पानी देखे (तो उसे भी ग़ुस्ल करना होगा)

(राजेअ : 130)

٢٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنَّهَا قَالَتْ: جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ امْرَأَةُ أَبِي طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللهَ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ، هَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْ غُسْلٍ إِذَا هِيَ احْتَلَمَتْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((نَعَمْ، إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ)). [راجع: ١٣٠]

इस हदीष से मा'लूम हुआ कि औरत को भी एहतलाम होता है। इसके लिये भी मर्द का सा हुक्म है कि जागने पर मनी की तरी अगर कपड़े या जिस्म पर देखे तो ज़रूर ग़ुस्ल कर लें तरी न पाए तो ग़ुस्ल वाजिब नहीं।

बाब 23 : इस बयान में कि जुनुबी का पसीना और मुसलमान नापाक नहीं होता

٢٣- باب عَرَق الْجُنُبِ، وَأَنَّ الْمسْلمَ لاَ يَنْجُسُ

(283) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे हुमैद तवील ने, कहा हमसे बक्र बिन अब्दुल्लाह ने अबू राफ़ेअ के वास्ते से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि मदीना के किसी रास्ते पर नबी करीम (ﷺ) से उनकी मुलाक़ात हुई। उस समय अबू हुरैरह जनाबत की हालत में थे। अबू हरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं पीछे रह कर लौट गया और ग़ुस्ल करके वापस आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि ऐ अबू हुरैरह! कहाँ चले गए थे? उन्होंने जवाब दिया कि मैं जनाबत की हालत में था इसलिये मैंने आपके साथ बग़ैर ग़ुस्ल के बैठना बुरा समझा। आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! मोमिन हर्गिज़ नजिस नहीं हो सकता।

(दीगर मक़ाम : 285)

٢٨٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرٌ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَقِيَهُ فِي بَعْضِ طَرِيْقِ الْمَدِيْنَةِ وَهُوَ جُنُبٌ، فَانْخَنَسْتُ مِنْهُ، فَذَهَبْتُ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ جَاءَ، فَقَالَ: أَيْنَ كُنْتَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: كُنْتُ جُنُبًا فَكَرِهْتُ أَنْ أُجَالِسَكَ وَأَنَا عَلَى غَيْرِ طَهَارَةٍ. فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ، إِنَّ الْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ)).

[أطرافه في : ٢٨٥].

यानी ऐसा नजिस नहीं होता कि उसके साथ बैठा भी न जा सके। उसकी नजासत आ़रज़ी (अस्थाई) है जो ग़ुस्ल से ख़त्म हो जाती है, इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष़ से ये निकाला कि जुनुबी का पसीना भी पाक है क्योंकि जब बदन पाक है तो बदन से निकलने वाला पसीना भी पाक ही होगा।

M-09825696131

बाब 24 : इस तफ़्सील में कि जुनुबी घर से बाहर निकल सकता है

٢٤- بَابُ الْجُنُبِ يَخْرُجُ وَيَمْشِي فِي السُّوقِ وَغَيْرِهِ

और अ़ता ने कहा कि जुनुबी पछना लगवा सकता है, नाख़ून तरशवा सकता है और सर मुँडवा सकता है अगरचे वुज़ू भी न किया हो।

وَقَالَ عَطَاءٌ: يَحْتَجِمُ الْجُنُبُ وَيُقَلِّمُ أَظْفَارَهُ وَيَحْلِقُ رَأْسَهُ وَإِنْ لَمْ يَتَوَضَّأْ.

(284) हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन ह़म्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से, कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि नबी (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों के पास एक ही रात में तशरीफ़ ले गए। उस समय आपकी बीवियों में नौ बीवियाँ थीं। (राजेअ़ : 268)

٢٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ يَطُوفُ عَلَى نِسَائِهِ فِي اللَّيْلَةِ الْوَاحِدَةِ، وَلَهُ يَوْمَئِذٍ تِسْعُ نِسْوَةٍ. [راجع: ٢٦٨]

इससे जुनुबी का घर से बाहर निकलना यूँ ष़ाबित हुआ कि आप (ﷺ) एक बीवी से सोह़बत करके घर से बाहर दूसरी बीवी के घर तशरीफ़ ले जाते।

(285) हमसे अ़याश ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ुमैद ने बक्र के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अबू राफ़ेअ़ से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से, कहा कि मेरी मुलाक़ात रसूलुल्लाह (ﷺ) से हुई। उस समय मैं जुनुबी था। आपने मेरा हाथ पकड़ लिया और मैं आपके साथ चलने लगा। आखिर आप (ﷺ) एक जगह बैठ गए और मैं धीरे से अपने घर आया और ग़ुस्ल करके ह़ाज़िरे ख़िदमत हुआ। आप अभी बैठे हुए थे, आपने पूछा ऐ अबू हुरैरह! कहाँ चले गए थे, मैंने वाक़िआ बयान किया तो आपने फ़र्माया सुब्ह़ानल्लाह! मोमिन तो नजिस नहीं होता। (राजेअ़ : 283)

٢٨٥- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ بَكْرٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنَا جُنُبٌ، فَأَخَذَ بِيَدِي فَمَشَيْتُ مَعَهُ حَتَّى قَعَدَ، فَانْسَلَلْتُ فَأَتَيْتُ الرَّحْلَ فَاغْتَسَلْتُ، ثُمَّ جِئْتُ وَهُوَ قَاعِدٌ فَقَالَ: ((أَيْنَ كُنْتَ)) فَقُلْتُ لَهُ، فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، إِنَّ الْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ)). [راجع: ٢٨٣]

इस ह़दीष़ की और बाब की मुत़ाबक़त भी ज़ाहिर है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ह़ालते जनाबत में राह चलते हुए आँह़ज़रत (ﷺ) से मिले।

बाब 25 : ग़ुस्ल से पहले जुनुबी का घर में ठहरना जबकि वुज़ू कर ले (जाइज़ है)

٢٥- بَابُ كَيْنُونَةِ الْجُنُبِ فِي الْبَيْتِ إِذَا تَوَضَّأَ

(286) हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम और

٢٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ

وَشَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَرْقُدُ وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَتْ : نَعَمْ. وَيَتَوَضَّأُ.

[طرفه في : ٢٨٨].

शैबान ने, वो यह्या से, वो अबू सलमा से, कहा मैंने आ़इशा (रज़ि.) से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) जनाबत की ह़ालत में घर में सोते थे? कहा हाँ! लेकिन वुज़ू कर लेते थे।

(दीगर मक़ाम : 288)

M-09825696131

तश्रीह़ : एक ह़दीष़ में है कि जिस घर में कुत्ता या तस्वीर या जुनुबी हो तो वहाँ फ़रिश्ते नहीं आते। इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर बतलाया कि वहाँ जुनुबी से वो मुराद है जो वुज़ू भी न करे और जनाबत की ह़ालत में बेपरवाह बनकर यूँ ही घर में पड़ा रहे।

٢٦- بَابُ نَوْمِ الْجُنُبِ

बाब 26 : इस बारे में कि बग़ैर ग़ुस्ल किये जुनुबी का सोना जाइज़ है

٢٨٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ: أَيَرْقُدُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرْقُدْ وَهُوَ جُنُبٌ)).

[طرفاه في : ٢٨٩، ٢٩٠].

(287) हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने नाफ़ेअ़ से, वो इब्ने उ़मर (रज़ि.) से कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या हममें से कोई जनाबत की ह़ालत में सो सकता है? फ़र्माया हाँ! वुज़ू करके जनाबत की ह़ालत में भी सो सकते हो।

(दीगर मक़ाम : 289, 290)

٢٧- بَابُ الْجُنُبِ يَتَوَضَّأُ ثُمَّ يَنَامُ

बाब 27 : इस बारे में कि जुनुबी पहले वुज़ू कर ले फिर सोए

٢٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ وَهُوَ جُنُبٌ غَسَلَ فَرْجَهُ وَتَوَضَّأَ لِلصَّلاَةِ. [راجع: ٢٨٦]

(288) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अबी अल् जअ़द के वास्ते से, उन्होंने मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान से, उन्होंने उ़र्वा से, वो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) जब जनाबत की ह़ालत में होते और सोने का इरादा करते तो शर्मगाह को धो लेते और नमाज़ की तरह वुज़ू करते।

(राजेअ़ : 286)

٢٨٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ : حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: اسْتَفْتَى عُمَرُ النَّبِيَّ ﷺ: أَيَنَامُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَ : ((نَعَمْ، إِذَا تَوَضَّأَ)).

(289) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने नाफ़ेअ़ से, वो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर से, कहा उ़मर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि क्या हम जनाबत की ह़ालत में सो सकते हैं? आपने फ़र्माया, हाँ! लेकिन वुज़ू करके।

٢٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ قَالَ: ذَكَرَ عُمَرُ بْنُ

(290) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से, उन्होंने कहा ह़ज़रत उ़मर

(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि रात में उन्हें ग़ुस्ल की ज़रूरत हो जाया करती है तो रसूलुल्लाह (ﷺ)) ने फ़र्माया कि वुज़ू कर लिया कर और शर्मगाह को धोकर सो जाओ।

(राजेअ़ : 287)

الْخَطَّابِ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ تُصِيبُهُ الْجَنَابَةُ مِنَ اللَّيْلِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تَوَضَّأْ وَاغْسِلْ ذَكَرَكَ ثُمَّ نَمْ)).

[راجع: ٢٨٧]

M-09825696131

तश्रीह़ : इन सारी अह़ादीष़ का यही मक़्सद है कि जुनुबी वुज़ू करके घर में सो सकता है। फिर नमाज़ के वास्ते ग़ुस्ल कर ले क्योंकि ग़ुस्ले जनाबत किये बग़ैर नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी। मरीज़ के लिये रुख़्सत है जैसा कि मा'लूम हो चुका है।

बाब 28 : इस बारे में कि जब दोनों ख़ितान एक-दूसरे से मिल जाएँ तो ग़ुस्ले जनाबत वाजिब है,

٢٨- بَابُ إِذَا الْتَقَى الْخِتَانَانِ

हमसे मुआ़ज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया

حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فُضَالَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ ح.

(291) (दूसरी सनद से) इमाम बुख़ारी ने फ़र्माया कि हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, वो हिशाम से, वो क़तादा से, वो इमाम ह़सन बस़री से, वो अबू राफ़ेअ़ से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब मर्द-औरत के चहार ज़ानू में बैठ गया और उसके साथ जिमाअ़ के लिये कोशिश की तो ग़ुस्ल वाजिब हो गया, इस ह़दीष़ की मुताबअ़त अ़म्र ने शुअ़बा के वास्ते से की है। और मूसा ने कहा कि हमसे अबान ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे ह़सन बस़री ने बयान किया, इसी ह़दीष़ की तरह़। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) ने कहा ये ह़दीष़ इस बाब की तमाम अह़ादीष़ में उ़म्दा और बेहतर है और हमने दूसरी ह़दीष़ उ़ष़्मान और इब्ने अबी कअ़ब की) स़ह़ाबा के इख़्तिलाफ़ के पेशेनज़र बयान की और ग़ुस्ल करना ज़्यादा बेहतर है।

٢٩١- وَحَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا الأَرْبَعِ ثُمَّ جَهَدَهَا فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ)). تَابَعَهُ عَمْرٌو عَنْ شُعْبَةَ، وَقَالَ مُوسَى: حَدَّثَنَا أَبَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا الْحَسَنُ مِثْلَهُ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ هَذَا أَجْوَدُ وَ أَوْكَدُ وَ إِنَّمَا بَيَّنَّا الْحَدِيثَ لِاخْتِلاَفِهِمْ وَالْغُسْلُ أَحْوَطُ.

तश्रीह़ : **'क़ालन्नववी मअ़नल ह़दीषि अन्न ईजाबल ग़ुस्लि ला यतवक्क़फ़ु अ़लल इन्ज़ालि बल मता ग़ाबतिल ह़श्फ़तु फ़िल फ़र्जि वजबल ग़ुस्लु अ़लयहिमा व ला ख़िलाफ़ फ़ीहिल यौम।'** इमाम नववी (रह.) कहते हैं कि ह़दीष़ का मा'नी ये है कि ग़ुस्ल इन्ज़ाले मनी पर मौक़ूफ़ (आधारित) नहीं है बल्कि जब भी दुख़ूल हो गया दोनों पर ग़ुस्ल वाजिब हो चुका और अब इस बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

ये तरीक़ा मुनासिब नहीं :- फ़िक़्ही मसालिक में कोई मसलक अगर किसी जुज़्ई में किसी ह़दीष़ से मुत़ाबिक़ हो जाए तो क़ाबिले क़ुबूल है। क्योंकि अस़्ल मामूल बिही क़ुर्आन व ह़दीष़ है। इसीलिये ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने फ़र्मा दिया है कि **इज़ा स़ह़्ह़ल ह़दीषु फ़हुव मज़हबी**। जो भी स़ह़ीह़ ह़दीष़ से ष़ाबित हो वही मेरा मज़हब है। यहाँ तक दुरुस्त और क़ाबिले तह़सीन है। मगर देखा ये जा रहा है कि मुक़ल्लिदीन अपने मज़हब को किसी ह़दीष़ के मुत़ाबिक़ पाते हैं तो अपने मसलक को

(296) हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा इब्ने जुरैज ने उन्हें ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे हिशाम बिन ऊर्वा ने ऊर्वा के वास्ते से बताया कि उनसे सवाल किया गया, क्या हाइज़ा बीवी मेरी ख़िदमत कर सकती है? ऊर्वा ने फ़र्माया मेरे नज़दीक तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। इस तरह की औरतें मेरी भी ख़िदमत करती हैं और इसमें किसी के लिये भी कोई हर्ज नहीं। इसलिये कि मुझे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) को हाइज़ा होने की हालत में कंघी किया करती थीं और रसूलुल्लाह (ﷺ) उस समय मस्जिद में मुअतकिफ़ होते। आप अपना सरे मुबारक क़रीब कर देते और हज़रत आइशा (रज़ि.) अपने हुज्रे ही से कंघा कर देतीं, हालाँकि वो हाइज़ा होतीं।

(राजेअ: 295)

M-09825696131

٢٩٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّهُ سُئِلَ: أَتَخْدُمُنِي الْحَائِضُ أَوْ تَدْنُو مِنِّي الْمَرْأَةُ وَهِيَ جُنُبٌ؟ فَقَالَ عُرْوَةُ: كُلُّ ذَلِكَ عَلَيَّ هَيِّنٌ، وَكُلُّ ذَلِكَ تَخْدُمُنِي وَلَيْسَ عَلَى أَحَدٍ فِي ذَلِكَ بَأْسٌ، أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّهَا كَانَتْ تُرَجِّلُ - رَأْسَ رَسُولِ اللهِ ﷺ- وَهِيَ حَائِضٌ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَئِذٍ مُجَاوِرٌ فِي الْمَسْجِدِ، يُدْنِي لَهَا رَأْسَهُ وَهِيَ فِي حُجْرَتِهَا فَتُرَجِّلُهُ وَهِيَ حَائِضٌ. [راجع: ٢٩٥]

बाब की हदीष़ से मुताबक़त जाहिर है– अदयाने साबिक़ा (अन्य पुराने धर्मों) में औरत को अय्यामे हैज़ में बिल्कुल अलाहिदा कैद कर दिया जाता था इस्लाम ने बन्दिशों को हटा दिया।

बाब 4 : इस बारे में कि मर्द का अपनी बीवी की गोद में हाइज़ा होने के बावजूद क़ुर्आन पढ़ना जाइज़ है

٤- بَابُ قِرَاءَةِ الرَّجُلِ فِي حَجْرِ امْرَأَتِهِ وَهِيَ حَائِضٌ

अबू वाइल अपनी ख़ादिमा को हैज़ की हालत में अबू रज़ीन के पास भेजे थे और वो उनके यहाँ से क़ुर्आन मजीद जुज़्दान में लिपटा हुआ अपने हाथ से पकड़कर लाती थी।

وَكَانَ أَبُو وَائِلٍ يُرْسِلُ خَادِمَهُ وَهِيَ حَائِضٌ إِلَى أَبِي رَزِينٍ فَتَأْتِيهِ بِالْمُصْحَفِ فَتُمْسِكُهُ بِعِلاَقَتِهِ.

इस अष़र को इब्ने अबी शैबा ने मौसूलन रिवायत किया है।

(297) हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहैर से सुना, उन्होंने मंसूर बिन स़फ़िया से कि उनकी माँ ने उनसे बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरी गोद में सर रखकर क़ुर्आन मजीद पढ़ते, हालाँकि मैं उस समय हैज़ वाली होती थी। (दीगर मक़ाम: 7549)

٢٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ سَمِعَ زُهَيْرًا عَنْ مَنْصُورِ بْنِ صَفِيَّةَ أَنَّ أُمَّهُ حَدَّثَتْهُ أَنَّ عَائِشَةَ حَدَّثَتْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَّكِئُ فِي حَجْرِي وَأَنَا حَائِضٌ ثُمَّ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ. [طرفه في : ٧٥٤٩].

हदीष़ और बाब की मुताबक़त जाहिर है।

बाब 5 : उस शख़्स के बारे में जिसने निफ़ास का

٥- بَابُ مَنْ سَمَّى النِّفَاسَ حَيْضًا

M-09825696131

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي زَيْدٌ هُوَ ابْنُ أَسْلَمَ عَنْ عِيَاضِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي أَضْحَى - أَوْ فِطْرٍ - إِلَى الْمُصَلَّى، فَمَرَّ عَلَى النِّسَاءِ فَقَالَ : ((يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ، فَإِنِّي أُرِيْتُكُنَّ أَكْثَرَ أَهْلِ النَّارِ)) فَقُلْنَ، وَبِمَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((تُكْثِرْنَ اللَّعْنَ، وَتَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ، مَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلٍ وَدِيْنٍ أَذْهَبَ لِلُبِّ الرَّجُلِ الْحَازِمِ مِنْ إِحْدَاكُنَّ)). قُلْنَ: وَمَا نُقْصَانُ دِيْنِنَا وَعَقْلِنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((أَلَيْسَ شَهَادَةُ الْمَرْأَةِ مِثْلُ نِصْفِ شَهَادَةِ الرَّجُلِ؟)) قُلْنَ: بَلَى. قَالَ: ((فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَانِ عَقْلِهَا. أَلَيْسَ إِذَا حَاضَتْ لَمْ تُصَلِّ وَلَمْ تَصُمْ؟)) قُلْنَ: بَلَى. قَالَ : ((فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَانِ دِيْنِهَا)) .

[أطرافه في : ١٤٦٢، ١٩٥١، ٢٦٥٨].

कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझे ज़ैद ने और ये ज़ैद असलम के बेटे हैं, उन्होंने इयाज़ बिन अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से कि आपने फ़र्माया कि रसूले करीम (ﷺ) ईदुल अज़्हा या ईदुल फ़ित्र में ईदगाह तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप औ़रतों के पास से गुज़रे और फ़र्माया ऐ औ़रतों की जमाअ़त! सदक़ा करो क्योंकि मैंने जहन्नम में ज़्यादा तुम्हीं को देखा है। उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसा क्यों? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लअ़न–तअ़न बहुत करती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो, बावजूद अ़क़्ल और दीन में नाक़िस होने के मैंने तुमसे ज़्यादा किसी को भी एक अ़क़्लमंद और तजुर्बेकार आदमी को दीवाना बना देने वाला नहीं देखा। औ़रतों ने कहा हमारे दीन और हमारी अ़क़्ल में नुक़्सान क्या है या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या औ़रत की गवाही मर्द की गवाही से आधी नहीं है? उन्होंने कहा, जी है! आप (ﷺ) ने फ़र्माया बस यही उसकी अ़क़्ल का नुक़्सान है। फिर आपने पूछा क्या ऐसा नहीं है कि जब औ़रत हाइज़ा हो तो न नमाज़ पढ़ सकती है और न रोज़े रख सकती है, औ़रतों ने कहा ऐसा ही है। आपने फ़र्माया यही उसके दीन का नुक़्सान है।

(दीगर मक़ाम : 1462, 1951, 2658)

तशरीह : क़स्तलानी ने कहा कि लानत करना उस पर जाइज़ नहीं है जिसके खात्मे की खबर न हो, अलबत्ता जिसका कुफ़्र पर मरना यक़ीनी षाबित हो उस पर लानत जाइज़ है जैसे अबू जहल वग़ैरह, इसी तरह बग़ैर नाम लिये हुए ज़ालिमों और काफ़िरों पर भी लानत करनी जाइज़ है।

٨- بَابُ تَقْضِي الْحَائِضُ الْمَنَاسِكَ كُلَّهَا إِلاَّ الطَّوَافَ بِالْبَيْتِ

बाब 8 : इस बारे में कि हाइज़ा बैतुल्लाह के त़वाफ़ के अ़लावा हज्ज के बाक़ी सारे अर्कान को पूरा करेगी

وَقَالَ إِبْرَاهِيْمُ: لاَ بَأْسَ أَنْ تَقْرَأَ الآيَةَ. وَلَمْ يَرَ ابْنُ عَبَّاسٍ بِالْقِرَاءَةِ لِلْجُنُبِ بَأْسًا. وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَذْكُرُ اللهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ. وَقَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ: كُنَّا نُؤْمَرُ أَنْ نُخْرِجَ فَيُكَبِّرْنَ بِتَكْبِيْرِهِمْ وَيَدْعُوْنَ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَخْبَرَنِي أَبُوسُفْيَانَ أَنَّ هِرَقْلَ

इब्राहीम ने कहा आयत पढ़ने में कोई ह़र्ज नहीं। और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) जुनुबी के लिये क़ुर्आन मजीद पढ़ने में कोई ह़र्ज नहीं समझते थे। और नबी करीम (ﷺ) हर समय अल्लाह का ज़िक्र किया करते थे। उम्मे अ़तिया ने फ़र्माया हमें हुक्म होता था कि हम हैज़ वाली औ़रतों को भी (ईद के दिन) बाहर निकालें। बस वो मर्दों के साथ तक्बीर कहतीं और दुआ़ करतीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उनसे अबू

M-09825696131

रखी गई और हालते इक़ामत की नमाज़ों में ज़्यादती कर दी गई।

(दीगर मक़ाम : 1090, 3935)

فَأُقِرَّتْ صَلَاةُ السَّفَرِ، وَزِيدَ فِي صَلَاةِ الْحَضَرِ.

[طرفاه في : ١٠٩٠، ٣٩٣٥].

बाब 2 : इस बयान में कि कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना वाजिब है

٢- بَابُ وُجُوبِ الصَّلَاةِ فِي الثِّيَابِ، وَقَولِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ:

(सूरह अअ़राफ़ में) अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का हुक्म है कि तुम कपड़े पहना करो हर नमाज़ के समय और जो एक ही कपड़ा बदन पर लपेटकर नमाज़ पढ़े (उसने भी फ़र्ज़ अदा कर लिया) और सलमा बिन अक्वा से मन्क़ूल है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (अगर एक ही कपड़े में नमाज़ पढ़े तो) अपने कपड़े को टाँक ले अगरचे काँटे ही से टाँकना पड़े, इसकी सनद में गुफ़्तगू है और वो शख़्स जो उसी कपड़े में नमाज़ पढ़ता है जिसे पहनकर वो जिमाअ़ करता है (तो नमाज़ दुरुस्त है) जब तक वो उसमें कोई गंदगी न देखे और नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि कोई नंगा बैतुल्लाह का तवाफ़ न करे।

﴿ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ ﴾ وَمَنْ صَلَّى مُلْتَحِفًا فِي ثَوبٍ وَاحِدٍ وَيُذْكَرُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((تَزُرُّهُ وَلَوْ بِشَوْكَةٍ)) . فِي إِسْنَادِهِ نَظَرٌ. وَمَنْ صَلَّى فِي الثَّوْبِ الَّذِي يُجَامِعُ فِيهِ مَا لَمْ يَرَ فِيهِ أَذًى، وَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ لاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ.

तशरीह : आयते शरीफा '**ख़ुज़ू ज़ीनतकुम**' अलअख़ में मस्जिद से मुराद नमाज़ है। बक़ौल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास एक औरत खान–ए–का'बा का तवाफ नंगी होकर कर रही थी कि ये आयते शरीफा नाजिल हुईं मुश्रिकीने–मक्का भी उमूमन तवाफे का'बा नंगे होकर किया करते थे। इस्लाम ने इस हरकत से सख्ती के साथ रोका और नमाज़ के लिये मस्जिद में आते वक़्त कपड़े पहनने का हुक्म फर्माया '**ख़ुज़ू ज़ीनतकुम**' में ज़ीनत से सतरपोशी ही मुराद है जैसा कि मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुर्आन हज़रत मुजाहिद ने इस बारे में उम्मत का इजमाअ़ व इत्तिफाक़ नक़ल किया है। लफ़्ज़े ज़ीनत में बड़ी वुसअत है जिसका मफ्हूम (भावार्थ) ये कि मस्जिद अल्लाह का दरबार है, इसमें हर मुम्किन व जाइज़ ज़ैबो–ज़ीनत के साथ इस निय्यत से दाख़िल होना कि मैं अल्लाह अहकमुल हाकिमीन बादशाहों के बादशाह रब्बुल आलमीन के दरबार में दाख़िल हो रहा हूं, ऐन आदाब दरबारे खुदावन्दी में दाख़िल है। ये बात अलग है कि अगर सिर्फ़ एक ही कपड़े में नमाज़ अदा कर ली जाए बशर्ते उससे सतरपोशी कामिल तौर पर हासिल हो तो ये भी जाइज़ व दुरुस्त है।

ऐसे एक कपड़े को पहन लेने का मतलब ये है कि उसके दोनों किनारे मिलाकर उसे अटकाए। अगर घुण्डी या तुमका (बटन, हुक वग़ैरह) न हो तो काँटे या पिन से अटका ले ताकि कपड़ा सामने से खुलने न पाए और शर्मगाह छुपी रहे। सलमा बिन अक्वा की रिवायत अबू दाऊद और इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान में हैं उसको सनद में इज़तिराब है। इसीलिये हज़रत इमाम उसे अपनी सहीह में नहीं लाए '**व मन सल्ला फ़िष्षौबिल्लज़ी**' एक तवील हदीष में वारिद है जिसे अबू दाऊद और निसाई ने निकाला है कि आँहज़रत (ﷺ) जिस कपड़े को पहनकर सोहबत करते अगर उसमें कुछ पलीदी न पाते तो उसी में नमाज़ पढ़ लेते थे और हदीष '**अल्ला यत्तव्वफ़ फिल बैति उर्यान**' को इमाम अहमद ने रिवायत किया है। इससे मक़सद ये षाबित करना कि जब नंगे होकर तवाफ करना मना हुआ तो नमाज़ ब-तरीक़े औला के मुताबिक़ मना है।

(351) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, वो मुहम्मद से, वो उम्मे अ़तिया से, उन्होंने फ़र्माया कि हमें हुक्म हुआ कि हम ईदैन के दिन हाइज़ा और पर्दानशीन औरतों को भी बाहर ले जाएँ ताकि वो

٣٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ

(351) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, वो मुह़म्मद से, वो उम्मे अ़तिया से, उन्होंने फ़र्माया कि हमें हुक्म हुआ कि हम ईदैन के दिन हाइज़ा और पर्दानशीन औ़रतों को भी बाहर ले जाएँ ताकि वो

٣٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ

M-09825696131

मुसलमानों के इज्तिमाअ़ और उनकी दुआओं में शरीक हो सकें अल्बत्ता ह़ाइज़ा औ़रतों को नमाज़ पढ़ने की वजह से दूर रखें। एक औ़रत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें कुछ औ़रतें ऐसी भी होती हैं जिनके पास (पर्दा करने के लिये) चादर नहीं होती। आपने फ़र्माया कि उसकी साथी औ़रत अपनी चादर का एक ह़िस्सा उसे ओढ़ा दे और अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा हमसे इमरान क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने, कहा हमसे उम्मे अ़तिया ने, मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना और यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 324)

الْعِيدَيْنِ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ، وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلاَّهُنَّ . قَالَتِ امْرَأَةٌ : يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَانَا لَيْسَ لَهَا جِلْبَابٌ. قَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا)).
وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا عِمْرَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ قَالَ حَدَّثَتْنَا أُمُّ عَطِيَّةَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : ह़दीष़ के बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ **लि तुलबिसहा साहिबतहा मिन जल्बाबिहा** (जिस औ़रत के पास कपड़ा न हो उसके साथ वाली औ़रत को चाहिए कि अपनी चादर ही का कोई ह़िस्सा उसे भी ओढ़ा दे) से निकलता है। मक़सद ये कि मस्जिद में जाते वक़्त, ईदगाह में हाज़री के वक़्त, नमाज़ पढ़ते वक़्त इतना कपड़ा ज़रूर होना चाहिए जिससे मर्द व औ़रत अपनी–अपनी ह़ैष़ियत में सतरपोशी कर सके। इस ह़दीष़ से भी औ़रतों का ईदगाह जाना ष़ाबित हुआ।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने सनद में अ़ब्दुल्लाह बिन रजा को लाकर उस शख़्स़ का रद्द किया जिसने कहा कि मुहम्मद बिन सीरीन ने ये ह़दीष़ उम्मे अतिय्या से नहीं सुनी बल्कि अपनी बहन हफ्सा से, उन्होंने उम्मे अतिय्या से, उसे तबरानी ने मुअजम कबीर में वस्ल किया है।

M-09825696131

मुसलमानों के इज्तिमाअ और उनकी दुआओं में शरीक हो सकें अल्बत्ता हाइज़ा औरतों को नमाज़ पढ़ने की वजह से दूर रखें। एक औरत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें कुछ औरतें ऐसी भी होती हैं जिनके पास (पर्दा करने के लिये) चादर नहीं होती। आपने फ़र्माया कि उसकी साथी औरत अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा हमसे इमरान क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, कहा हमसे उम्मे अतिया ने, मैंने आँहज़रम (ﷺ) से सुना और यही हदीष बयान की। (राजेअ: 324)

الْعِيدَيْنِ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ، وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلاَّهُنَّ . قَالَتِ امْرَأَةٌ : يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَانَا لَيْس لَهَا جِلْبَابٌ. قَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا)).
وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا عِمْرَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيْرِيْنَ قَالَ حَدَّثَتْنَا أُمُّ عَطِيَّةَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِهَذَا.
[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : हदीष के बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ **लि तुलबिसहा साहिबतहा मिन जल्बाबिहा** (जिस औरत के पास कपड़ा न हो उसके साथ वाली औरत को चाहिए कि अपनी चादर ही का कोई हिस्सा उसे भी ओढ़ा दे) से निकलता है। मक़सद ये कि मस्जिद में जाते वक़्त, ईदगाह में हाज़री के वक़्त, नमाज़ पढ़ते वक़्त इतना कपड़ा ज़रूर होना चाहिए जिससे मर्द व औरत अपनी-अपनी हैषियत में सतरपोशी कर सके। इस हदीष से भी औरतों का ईदगाह जाना षाबित हुआ।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने सनद में अब्दुल्लाह बिन रजा को लाकर उस शख़्स का रद्द किया जिसने कहा कि मुहम्मद बिन सीरीन ने ये हदीष उम्मे अतिय्या से नहीं सुनी बल्कि अपनी बहन हफ्सा से, उन्होंने उम्मे अतिय्या से, उसे तबरानी ने मुअजम कबीर में वस्ल किया है।

बाब 3 : नमाज़ में गुद्दी पर तहबंद बाँधने के बयान में

और अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने सहल बिन सअद से रिवायत करते हुए कहा कि लोगों ने नबी (ﷺ) के साथ अपनी तहबंद कँधों पर बाँधकर नमाज़ पढ़ी।

٣- بَابُ عَقْدِ الإِزَارِ عَلَى الْقَفَا فِي الصَّلاَةِوَقَالَ أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، صَلَّوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَا قِدِي أُزْرِهِمْ عَلَى عَوَاتِقِهِمْ.

(352) हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे वाक़िद बिन मुहम्मद ने मुहम्मद बिन मुंकदिर के हवाले से बयान किया, उन्होंने कहा कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने तहबंद बाँधकर नमाज़ पढ़ी, जिसे उन्होंने सर तक बाँध रखा था और आपके कपड़े खूँटी पर टंगे हुए थे। एक कहनेवाले ने कहा कि आप एक तहबंद में नमाज़ पढ़ते हैं? आपने जवाब दिया कि मैंने ऐसा इसलिये किया कि तुझ जैसा कोई अहमक़ मुझे देखे। भला रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में दो कपड़े भी किसके

٣٥٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي وَاقِدُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ : صَلَّى جَابِرٌ فِي إِزَارٍ قَدْ عَقَدَهُ مِنْ قِبَلِ قَفَاهُ وَثِيَابُهُ مَوْضُوعَةٌ عَلَى الْمِشْجَبِ. فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ: تُصَلِّي فِي إِزَارٍ وَاحِدٍ؟ فَقَالَ: إِنَّمَا صَنَعْتُ ذَلِكَ لِيَرَانِي أَحْمَقُ مِثْلُكَ. وَأَيُّنَا كَانَ لَهُ ثَوبَانِ عَلَى عَهْدِ

M-09825696131

हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया सहल बिन सअद सअदी से, उन्होंने कहा कि कई आदमी नबी करीम (ﷺ) के साथ बच्चों की तरह अपनी गर्दनों पर इज़ारें बाँधे हुए नमाज़ पढ़ते थे और औरतों को (आपके ज़माने में) हुक्म था कि अपने सरों को (सज्दे से) उस समय तक न उठाएँ जब तक कि मर्द सीधे होकर बैठ न जाएँ।

(दीगर मक़ाम : 814, 1215)

عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: كَانَ رِجَالٌ يُصَلُّوْنَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَاقِدِي أُزُرِهِمْ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ كَهَيْئَةِ الصِّبْيَانِ، يُقَالُ لِلنِّسَاءِ: ((لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوسًا)). [طرفاه في : ٨١٤، ١٢١٥].

क्योंकि मर्दों के बैठ जाने से पहले सर उठाने में कहीं औरतों की नजर मर्दों के सतर पर न पड़ जाए इसीलिये औरतों को पहले सर उठाने से मना फर्माया। उस जमाने में औरतें भी मर्दों के साथ नमाज़ों में शरीक होती थी और मर्दों का लिबास भी इसी किस्म का होता था। आजकल ये सूरतें नहीं है, फिर औरतों के लिये अब ईदगाह में भी पर्दे का बेहतरीन इन्तेजाम कर दिया जाता है।

बाब 7 : शाम के बने हुए चोग़े में नमाज़ पढ़ने के बयान में

٧- بَابُ الصَّلاَةِ فِي الْجُبَّةِ الشَّامِيَّةِ

इमाम हसन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि जिन कपड़ों को पारसी बुनते हैं उसके इस्ते'माल करने में कोई क़बाहत नहीं। मअमर राशिद ने फ़र्माया कि मैंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी को यमन के कपड़े को पहने देखा जो (हलाल जानवरों के) पेशाब से रंग जाते थे और अली बिन अबी तालिब ने नए बग़ैर धुले कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ी।

وَقَالَ الْحَسَنُ فِي الثِّيَابِ يَنْسُجُهَا الْمَجُوسُ لَمْ يَرَ بِهَا بَأْسًا، وَقَالَ مَعْمَرٌ: رَأَيْتُ الزُّهْرِيَّ يَلْبَسُ مِنْ ثِيَابِ الْيَمَنِ مَا صُبِغَ بِالْبَوْلِ. وَصَلَّى عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فِي ثَوْبٍ غَيْرِ مَقْصُوْرٍ.

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद ये है कि शाम में उन दिनों काफ़िरों की हुकूमत थी ओर वहां से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के कपड़े यहाँ मदीना में आया करते थे, इसलिये इन मसाइल के बयान की ज़रूरत हुई। पेशाब से हलाल जानवरों का पेशाब मुराद है जिसको रंगाई के मसालों में डाला जाता था।

(363) हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआविया ने अअमश के वास्ते से, उन्हों ने मुस्लिम बिन स़बीह से, उन्होंने मसरूक़ बिन अज्दअ से, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअबा से, आपने फ़र्माया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक) में था। आपने एक मौक़े पर फ़र्माया। मुग़ीरह! पानी की छागल उठा ले। मैंने उसे उठा लिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) चले और मेरी नज़रों से छुप गए। आपने क़ज़ा-ए-हाजत की। उस समय आप शामी जुब्बा पहने हुए थे। आप हाथ खोलने के लिये आस्तीन ऊपर चढ़ाना चाहते थे लेकिन वो तंग थी इसलिये आस्तीन के अंदर से हाथ निकाला। मैंने आपके हाथों

٣٦٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ مُغِيْرَةَ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ فَقَالَ: ((يَا مُغِيْرَةُ خُذِ الإِدَاوَةَ)). فَأَخَذْتُهَا. فَانْطَلَقَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حَتَّى تَوَارَى عَنِّي فَقَضَى حَاجَتَهُ، وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَّةٌ، فَذَهَبَ لِيُخْرِجَ يَدَهُ مِنْ كُمِّهَا فَضَاقَتْ، فَأَخْرَجَ يَدَهُ مِنْ أَسْفَلِهَا،

النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الصَّلاَةِ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ، فَقَالَ: ((أَوَ كُلُّكُمْ يَجِدُ ثَوْبَيْنِ)). ثُمَّ سَأَلَ رَجُلٌ عُمَرَ، فَقَالَ: إِذَا وَسَّعَ اللهُ فَأَوْسِعُوا: جَمَعَ رَجُلٌ عَلَيْهِ ثِيَابَهُ، صَلَّى رَجُلٌ فِي إِزَارٍ وَرِدَاءٍ، فِي إِزَارٍ وَقَمِيصٍ، فِي إِزَارٍ وَقَبَاءٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَرِدَاءٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَقَمِيصٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَقَبَاءٍ، فِي تُبَّانٍ وَقَمِيصٍ، - قَالَ: وَأَحْسَبُهُ قَالَ - فِي تُبَّانٍ وَرِدَاءٍ.

[راجع: ٣٥٨]

पढ़ने के बारे में सवाल किया। आपने फ़र्माया कि क्या तुम सब ही लोगों के पास दो कपड़े हो सकते हैं? फिर (यही मसला) ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से एक शख़्स़ ने पूछा तो उन्होंने कहा कि जब अल्लाह तआला ने तुम्हें फ़राग़त दी है तो तुम भी फ़राग़त के साथ रहो। आदमी को चाहिए कि नमाज़ में अपने कपड़े को इकट्ठा कर ले, कोई आदमी तहबंद और चादर में नमाज़ पढ़े, कोई तहबंद और क़मीस़, कोई तहबंद और क़बा में, कोई पाजामा और चादर में, कोई पाजामा और क़मीस़ में, कोई पाजामा और क़बा में, कोई जांघिया और क़बा में, कोई जांघिया और क़मीस़ में नमाज़ पढ़े। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मुझे याद आता है कि आपने ये भी कहा कि कोई जांघिया और चादर में नमाज़ पढ़े।

(राजेअ : 358)

तश्रीह : इसमें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को शक था कि ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने ये आखिर का लफ़्ज़ कहा था या नहीं, क्योंकि महज़ जांघिया से सतरपोशी नहीं होती है। उस पर ऐसा कपड़ा हो जिससे सतरपोशी कामिल तौर पर ह़ासिल हो जाए तो जायज है और यहां यही मुराद है, **फ़स्सतरू बिही हासि़लुन मअल क़बा व मअल क़मीस़** (क़स्तलानी) चोग़ा या लम्बी कमीस पहन कर उसके साथ सतरपोशी हो जाती है।

٣٦٦ - حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ؟ فَقَالَ: ((لاَ يَلْبَسُ الْقَمِيصَ وَلاَ السَّرَاوِيلَ وَلاَ الْبُرْنُسَ وَلاَ ثَوْبًا مَسَّهُ الزَّعْفَرَانُ وَلاَ وَرْسٌ. فَمَنْ لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ الْخُفَّيْنِ وَلْيَقْطَعْهُمَا حَتَّى يَكُونَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ)). وَعَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. [راجع: ١٣٤]

(366) हमसे आसि़म बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने ज़ुहरी के ह़वाले से बयान किया, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक आदमी ने पूछा कि एहराम बाँधने वाले को क्या पहनना चाहिए। तो आपने फ़र्माया कि न क़मीस़ पहने न पाजामा, न बारान कोट और न ऐसा कपड़ा जिसमें जा'फ़रान लगा हुआ हो और न वर्स लगा हुआ कपड़ा, फिर अगर किसी शख़्स़ को जूतियाँ न मिलें (जिनमें पांव खुला रहता हो) वो मोज़े काटकर पहन ले ताकि वो टख़नों से नीचे हो जाएँ और इब्ने अबी ज़िब ने इस ह़दीष़ को नाफ़ेअ से भी रिवायत किया, उन्होंने ऐसा ही आँह़ज़रत (ﷺ) से भी रिवायत किया है।

(राजेअ : 134)

वर्स नामी एक पीले रंग वाली खुश्बूदार घास यमन में होती थी जिससे कपड़े रंगे जाते थे। मुनासबत इस ह़दीष़ के बाब से ये है कि मुहरिम को एहराम की हालत में इन चीजों के पहनने से मना फर्माया मा'लूम हुआ कि एहराम के अलावा दीगर हालतों में इन सबको पहना जा सकता है। यहाँ तक कि नमाज़ में भी, यही बाब का तर्जुमा है। ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर फर्माते हैं कि इस ह़दीष़ को यहां बयान करने से मक़्सद ये है कि कमीस और पाजामे के बग़ैर भी (बशर्ते की सतरपोशी ह़ासिल हो) नमाज़ दुरूस्त है क्योंकि मुहरिम इनको नहीं पहन सकता और आखिर वो नमाज़ जरूर पढ़ेगा।

M-09825696131

गर्मी की वजह से कोई कोई हममें से अपने कपड़े का किनारा सज्दे की जगह रख लेता।

(दीगर मक़ाम : 542, 1208)

مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَيَضَعُ أَحَدُنَا طَرَفَ الثَّوْبِ مِنْ شِدَّةِ الْحَرِّ فِي مَكَانِ السُّجُودِ.

[طرفاه في : ٥٤٢، ١٢٠٨].

बाब 24 : जूतियों समेत नमाज़ पढ़ना (जाइज़ है)

٢٤- بَابُ الصَّلاَةِ فِي النِّعالِ

(386) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू मुस्लिमा सईद बिन यज़ीद अज़्दी ने बयान किया, कहा मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) अपनी जूतियाँ पहनकर नमाज़ पढ़ते थे? तो उन्होंने फ़र्माया, कि हाँ!

(दीगर मक़ाम : 5850)

٣٨٦- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو مَسْلَمَةَ سَعِيدُ بْنَ يَزِيْدَ الأَزْدِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ: أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ؟ قَالَ : نَعَمْ.[طرفه في : ٥٨٥٠].

तश्रीह : अब दाऊद और हाकिम की ह़दीष़ में यूं है कि यहूदियों के ख़िलाफ़ करो, वो जूतियों में नमाज़ नहीं पढ़ते। हज़रत उमर (रज़ि.) नमाज़ में जूते उतारना मकरूह जानते थे और अबू अ़म्र शैबानी कोई नमाज़ में जूता उतारे तो उसे मारा करते थे मगर ये शर्त ज़रूरी है कि जूता पाक साफ हो। बाज़ लोग कहते हैं कि नअ़ल अ़रबों का एक ख़ास़ जूता था और इन आम जूतों में नमाज़ जाइज़ नहीं। ख़्वाह वो पाक-साफ़ भी हो। दलाइल की रु से ऐसा कहना सही नहीं है। जूतों में नमाज़ बिला कराहत जाइज़ दुरुस्त है। बशर्ते कि वो पाक व साफ़ सुथरे हो, गन्दगी का ज़रा भी शुबहा हो तो उनको उतार देना चाहिए।

बाब 25 : मौज़े पहने हुए नमाज़ पढ़ना (जाइज़ है)

٢٥- بَابُ الصَّلاَةِ فِي الْخِفَافِ

(387) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने अअ़मश के वास्ते से, उसने कहा मैंने इब्राहीम नख़ई से सुना। वो हम्माम बिन ह़ारिष़ से रिवायत करते थे, उन्होंने कहा कि मैंने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह को देखा, उन्होंने पेशाब किया फिर वुज़ू किया और अपने मौज़ों पर मसह़ किया। फिर खड़े हुए और (मौज़ों समेत) नमाज़ पढ़ी। आपसे जब इसके बारे में पूछा गया तो फ़र्माया कि, मैंने नबी करीम (ﷺ) को ऐसा करते हुए देखा है। इब्राहीम नख़ई ने कहा कि ये ह़दीष़ लोगों की नज़र में बहुत पसंदीदा थी, क्योंकि जरीर (रज़ि.) आख़िर में इस्लाम लाए थे।

٣٨٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيْمَ يُحَدِّثُ عَنْ هَمَّامِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: رَأَيْتُ جَرِيْرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ بَالَ، ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى، فَسُئِلَ فَقَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ صَنَعَ مِثْلَ هَذَا. قَالَ إِبْرَاهِيْمُ فَكَانَ يُعْجِبُهُم، لأَنَّ جَرِيْرًا كَانَ مِنْ آخِرِ مَنْ أَسْلَمَ.

(388) हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया अअ़मश के वास्ते से, उन्होंने मुस्लिम बिन स़बीह़ से, उन्होंने मसरूक़ बिन अज्दअ़ से, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअ़बा से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को वुज़ू कराया। आपने अपने

٣٨٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: وَضَّأْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ

M-09825696131

يَقُولُ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو، وَكَيْفَ بِكَ إِذَا بَقِيتَ فِي حُثَالَةٍ مِنَ النَّاسِ . . بِهَذَا)).

[راجع: ٤٧٥]

से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम बुरे लोगों में रह जाओगे इस तरह। (यानी आप (ﷺ) ने एक हाथ की उँगलियाँ दूसरे हाथ में करके दिखाईं)

(राजेअ़ : 475)

तश्रीह : आप (ﷺ) ने हाथों को कैंची करने से इसलिये रोका कि ये एक लग्व (बेकार) ह़रकत है लेकिन अगर किसी मक़सद के पेशेनज़र ऐसा कभी किया जाये तो कोई ह़र्ज नहीं है जैसा कि इस ह़दीष़ में ज़िक्र है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने मक़सद की वज़ाहत के लिये हाथों को क़ैंची करके दिखलाया। इस ह़दीष़ में आगे यूँ है कि न उनके इक़रार का ऐतबार होगा, न उनमें अमानतदारी होगी। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर फ़र्माते हैं कि आसिम बिन अ़ली की दूसरी रिवायत जो इमाम बुख़ारी (रह.) ने मुअल्लक़न बयान की उसको इब्राहीम ह़रबी ने ग़रीबुल ह़दीष़ में वस़ल किया है, बाब के इन्इक़ाद से इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद ये है तश्बीक की कराहिय्यत के बारे में जो अह़ादीष़ वारिद हुई है वो ष़ाबित नहीं है बाज़ ने मुमानअ़त को हालते नमाज़ पर मह़मूल किया है।

٤٨١- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنَّ الْمُؤْمِنَ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) وَشَبَّكَ أَصَابِعَهُ. [طرفاه في : ٢٤٤٦، ٦٠٢٦].

(481) हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने अबी बुर्दा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़बी बुर्दा से, उन्होंने अपने दादा (अबू बुर्दा) से, उन्होंने अबू मूसा अशअ़री से। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इमारत की तरह है कि उसका एक ह़िस़्सा दूसरे ह़िस़्से को क़ुव्वत पहुँचाता है और आप (ﷺ) ने एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में दाख़िल किया। (दीगर मक़ाम : 2446, 6026)

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को बाहमी तौर पर मिल-जुलकर रहने की मिष़ाल बयान फ़र्माई और हाथों को कैंची करके बतलाया कि मुसलमान भी बाहमी तौर पर ऐसे ही मिले जुले रहते हैं जिस तरह इमारत के पत्थर एक-दूसरे को थामे रहते हैं। ऐसे ही मुसलमानों को भी एक-दूसरे का क़ुव्वते बाज़ू होना चाहिए। एक मुसलमान पर कहीं ज़ुल्म हो तो सारे मुसलमानों को उसकी इमदाद के लिये उठना चाहिए। काश! उम्मते मुस्लिमा अपने प्यारे रसूले मक़बूल (ﷺ) की इस प्यारी नस़ीहत को याद रखती तो आज ये तबाहकुन हालात न देखने पड़ते।

٤٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِحْدَى صَلاَتَي الْعَشِيِّ - قَالَ ابْنُ سِيرِينَ: قَدْ سَمَّاهَا أَبُو هُرَيْرَةَ، وَلَكِنْ نَسِيتُ أَنَا، قَالَ - فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ

(482) हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंस़ूर ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र बिन शुमैल ने, उन्होंने कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न ने ख़बर दी, उन्होंने मुह़म्मद बिन सिरीन से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें दोपहर के बाद की दो नमाज़ों में से कोई नमाज़ पढ़ाई (ज़ुहर या अ़स्र की) इब्ने सिरीन ने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उनका नाम तो लिया था लेकिन मैं भूल गया। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बतलाया कि आप (ﷺ) ने हमें दो रकअ़त नमाज़ पढ़ा कर सलाम फेर दिया। इसके बाद एक लकड़ी की लाठी से जो मस्जिद में रखी हुई थी आप (ﷺ) टेक लगाकर खड़े हो गए। ऐसा मा'लूम होता

(482) हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र बिन शुमैल ने, उन्होंने कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न ने ख़बर दी, उन्होंने मुह़म्मद बिन सिरीन से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें दोपहर के बाद की दो नमाज़ों में से कोई नमाज़ पढ़ाई (ज़ुहर या अ़स़र की) इब्ने सिरीन ने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उनका नाम तो लिया था लेकिन मैं भूल गया। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बतलाया कि आप (ﷺ) ने हमें दो रकअ़त नमाज़ पढ़ा कर सलाम फेर दिया। इसके बाद एक लकड़ी की लाठी से जो मस्जिद में रखी हुई थी आप (ﷺ) टेक लगाकर खड़े हो गए। ऐसा मा'लूम होता

٤٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِحْدَى صَلَاتَيِ الْعَشِيِّ - قَالَ ابْنُ سِيرِينَ: قَدْ سَمَّاهَا أَبُوهُرَيْرَةَ، وَلَكِنْ نَسِيتُ أَنَا، قَالَ - فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ

M-09825696131

था कि आप बहुत ही ख़फ़ा हों। और आप (ﷺ) ने अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखा। और उनकी उँगलियों को एक–दूसरे में दाख़िल किया। और आपने अपने दाएँ रुख़सार को बाएँ हाथ की हथेली से सहारा दिया। जो लोग नमाज़ पढ़कर जल्दी निकल जाया करते थे वो मस्जिद के दरवाज़ों से पार हो गए। फिर लोग कहने लगे कि क्या नमाज़ कम कर दी गई है। हाज़िरीन में अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) भी मौजूद थे। लेकिन उन्हें भी आपसे बोलने की हिम्मत न हुई। उन्हीं में एक शख़्स़ थे जिनके हाथ लम्बे थे और उन्हें ज़ुलयदैन कहा जाता था। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप (ﷺ) भूल गए या नमाज़ कम कर दी गई है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि न मैं भूला हूँ और न नमाज़ कम हुई है। फिर आप (ﷺ) ने लोगों से पूछा, क्या ज़ुलयदैन स़ह़ीह़ कह रहे हैं। हाज़िरीन बोले कि जी हाँ! ये सुनकर आप (ﷺ) आगे बढ़े और बाक़ी रकअ़तें पढ़ीं। फिर सलाम फेरा, फिर तक्बीर कही और सह्व का सज्दा किया। मअ़मूल के मुत़ाबिक़ या उससे भी लम्बा सज्दा। फिर सर उठाया और तक्बीर कही। फिर तक्बीर कही और दूसरा सज्दा किया। मअ़मूल के मुत़ाबिक़ या उससे भी लम्बा फिर सर उठाया और तक्बीर कही, लोगों ने बार-बार इब्ने सिरीन से पूछा कि क्या फिर सलाम फेरा तो वो जवाब देते कि मुझे ख़बर दी गई है कि इमरान बिन हुसैन कहते थे कि फिर सलाम फेरा।

(दीगर मक़ाम : 714, 715, 1227, 1228, 1229, 6051, 7250)

غَضْبَانُ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ، وَوَضَعَ خَدَّهُ الأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى، وَخَرَجَتِ السَّرَعَانُ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالُوا: قَصُرَتِ الصَّلَاةُ. وَفِي الْقَوْمِ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ، وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسِيتَ أَمْ قَصُرَتِ الصَّلَاةُ؟ قَالَ: ((لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) فَقَالَ: ((أَكَمَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ. فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ. ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ. ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، فَرُبَّمَا سَأَلُوهُ: ثُمَّ سَلَّمَ؟ فَيَقُولُ: نُبِّئْتُ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ: ثُمَّ سَلَّمَ.

[أطرافه في: ٧١٤، ٧١٥، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ٦٠٥١، ٧٢٥٠].

M-09825696131

था कि आप बहुत ही ख़फ़ा हों । और आप (ﷺ) ने अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखा। और उनकी उँगलियों को एक—दूसरे में दाख़िल किया। और आपने अपने दाएँ रुख़सार को बाएँ हाथ की हथेली से सहारा दिया। जो लोग नमाज़ पढ़कर जल्दी निकल जाया करते थे वो मस्जिद के दरवाज़ों से पार हो गए। फिर लोग कहने लगे कि क्या नमाज़ कम कर दी गई है । हाज़िरीन में अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी मौजूद थे। लेकिन उन्हें भी आपसे बोलने की हिम्मत न हुई। उन्हीं में एक शख़्स थे जिनके हाथ लम्बे थे और उन्हें ज़ुलयदैन कहा जाता था। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप (ﷺ) भूल गए या नमाज़ कम कर दी गई है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि न मैं भूला हूँ और न नमाज़ कम हुई है। फिर आप (ﷺ) ने लोगों से पूछा, क्या ज़ुलयदैन सहीह कह रहे हैं। हाज़िरीन बोले कि जी हाँ! ये सुनकर आप (ﷺ) आगे बढ़े और बाक़ी रकअ़तें पढ़ीं। फिर सलाम फेरा, फिर तक्बीर कही और सह्व का सज्दा किया। मअमूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा सज्दा। फिर सर उठाया और तक्बीर कही। फिर तक्बीर कही और दूसरा सज्दा किया। मअमूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा फिर सर उठाया और तक्बीर कही, लोगों ने बार-बार इब्ने सिरीन से पूछा कि क्या फिर सलाम फेरा तो वो जवाब देते कि मुझे ख़बर दी गई है कि इमरान बिन हुसैन कहते थे कि फिर सलाम फेरा।

(दीगर मक़ाम : 714, 715, 1227, 1228, 1229, 6051, 7250)

غَضْبَانُ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ، وَوَضَعَ خَدَّهُ الأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى، وَخَرَجَتِ السَّرَعَانُ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالُوا: قَصُرَتِ الصَّلاَةُ. وَفِي الْقَوْمِ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ، وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسِيْتَ أَمْ قَصُرَتِ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: ((لَمْ أَنسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) فَقَالَ: ((أَكَمَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ. فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ. ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ. ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، فَرُبَّمَا سَأَلُوهُ : ثُمَّ سَلَّمَ؟ فَيَقُولُ: نُبِّئْتُ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ: ثُمَّ سَلَّمَ.

[أطرافه في : ٧١٤، ٧١٥، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ٦٠٥١، ٧٢٥٠].

तशरीह : ये ह़दीष़ **'ह़दीष़े ज़ुलयदैन'** के नाम से मशहूर है। एक बुज़ुर्ग सहाबी ख़रबाक़ (रज़ि.) नामी के हाथ लम्बे-लम्बे थे इसलिये उनको ज़ुलयदैन कहा जाता था। इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि सह्वन बात कर लेने से या मस्जिद से निकल जाने से या नमाज़ की जगह से चले जाने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती। यहाँ भी आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथों की उंगलियों को कैंची करना मज़कूर है जिससे इस ह़ालत का जवाज़ मस्जिद और ग़ैर मस्जिद में ष़ाबित हुआ। यही ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद है। बाक़ी इस ह़दीष़ के मुता'ल्लिक़ दीगर बहषें अपने मक़ामात में आएँगी।

बाब 89 : उन मसाजिद का बयान जो मदीना के रास्ते में वाक़ेअ हैं और वो जगहें जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ अदा फ़र्माई है

٨٩- بَابُ الْمَسَاجِدِ الَّتِي عَلَى طُرُقِ الْمَدِينَةِ وَالْمَوَاضِعِ الَّتِي صَلَّى فِيهَا النَّبِيُّ ﷺ

(483) हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मक़दमी ने बयान किया, कहा हमसे फ़ैज़ल बिन सुलैमान ने, कहा हमसे मूसा बिन उक़्बा

٤٨٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمَقَدَّمِيُّ قَالَ : حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ

M-09825696131

तशरीह : इमाम क़स्तलानी शारेह बुख़ारी लिखते हैं कि इन मक़ामात में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की नमाज़ पढ़ना तबर्रुक ह़ासिल करने के लिये था और ये उसके ख़िलाफ़ नहीं जो ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से मरवी है क्योंकि ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने इस हाल में उसको मकरूह रखा जब कोई वाजिब और ज़रूरी समझकर ऐसा करें। यहाँ जिन--जिन मक़ामात की मसाजिद का ज़िक्र है उनमें से अकषर अब नापैद हो चुकी है, चन्द बाकी है। ज़ुलहुलैफा एक मशहूर मक़ाम है जहाँ से अहले मदीना एह़राम बाँधा करते थे। बतहा वो जगह है जहाँ पानी का बहाव है और वहाँ बारीक-बारीक कंकरिया है। रुवैषा मदीना से सत्रह फर्स के फ़ासले पर एक गाँव का नाम है। यहां से अर्ज नामी गाँव तेरह चौदह मील पड़ता है। ह़ज़्बह भी मदीना के रास्ते में एक पहाड़ है जो ज़मीन पर फैला हुआ है। हरशी जोह़फ़ह के क़रीब मदीना और शाम के रास्तों में एक पहाड़ का नाम है। मर्रुज्जहरान एक मशहूर मक़ाम है, स़फ़रावात वो नदी नाले और पहाड़ जो मर्रुज्जहरान के बाद आते हैं।

इस बाब में नौ ह़दीषें मज़कूर है। इनको ह़सन बिन सुफ़यान ने मुतफर्रिक तौर पर अपनी मुसनद में निकाला है मगर तीसरी को नहीं निकाला और मुस्लिम ने आखरी ह़दीष़ को किताबुल ह़ज्ज में निकाला है।

अब उन मसाजिद का पता नहीं चलता, न वो दरख्त और निशानात बाकी है। खुद मदीना मुनव्वरा में आँह़ज़रत (ﷺ) ने जिन-जिन मसाजिद में नमाज़ पढ़ी है उनको अमर बिन शैबा ने अख़बारे मदीना में ज़िक्र किया है। ह़ज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में उनको मा'लूम करके नक़्शी पत्थरों से ता'मीर करा दिया था उनमें से मस्जिदे क़ुबा, मस्जिदे फ़ज़ीख़, मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा, मस्जिद बग़ला, मस्जिद बनी मुआविया, मस्जिदे फ़तह, मस्जिद क़िब्लतैन वग़ैरह अभी तक बाकी है। मौजूदा हुकूमते सऊदिया ने अकषर मसाजिद को उम्दा त़ौर पर मुस्तह़कम (मज़बूत, सुदृढ़) कर दिया है।

इस ह़दीष़ में जिस सफ़र की नमाज़ों का ज़िक्र है वो सात दिन तक जारी रहा था और आपने उसमें 35 नमाज़ें अदा की थी। राविियाने ह़दीष़ ने अकषर का ज़िक्र नहीं किया। वादी–ए–रौहा की तफ़्सील पहले गुज़र चुकी है।

'क़ालश्शैख़ुब्नु हजर हाज़िहिल मसाजिदु ला युअरफ़ुल यौम हाहुना ग़ैर मस्जिदि ज़िल्ह़लीफ़ति वल मसाजिदिल्लती बिरौंहा अहलु तिल्कन्नाहियति इन्तहा व इन्नमा कानब्नु ऊमर युसल्ली फ़ी तिल्कल मवाज़िइ तबर्रूकन बिहा व लम यजलिन्नासु यतबर्रकून बिमवाजिअस्सुलहाइ व अम्मा मा रूविय अन उमर अन्नहू करिह ज़ालिक फ़लिअन्नहू ख़शिय अंय्यल्तज़िमन्नासुस्सलात फ़ी तिल्कल मवाज़िअ व यम्बग़ी लिल आलिमि इज़ा राअन्नास यल्तजिमून बिन्नवाफ़िली इल्तिज़ामन शदीदन अंय्यन्हाहुम अ़न्हु'

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर की इस तक़रीर का ख़ुलासा वही है जो ऊपर ज़िक्र हुआ है यानी उन मक़ामात पर नमाज़ महज़ तबर्रुकन पढ़ते थे मगर अवाम इसका इन्तिज़ाम करने लगी तो उलमा के लिये ज़रूरी है कि उनको रोके।

बाब 90 : इमाम का सुतरा मुक़्तदियों को भी किफ़ायत करता है

٩٠- باب سُتْرَةُ الإِمَامِ سُتْرَةُ مَنْ خَلْفَهُ

(493) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब के वास्ते से बयान किया, उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा से कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं एक गधी पर सवार होकर आया। उस ज़माने में बालिग़ होने वाला ही था। रसूलुल्लाह (ﷺ) मिना में लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। लेकिन दीवार आप (ﷺ) के सामने न थी। मैं स़फ़ के कुछ ह़िस्से से गुज़र कर सवारी से उतरा। और मैंने गधी को चरने के लिये छोड़ दिया

٤٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى حِمَارٍ أَتَانٍ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ قَدْ نَاهَزْتُ الاِحْتِلاَمَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي بِالنَّاسِ بِمِنًى إِلَى غَيْرِ جِدَارٍ، فَمَرَرْتُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ الصَّفِّ

नमाज़ को कोई चीज़ तोड़ देती है? तो उन्होंने फ़र्माया कि नहीं! उसे कोई चीज़ नहीं तोड़ती। क्योंकि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी (ﷺ) की बीवी मुतहहरह हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) खड़े होकर रात को नमाज़ पढ़ते और मैं आपके सामने आपके क़िब्ले के बीच अर्ज़ में बिस्तर पर लेटी रहती थी।

(राजेअ : 382)

ابنِ شِهَابٍ أَنَّهُ سَأَلَ عَمَّهُ عَنِ الصَّلاَةِ يَقْطَعُهَا شَيْءٌ؟ فَقَالَ: لاَ يَقْطَعُهَا شَيْءٌ. أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُومُ فَيُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَإِنِّي لَمُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ عَلَى فِرَاشِ أَهْلِهِ.

[راجع: ٣٨٢]

तफ़्सील तोहफ़तुल अहवज़ी के हवाले से गुज़र चुका है।

बाब 106 : इस बारे में कि नमाज़ में अगर कोई अपनी गर्दन पर किसी बच्ची को उठा ले तो क्या हुक्म है?

١٠٦- بَابُ إِذَا حَمَلَ جَارِيَةً صَغِيرَةً عَلَى عُنُقِهِ فِي الصَّلاَةِ

(516) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने आमिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने अ़म्र बिन सुलैम ज़र्क़ी से, उन्होंने अबू क़तादा अंसारी (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उमामा बिन्ते ज़ैनब बिन्ते रसूलुल्लाह (ﷺ) (कुछ औक़ात) को नमाज़ पढ़ते वक़्त उठाए होते थे। अबुल आ़स बिन रबीआ बिन अ़ब्दे शम्स की ह़दीष़ में है कि जब सज्दे में जाते तो उतार देते और जब क़याम करते तो उठा लेते।

(दीगर मक़ाम : 5996)

٥١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي وَهُوَ حَامِلٌ أُمَامَةَ بِنْتَ زَيْنَبَ بِنْتِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَلأَبِي الْعَاصِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ عَبْدِ شَمْسٍ، فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَهَا وَإِذَا قَامَ حَمَلَهَا. [طرفه في : ٥٩٩٦]

तश्रीह : हज़रत उमामा बिन्ते अबुल आ़स (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की बड़ी महबूब (लाडली) नवासी थी। बाज़ औक़ात इस फ़ितरी मुहब्बत की वजह से आँहज़रत (ﷺ) उनको, जबकि ये बहुत छोटी थी, नमाज़ में कंधे पर बिठा लिया करते थे। हज़रत उमामा का निकाह हज़रत अ़ली कर्रमहुल्लाहु वज्हु से हुआ जबकि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का इन्तिक़ाल हो चुका था और वो उनसे निकाह करने की वसिय्यत भी फ़र्मा गई थी। ये 11 हिजरी का वाक़िआ है। 40 हिजरी में हज़रत अ़ली (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो आपकी वसिय्यत के मुताबिक़ हज़रत उमामा (रज़ि.) का अक़्दे षानी मुग़ीरा बिन नौफ़ल से हुआ जो हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब के पोते होते थे। इन्हीं के पास आपने वफ़ात पाई।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) अहकामे इस्लाम में वुसअ़त के पेशेनज़र बतलाना चाहते हैं कि ऐसे किसी ख़ास मौके पर अगर किसी शख़्स ने नमाज़ में अपने किसी प्यारे मासूम बच्चे को कंधे पर बिठा लिया तो इससे नमाज़ फ़ासिद न होगी।

बाब 107 : ऐसे बिस्तर की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ना जिस पर हाइज़ा औरत हो

١٠٧- بَابُ إِذَا صَلَّى إِلَى فِرَاشٍ فِيهِ حَائِضٌ

M-09825696131

(636) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी ज़िब ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम ज़ुह्री ने सईद बिन मुसय्यिब से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और ज़ुहरी ने अबू सलमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि .) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से, आपने फ़र्माया कि तुम लोग तक्बीर की आवाज़ सुन लो तो नमाज़ के लिए (मा'मूली चाल से) चल पड़ो। सुकून और वक़ार को (बहरहाल) लाज़िम पकड़े रहो और दौड़कर मत आओ। फिर नमाज़ का जो हिस्सा मिले उसे पढ़ लो, और जो न मिल सके उसे बाद में पूरा कर लो। (दीगर मक़ाम : 908)

٦٣٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. ح وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمُ الإِقَامَةَ فَامْشُوا إِلَى الصَّلاَةِ وَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِيْنَةِ وَالْوَقَارِ، وَلاَ تُسرِعُوا، فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا)).

[طرفه في : ٩٠٨].

बाब 22 : नमाज़ की तक्बीर के वक़्त जब लोग इमाम को देखे तो किस वक़्त खड़े हों

٢٢- بَابُ مَتَى يَقُومُ النَّاسُ إِذَا رَأَوُا الإِمَامَ عِنْدَ الإِقَامَةِ؟

(637) हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा मुझे यह्या ने अ़ब्दुल वह्हाब बिन अबी क़तादा से ये ह़दीष़ लिखकर भेजी कि वो अपने बाप से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिए तक्बीर कही जाए तो उस वक़्त तक न खड़े हो जब तक मुझे निकलते हुए न देख लो। (दीगर मक़ाम : 638, 909)

٦٣٧- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي)).

[طرفاه في : ٦٣٨، ٩٠٩].

तश्रीह़ : इस मसले में कई क़ौल है, इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक तकबीर ख़त्म होने के बाद मुक़्तदियों को उठना चाहिये, इमाम मालिक (रह.) कहते हैं तकबीर शुरू होते ही– इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) कहते हैं कि जब मुअज़्जिन **ह़य्य अलस्सलाह** कहे और जब मुअज़्जिन **क़द कामतिस्सलाह** कहे तो इमाम नमाज़ शुरू कर दे। इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह.) फ़र्माते हैं कि **ह़य्य अलस्सलाह** पर उठें। इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब की ह़दीष़ लाकर ये इशारा किया कि जब इमाम मस्जिद में न हो तो मुक़्तदियों को चाहिए कि बैठे रहे और जब इमाम को देख ले तब नमाज़ के लिये खड़े हो।

बाब 23 : नमाज़ के लिए जल्दी न उठे बल्कि इत्मीनान और सुकून व सहूलत के साथ उठे

٢٣- بَابُ لاَ يَسْعَى إِلَى الصَّلاَةِ مُسْتَعْجِلاً، وَلْيَقُمْ إِلَيْهَا بِالسَّكِيْنَةِ وَالْوَقَارِ

(638) हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहाकि हमसे शैबान ने यह्या बिन अबी कष़ीर से बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से, उन्होंने अपने बाप अबू

٦٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي

قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي، وَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ)) تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ. [راجع: ٦٣٧]

क़तादा ह़ारिष़ बिन रुबई (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ की तक्बीर हो तो जब तक मुझे देख न लो खड़े न हो और आहिस्तगी को लाज़िम रखो। शैबान के साथ इस ह़दीष़ को यह्या से अ़ली बिन मुबारक ने भी रिवायत किया है। (राजेअ़ : 637)

जिसे ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल जुमुआ में निकाला है। मा'लूम हुआ कि शिरकते जमाअ़त के लिये भागदौड़ मुनासिब नहीं बल्कि सुकून और वक़ार के साथ चलकर शरीके जमाअ़त होना चाहिए। फिर जो नमाज़ छूट जाए वो बाद में पढ़ ले। जमाअ़त का ष़वाब बहरहाल ह़ासिल होगा, इन्शाअल्लाह।

٢٤- بَابُ هَلْ يَخْرُجُ مِنَ الْمَسْجِدِ لِعِلَّةٍ؟

बाब 24 : क्या मस्जिद से किसी ज़रूरत की वजह से अज़ान या इक़ामत के बाद भी कोई शख़्स निकल सकता है?

٦٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَجَ وَقَدْ أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ وَعُدِّلَتِ الصُّفُوفُ، حَتَّى إِذَا قَامَ فِي مُصَلَّاهُ انْتَظَرْنَا أَنْ يُكَبِّرَ، انْصَرَفَ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَمَكَثْنَا عَلَى هَيْئَتِنَا، حَتَّى خَرَجَ إِلَيْنَا يَنْطِفُ رَأْسُهُ مَاءً وَقَدِ اغْتَسَلَ. [راجع: ٢٧٥]

(639) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, वो स़ालेह बिन कैसान से, वो इब्ने शिहाब से, वो अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (एक दिन हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए, इक़ामत कही जा चुकी थी और सफ़ें बराबर की जा चुकी थीं। आप जब मुस़ल्ले पर खड़े हुए तो हम इंतिज़ार कर रहे थे कि अब आप तक्बीर कहें। लेकिन आप वापस तशरीफ़ ले गए और फ़र्माया कि अपनी अपनी जगह पर ठहरे रहो। हम उसी ह़ालत में ठहरे रहे यहाँ तक कि आप दोबारा तशरीफ़ लाए, तो सरे मुबारक से पानी टपक रहा था, आपने ग़ुस्ल किया था। (राजेअ़ : 275)

तश्रीह़ : आप हालते ज़नाबत में थे मगर याद न रहने की वजह से (नमाज़ के लिये) तशरीफ़ ले आए। बाद में मा'लूम हुआ तो वापस तशरीफ़ ले गये। इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये मसला ष़ाबित किया कि कोई ऐसी ही सख़्त ज़रूरत दरपेश आ जाए तो अज़ान व तकबीर के बाद भी आदमी मस्जिद के बाहर निकल सकता है। जिस ह़दीष़ में मुमानअ़त आई है वहां बिला ज़रूरत मह़ज़ बिला वजहे नफ़्सानी ख़्वाहिश के बाहर निकलना मुराद है।

मुमानअ़त वाली ह़दीष़ स़ह़ी मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रत अबू हुरैराह (रज़ि.) से मरवी है और मुसनद अह़मद में भी है। इन अहादीष़ को नक़ल करने के बाद ह़ज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं–

'वल ह़दीष़ानि यदुल्लानि अला तह़रीमिल ख़ुरूजि मिनल मस्जिदि बअ़द सिमाइल अज़ानि लिग़ैरिल वुज़ूइ व क़ज़ाइल हाज़ति व मा तदउ़ज़्ज़रूरतु इलैहि ह़त्ता युस़ल्लिय फ़ीहि तिल्कस़्स़लात लिअन्न ज़ालिकल मस्जिद क़द तअय्युनुन लितिल्कस़्स़लाति' (नैलुल औतार)

यानी मस्जिद से अज़ान सुनने के बाद निकलना हराम है मगर वुज़ू या क़ज़ा–ए–ह़ाज़त या और कोई ज़रूरी काम हो तो इजाज़त है वर्ना जिस मस्जिद में रहते हुए अज़ान सुन ली अब उसी मस्जिद में नमाज़ की अदायगी लाज़िम है क्योंकि उस नमाज़ के लिये वही मस्जिद मुतअ़य्यिन (निर्धारित) हो चुकी है। इस ह़दीष़ से ये भी ष़ाबित हुआ कि अह़कामे शरीअ़त व त़रीक़–ए–इबादत में भूल हो सकती है ताकि वो वह्य–आसमानी के मुत़ाबिक़ उस भूल का सुधार कर सकें।

बाब 25 : अगर इमाम मुक़्तदियों से कहे कि तुम लोग इसी ह़ालत में ठहरे रहो तो जब तक वो लौटकर आए उसका इंतिज़ार करें (और अपनी ह़ालत पर ठहरे रहें)

٢٥- بَابُ إِذَا قَالَ الإِمَامُ ((مَكَانَكُمْ)) حَتَّى يَرْجِعَ انْتَظَرُوهُ

(640) हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा कि हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने ख़बर दी कि कहा हमसे औज़ाई ने इब्ने शिहाब ज़ुह्री से बयान किया, उन्होंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि उन्होंने फ़र्माया कि नमाज़ के लिए इक़ामत कही जा चुकी थी और लोगों ने सफ़ें सीधी कर ली थीं। फिर रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और आगे बढ़े। लेकिन ह़ालते जनाबत में थे (मगर पहले ख़्याल न रहा) इसलिए आपने फ़र्माया कि तुम लोग अपनी-अपनी जगहों पर ठहरे रहो। फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए तो आप ग़ुस्ल किये हुए थे और सर से पानी टपक रहा था। फिर आप (ﷺ) ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 275)

٦٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ، فَسَوَّى النَّاسُ صُفُوفَهُمْ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَقَدَّمَ وَهُوَ جُنُبٌ. ثُمَّ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَرَجَعَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ مَاءً، فَصَلَّى بِهِمْ. [راجع: ٢٧٥]

तशरीह़ : ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़मां साह़ब फ़र्माते हैं कि बाज़ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़ायद (अधिक) है– 'क़ील लिअबी अ़ब्दिल्लाहि अय अल बुख़ारी अन्न बदअ लिअहदिना मिष़्ल हाज़ा यफ़अलु कमा यफ़अलुन्नबिय्यु ﷺ फ़अय्यु शैइन यस्नउ फ़ क़ील यन्तजिरूनहू क़ियामन औ क़ुऊदन क़ाल इन कान क़ब्लत्तक्बीरि लिल इह़रामि फ़ला बास अंय्यक़ऊदू व इन कान बअ़दत्तक्बीरि इन्तज़िरूहु हाल कौनिहिम क़ियामन'

यानी लोगों ने इमाम बुख़ारी (रह.) से कहा अगर हममें किसी को ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो वो क्या करें? उन्होंने कहा कि जैसा आँह़ज़रत (ﷺ) ने किया वैसा करें। लोगों ने कहा तो मुक़्तदी इमाम का इन्तिज़ार खड़े रहकर करते रहे या बैठ जाये। उन्होंने कहा अगर तकबीर तह़रीमा हो चुकी है तो खड़े खड़े इन्तिज़ार करें वर्ना बैठ जाने में कोई क़बाह़त नहीं है।

बाब 26 : आदमी यूँ कहे कि हमने नमाज़ नहीं पढ़ी तो इस तरह़ कहने में कोई क़बाह़त नहीं है

٢٦- بَابُ قَوْلِ الرَّجُلِ: مَا صَلَّيْنَا

(641) हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान ने यह़्या के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सलमा से सुना, वो कहते थे कि हमें जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ग़ज़्व–ए–ख़ंदक़ के दिन ह़ाज़िर हुए और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की सूरज ग़ुरूब होने को ही था कि मैं अब अ़स्र की नमाज़ पढ़ सका हूँ। आप जब ह़ाज़िरे

٦٤١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ يَقُولُ: أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَاءَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَاللهِ مَا كِدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ حَتَّى كَادَتِ الشَّمْسُ تَغْرُبُ،

M-09825696131

सुबह शाम बार-बार हाज़िरी देता है। अल्लाह तआला जन्नत में उसकी मेहमानी का सामान करेगा। वो सुबह शाम जब भी मस्जिद में जाएगा।

قَالَ: ((مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ وَرَاحَ أَعَدَّ اللهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ)).

बाब 38 : जब नमाज़ की तक्बीर होने लगे तो फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा और कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकता

٣٨- بَابُ إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ صَلاَةَ إِلاَّ الْمَكْتُوبَةَ

(663) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने अपने बाप सअ़द बिन इब्राहीम से बयान किया, उन्होंने ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना से, कहा कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक शख़्स पर हुआ (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन बिश्र ने बयान किया, कहा कि हमसे बह्ज़ बिन असद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे सअ़द बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम से सुना, कहा कि मैंने क़बीला अज़्द के एक स़ाहब से जिनका नाम मालिक बिन बुहैना (रज़ि.) था, सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नज़र एक ऐसे नमाज़ी पर पड़ी जो तक्बीर के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़ रहा था। आँहुज़ूर (ﷺ) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोग उस शख़्स के इर्द–गिर्द जमा हो गए और आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया क्या सुबह की चार रकअ़तें पढ़ता है? क्या सुबह की चार रकअ़तें हो गईं? इस ह़दीष़ की मुताबअ़त गुंदर और मुआ़ज़ ने शुअ़बा से की है जो मालिक से रिवायत करते हैं।

इब्ने इस्हाक़ ने सअ़द से, उन्होंने ह़फ़्स़ से, वो अ़ब्दुल्लाह बिन बुहैना से और ह़म्माद ने कहा कि हमें सअ़द ने ह़फ़्स़ के वास्ते से ख़बर दी और वो मालिक के वास्ते से।

٦٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِرَجُلٍ.)) ح قَالَ : وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: سَمِعْتُ حَفْصَ بْنَ عَاصِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً مِنَ الأَزْدِ يُقَالُ لَهُ مَالِكُ ابْنُ بُحَيْنَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَأَى رَجُلاً وَقَدْ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لاَثَ بِهِ النَّاسُ، وَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الصُّبْحَ أَرْبَعًا، الصُّبْحَ أَرْبَعًا)) تَابَعَهُ غُنْدَرٌ وَمُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَالِكٍ.
وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: عَنْ سَعْدٍ عَنْ حَفْصٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ بُحَيْنَةَ. وَقَالَ حَمَّادٌ: أَخْبَرَنَا سَعْدٌ عَنْ حَفْصٍ عَنْ مَالِكٍ.

तश्रीह : ह़ज़रत सय्यिदुना इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ जिन लफ़्ज़ों में बाब मुनअ़क़िद किया है ये लफ़्ज़ ही ख़ुद इस ह़दीष में वारिद हुआ है, जिसे इमाम मुस्लिम और सुनन वालों ने निकाला है। मुस्लिम बिन ख़ालिद की रिवायत में इतना ज़्यादा और है कि फ़ज्र की सुन्नतें भी न पढ़ें।

ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज्ज़मा स़ाह़ब मुह़द्दिष हैदराबादी (रह.) फ़र्माते हैं– हमारे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और अहले ह़दीष का यही क़ौल है कि जब फ़र्ज़ की तकबीर शुरू हो जाये तो फिर कोई नमाज़ न पढ़े न फ़ज्र की सुन्नतें न और कोई सुन्नत या फ़र्ज़, बस उसी फ़र्ज़ में शरीक हो जाये जिसकी तकबीर हो रही है।

और उसके हाथ में खाने की चीज़ हो तो वो क्या करे?

الصَّلَاةِ وَبِيَدِهِ مَا يَأْكُلُ

(675) हमसे अब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने स़ालेह़ बिन कैसान से बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने कहा कि मुझको जा'फ़र बिन अ़म्र बिन उमय्या ने ख़बर दी कि उनके बाप अ़म्र बिन उमय्या ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप बकरी की रान का गोश्त काट—काटकर खा रहे थे। इतने में आप नमाज़ के लिए बुलाए गए। आप खड़े हो गए और छुरी डाल दी, फिर आपने नमाज़ पढ़ाई और वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 208)

٦٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَعْفَرُ بْنُ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ أَبَاهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَأْكُلُ ذِرَاعًا يَحْتَزُّ مِنْهَا، فَدُعِيَ إِلَى الصَّلَاةِ فَقَامَ فَطَرَحَ السِّكِّينَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [راجع: ٢٠٨]

तश्रीह : इस बाब और इसके तह़त इस ह़दीष के लाने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रज़ि.) को ये ष़ाबित करना मन्ज़ूर है कि पिछली ह़दीष का हुक्म इस्तिहबाबन था वुजूबन न था वर्ना आँह़ज़रत (ﷺ) खाना छोड़कर नमाज़ के लिए क्यों जाते। बाज़ कहते हैं इमाम का हुक्म अलग है उसे खाना छोड़कर नमाज़ के लिये जाना चाहिए। ह़दीष से ये भी ष़ाबित हुआ कि गोश्त खाने से वुज़ू नहीं टूटता।

बाब 44 : उस आदमी के बारे में जो अपने घर के कामकाज में मस़रूफ़ था कि तक्बीर हुई और वो नमाज़ के लिए निकल खड़ा हुआ

٤٤- بَابُ مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَهْلِهِ فَأُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَخَرَجَ

(676) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे ह़कम बिन उ़त्बा ने इब्राहीम नख़ई से बयान किया, उन्होंने अस्वद बिन ज़ैद से, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलल्लाह (ﷺ) अपने घर में क्या—क्या करते रहे थे। आपने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर के काम—काज यानी अपने घरवालियों की मदद किया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त होता तो फ़ौरन (काम—काज छोड़कर) नमाज़ के लिए चले जाते थे। (दीगर मक़ाम : 5363, 6039)

٦٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَكَمُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي بَيْتِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ فِي مَهْنَةِ أَهْلِهِ - تَعْنِي فِي خِدْمَةِ أَهْلِهِ - فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ. [طرفاه في : ٥٣٦٣، ٦٠٣٩].

बाब 45 : कोई शख़्स़ सिर्फ़ ये बतलाने के लिए कि आँह़ज़रत (ﷺ) नमाज़ क्यूँकर पढ़ा करते थे और आपका त़रीक़ा क्या था नमाज़ पढ़ाए तो कैसा है?

٤٥- بَابُ مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ وَهُوَ لَا يُرِيدُ إِلَّا أَنْ يُعَلِّمَهُمْ صَلَاةَ النَّبِيِّ ﷺ وَسُنَّتَهُ

(677) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने अबू क़िलाबा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से बयान किया, उन्होंने कहा कि मालिक बिन हुवैरिष़ (स़ह़ाबी) एक बार हमारी

٦٧٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ: جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فِي

बाब 55 : अगर इमाम अपनी नमाज़ को पूरा न करे और मुक़्तदी पूरा करें

٥٥– بَابُ إِذَا لَمْ يُتِمَّ الإِمَامُ وَأَتَمَّ مَنْ خَلْفَهُ

(694) हमसे फ़ज़ल बिन सहल ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़सन बिन मूसा अश्यब ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया ज़ैद बिन असलम से, उन्होंने अ़त़ा बिन यसार से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह

٦٩٤– حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى الأَشْيَبُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ

(रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम लोगों को नमाज़ पढ़ाते हैं। पस अगर इमाम ने ठीक नमाज़ पढ़ाई तो उसका ष़वाब तुम्हें मिलेगा और अगर ग़लती की तो भी (तुम्हारी नमाज़ का) ष़वाब तुमको मिलेगा और ग़लती का वबाल उन पर रहेगा।

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يُصَلُّونَ لَكُمْ، فَإِنْ أَصَابُوا فَلَكُمْ، وَإِنْ أَخْطَأُوا فَلَكُمْ وَعَلَيْهِمْ)).

M-09825696131

यानी इमाम की नमाज़ में नुक़्स रह जाने से मुक़्तदियों की नमाज़ में कोई ख़लल न होगा जब उन्होंने तमाम शरायत और अरकान को पूरा किया हो।

बाब 56 : बाग़ी और बिदअ़ती की इमामत का बयान

٥٦– بَابُ إِمَامَةِ الْمَفْتُونِ وَالْمُبْتَدِعِ

और बिदअ़ती के ब रे में इमाम ह़सन बस़री (रह.) ने कहा कि तू उसके पीछे नमाज़ पढ़ ले उसकी बिदअ़त उसके सर रहेगी।

وَقَالَ الْحَسَنُ : صَلِّ وَعَلَيْهِ بِدْعَتُهُ.

(695) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे इमाम ज़ुह्री ने हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान से नक़ल किया। उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़ियार से कि वो ख़ुद ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) के पास गए। जबकि बाग़ियों ने उनको घेर रखा था। उन्होंने कहा कि आप ही आ़म मुसलमानों के इमाम हैं मगर आप पर जो मुसीबत है वो आपको मा'लूम है। इन ह़ालात में बाग़ियों का मुक़र्रर किया हुआ इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है। हम डरते हैं कि उसके पीछे नमाज़ पढ़कर गुनहगार न हो जाएँ। ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने जवाब दिया नमाज़ तो जो लोग काम करते हैं उन कामों में सबसे ज़्यादा बेहतरीन काम है। तो वो जब अच्छा काम करें तुम भी उनके साथ मिलकर अच्छा काम करो और जब वो बुरा काम करें तो तुम उनकी बुराई से अलग रहो और मुह़म्मद बिन यज़ीद ज़ुबैदी ने कहा कि इमाम ज़ुह्री ने फ़र्माया हम तो ये समझते हैं कि हिजड़े के पीछे नमाज़ न पढ़ें। मगर ऐसी ही लाचारी हो तो और बात है जिसके बग़ैर कोई चारा न हो।

٦٩٥– قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ لَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ خِيَارٍ أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَهُوَ مَحْصُورٌ فَقَالَ : إِنَّكَ إِمَامُ عَامَّةٍ، وَنَزَلَ بِكَ مَا نَرَى، وَيُصَلِّي لَنَا إِمَامُ فِتْنَةٍ وَنَتَحَرَّجُ. فَقَالَ: الصَّلاَةُ أَحْسَنُ مَا يَعْمَلُ النَّاسُ، فَإِذَا أَحْسَنَ النَّاسُ فَأَحْسِنْ مَعَهُمْ، وَإِذَا أَسَاؤُوا فَاجْتَنِبْ إِسَاءَتَهُمْ. وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: لاَ نَرَى أَنْ يُصَلَّى خَلْفَ الْمُخَنَّثِ إِلاَّ مِنْ ضَرُورَةٍ لاَ بُدَّ مِنْهَا.

तश्रीह : मफ़्तून का तर्जुमा बाग़ी किया है जो सच्चे बरह़क़ इमाम से फिर जाये और बिदअ़ती से आम बिदअ़ती मुराद है ख्वाह उसकी बिदअ़त ए'तिक़ादी हो जैसे शीआ़, ख्वारिज, मुर्जिया, मुअ़तज़ला वग़ैरह की, ख्वाह अ़मली हो जैसे सेहरा बान्धने वाले, तीजा, दसवां करने वाले, ता'ज़िया या अ़लम उठाने वाले, क़ब्रों पर चराग़ां करने वाले, मीलाद या ग़िना या मरषिया की मजलिस करने वाले की, बशर्ते कि उनकी बिदआ़त कुफ़्र और शिर्क की हद तक न पहुँचे। अगर कुफ़्र या शिर्क के दर्जे पर पहुंच जाए तो उनके पीछे नमाज़ दुरुस्त नहीं। तसहील में हैं कि सुन्नत कहते हैं हदीष़ को और जमाअ़त से मुराद सहाबा और ताबेईन है जो लोग हदीष शरीफ़ पर चलते हैं और ए'तिक़ाद और अ़मल में सहाबा और ताबेईन के तरीक पर है वह अहले सुन्नत वल जमाअ़त है बाक़ी सब बिदअ़ती हैं। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा)

M-09825696131

बाब 75 : इस बारे में कि सफ़ें पूरी न करने वालों पर (कितना गुनाह है)

٧٥- بَابُ إِثْمِ مَنْ لَمْ يُتِمَّ الصُّفُوفَ

(724) हमसे मुआज़ बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ज़ल बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन उबैद ताई ने बयान किया बिश्र बिन यसार अंसारी से, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि जब वो (बसरा से) मदीना आए, तो आपसे पूछा गया कि नबी करीम (ﷺ) के अहदे मुबारक और हमारे इस दौर में आपने क्या फ़र्क़ पाया। फ़र्माया कि और तो कोई बात नहीं सिर्फ़ लोग सफ़ें बराबर नहीं करते।

٧٢٤- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ اسَدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّائِي عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ الأَنْصَارِيُّ عَنْ انَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّهُ قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ، فَقِيْلَ لَهُ، مَا أَنْكَرْتَ مِنَّا منذُ يومَ عهدتَ رسولَ الله ﷺ؟ قَالَ: مَا أَنْكَرْتُ شَيْئًا إِلاَّ أَنَّكُمْ لاَ تُقِيْمُونَ الصُّفُوفَ.

और उक़्बा बिन उबैद ने बशीर बिन यसार से यूँ रिवायत किया कि अनस (रज़ि.) हमारे पास मदीना आए। फिर यही हदीस बयान की।

وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عُبَيْدٍ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ: قَدِمَ عَلَيْنَا أَنَسُ الْمَدِيْنَةِ.. بِهَذَا.

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये हदीष लाकर सफ़ बराबर करने का वुजूब षाबित किया क्योंकि सुन्नत के तर्क को हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ करना नहीं कह सकते और हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ करना क़ुर्आन की रोशनी में सज़ा का मुस्तहिक़ होगा। **'फ़ल्यहज़रिल्लज़ीन युख़ालिफ़ून अन अम्रिही अन तुसीबहुम फ़ित्नतुन औ युसीबुहुम अज़ाबन अलीमुन'** (सूरह नूर : 63) तसहीलुल क़ारी में ह कि हमारे ज़माने में लोगों ने सुन्नत के मुवाफ़िक़ सफ़ें बराबर करना छोड़ दी है। कहीं तो ऐसा होता है कि आगे पीछे बेतरतीब खड़े होते हैं, कहीं बराबर भी करते हैं तो मोंढे से मोंढा और टखने से टखना नहीं मिलाते बल्कि ऐसा करने को नाज़ैबा जानते हैं। ख़ुदा की मार उनकी शक्लऔर तहज़ीब पर। नमाज़ी लोग परवरदिगार की फ़ौज हैं। फ़ौज में जो कोई क़ायदे की पाबन्दी न करे वो सख़्त सज़ा के क़ाबिल होता है। (मौलाना वहीदुज़्ज़मा मरहूम)

बाब 76 : सफ़ में मोंढा और क़दम से क़दम मिलाकर खड़े होने का बयान

٧٦- بَابُ إِلْزَاقِ الْمُنْكِبِ بِالْمُنْكِبِ وَالْقَدَمِ بِالْقَدَمِ فِي الصَّفِّ

और नोअ़मान बिन बशीर सहाबी ने कहा कि मैंने देखा (सफ़ में) एक आदमी हममें से अपना टख़ना अपने पास वाले दूसरे आदमी के टख़ने से मिलाकर खड़ा होता।

وَقَالَ النُّعْمَانُ بْنُ بَشِيْرٍ : رَأَيْتُ الرَّجُلَ مِنَّا يُلْزِقُ كَعْبَهُ بِكَعْبِ صَاحِبِهِ.

(725) हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने हमीद से बयान किया, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से, उन्होंने नबी अकरम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया, सफ़ें बराबर कर लो। मैं तुम्हें अपने पीछे से भी देखता रहता हूँ और हममें से हर शख़्स ये करता कि (सफ़ में)

٧٢٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((أَقِيْمُوا صُفُوفَكُمْ، فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِيْ. وَكَانَ أَحَدُنَا يُلْزِقُ

M-09825696131

مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَقَدَمَهُ بِقَدَمِهِ)).

[راجع: ٧١٨]

अपना मोंढा अपने साथी के मोंढे से और अपना क़दम उसके क़दम से मिलाता था। (राजेअ़ : 718)

तश्रीह : हज़रत इमामुद्दुन्या फ़िल हदीष इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ मुतफ़र्रिक़ अबवाब मुनअ़क़िद फ़र्माकर और उनके तहत अनेक अहादीष लाकर सफ़ों को सीधा करने की अहमियत पर रोशनी डाली है। इस सिलसिले का ये आख़री बाब है जिसमें आपने बतलाया है कि सफ़ों की सीधी करने का मतलब ये है कि सफ़ में हर नमाज़ी अपने करीब वाले नमाज़ी के मोंढे से मोंढा और क़दम से क़दम और टख़ने से टख़ना मिलाकर खड़ा हो जैसा कि हज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) का बयान नक़ल हुआ कि हम अपने साथी के टख़ने से टख़ना मिलाकर खड़े हुआ करते थे। हज़रत अनस (रज़ि.) का बयान भी मौजूद है।

नीज़ फ़तहुलबारी, जिल्द 2/सः 176 पर हज़रत अनस (रज़ि.) ही के ये अल्फ़ाज़ भी मन्क़ूल है कि **'लौ फ़अ़लतु ज़ालिक बिअहदिहिमिल यौम लि नफ़र कअन्नहू बग़लुन शमूसुन'** अगर मैं आज के नमाज़ियों के साथ क़दम से क़दम और टखने से टख़ना मिलाने की कोशिश करता हूँ तो वो इससे सरकश खच्चर की तरह दूर भागते हैं। इससे मा'लूम होता है कि अहदे सहाबा के खत्म होते होते मुसलमान इस दर्जा ग़ाफ़िल होने लगे थे कि हिदायते नबवी के मुताबिक़ सफ़ों को सीधा करने और क़दमों से क़दम मिलाने का अ़मल एक अजनबी अ़मल बनने लग गया था। जिस पर हज़रत अनस (रज़ि.) को ऐसा कहना पड़ा। इस बारे में और भी कई अहादीष वारिद हुई हैं,

'रवा अबू दाऊद वल इमामु अहमद अनिब्नि उ़मर अन्नहू अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ाल अक़ीमू सुफ़ूफ़कुम व हाज़ू बैनल मनाकिबि व सद्दुलख़िलल व लय्यिनू बिअयदी इख़्वानिकुम ला तज़िरु फ़ुरूजातिश्शैतानि मन वसल सफ़्फ़न व वसलहुल्लाहु व मन क़तअ सफ़्फ़न क़तअहुल्लाहु व रवल्बज़्ज़ारु बिइस्नादिन हसनिन अन्हु अलैहिस्सलातु वस्सलाम मन सद्द फ़ुर्जतम्मिनस्सफ़्फ़ि ग़फ़रल्लाहु लहू व फ़ी अबी दाऊद अन्हु अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ाल खियारुकुम अल्यनुकुम मनाकिब फ़िस्सलाति' यानी अबू दाऊद और मुसनद अहमद में अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सफ़ें सीधी करो और कन्धों को बराबर करो। यानी कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े हो जाओ और जो सुराख़ दो नमाज़ियों के दर्मियान नज़र आये उसे बन्द कर दो और अपने भाईयों के साथ नर्मी इख़्तियार करो और शैतान के घुसने के लिये सुराख़ की जगह न छोड़ो। याद रखो जिसने सफ़ को मिलाया अल्लाह उसको भी मिला देगा और जिसने सफ़ को क़तअ़ किया ख़ुदा उसको भी काट देगा। बज़्ज़ार में सनद हसन से है कि जिसने सफ़ की दरार को बन्द किया अल्लाह उसको बख़्शे। अबू दाऊद में ह कि तुममें वही बेहतर है जो नमाज़ में कन्धों को नरमी के साथ मिलाये रखे।

'व अनिन्नुअमानिब्नि बशीरिन क़ाल कान रसूल ﷺ युसव्वी सुफ़ूफ़ना कअन्नमा युसव्वी बिहिलक़दाहु हत्ता राअ इन्न क़द अक़ल्ना अन्हु षुम्म ख़रज यौमन फ़क़ाम हत्ता क़ाद अंय्युकब्बिर फ़राअ रजुलन बादियन सदरहू मिनस्सफ़्फ़ि फ़क़ाल इबादल्लाहि लतुसव्वुन सुफ़ूफ़कुम औ लियुख़ालिफ़न्नल्लाहु बैन वुजूहिकुम रवाहुल जमाअतु इल्लल बुख़ारी फ़इन्न लहू मिन्हु लतुसव्वुन सुफ़ूफ़कुम औ लयुख़ालिफ़न्नल्लाहु बैन वुजूहिकुम व लि अहमद व अबी दाऊद फ़ी रिवायतिन क़ाल फ़राइतुर्रजुल युल्ज़िकु कअबहू बिकअबि साहिबिही व रुक्बतहू बिरुक्बतिही व मन्कबहू बिमन्किबिही' (नैलुल औतार जिल्द 3 स. 199)

यानी नोअ़मान बिन बशीर से रिवायत है कि रसूले करीम (ﷺ) हमारी सफ़ों को इस तरह सीधा कराते, गोया उसके साथ तीर को सीधा किया जायेगा। यहाँ तक कि आपको इत्मीनान हो गया कि हमने इस मसले को आपसे खूब समझ लिया है। एक दिन आप मुसल्ला पर तशरीफ़ लाये और एक आदमी को देखा कि उसका सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ है। आपने फ़र्माया, अल्लाह के बन्दों! अपनी सफ़ों को बराबर कर लो वर्ना अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बाहमी तौर पर इख़्तिलाफ़ डाल देगा। बुख़ारी शरीफ़ में यूँ कि अपनी सफ़ों को बिल्कुल बराबर कर लिया करो। वर्ना तुम्हारे चेहरों में आपस में अल्लाह मुख़ालफ़त डाल देगा और अहमद और अबू दाऊद की रिवायत में है मैंने देखा कि हर नमाज़ी अपने साथी के कन्धे से कन्धा और क़दम से क़दम और टख़ने से टख़ना मिलाया करता था।

(734) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि अबुज़्ज़िनाद ने मुझसे बयान किया अअ़रज के वास्ते से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इमाम इसलिए है कि उसकी पैरवी की जाए, इसलिए जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो। जब वो रुकूअ़ करे तो तुम भी रुकूअ़ करो और जब वो समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम रब्बना व लकल हम्द कहो और जब वो सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम सब भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।

(राजेअ़ : 722)

٧٣٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا، وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا أَجْمَعُونَ)). [راجع: ٧٢٢]

तश्रीह : इस बारे में भी क़दरे इख़्तिलाफ़ है बेहतर यही है कि इमाम व मुक़्तदी दोनों **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** कहें और फिर दोनों **रब्बना व लकल हम्द** कहें। हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी हदीषे अबू हुरैरह (रज़ि.) **'षुम्मा यक़ूलु समिअ़ल्लाहु लिनन हमिदहू हीन यर्फ़उ सुल्बहू मिनर्रक्अति षुम्मा यक़ूलु व हुम क़ाइमुन रब्बना व लकल हम्द'** के तहत फ़र्माते हैं।

'रब्बना लकल हम्दु बिहज़्फ़िल्वावि व फ़ी रिवायतिन बिइष्बातिहा व क़द तक़द्दम अन्नर्रिवायत बिषुबूतिल वावि अर्जहू व हिय आतिफ़तुन अ़ला मुक़द्दरिन अय रब्बना अतअ़नाक व हमदनाक व लकल हम्दु व क़ील ज़ाइदतुन क़ालल अस्मई सअलतु अबा अम्रिन मिन्हा फ़क़ाल ज़ाइदतुन तक़ूलुल अ़रबु यअ़नी हाज़ा फ़यक़ूलुल मुख़ातबु नअ़म व हुव लक बिदिरहमिन फ़ल्वावु ज़ाइदतुन व क़ील हिय वावुल हालि क़ालहुब्नुल अषीर व ज़अ़अफ़ मा अदाहू व फ़ीहि अन्नत्तस्मीअ़ ज़िक्रुन्नुहूज़ि वर्रफ़्इ वत्तहमीदु ज़िक्रुल इअ़तिदालि वस्तुदिल्ल बिही अ़ला अन्नहू युशरिउल जम्अ बैनत्तस्मीइ वत्तहमीदि लिकुल्लि मुस़ल्लिन मिन इमामिन व मुन्फ़रिदिन व मुतमिन इज़ हुव हिक़ायतु लिमुतलक़ि सलातिही ﷺ' (मिर्आतुल मफ़ातीह जि: 1/स:559) **रब्बना लकद हम्द** हज़्फ़े वाव के साथ और बाज़ रिवायात में **इष्बाते वाव** के साथ मरवी है और तरजीह **इष्बाते वाव** को ही है जो **वावे–अत्फ़** है और मअ़तूफ़ अलैह मुक़द्दर है। यानी ऐ रब हमारे! हमने तेरी इताअ़त की, तेरी ता'रीफ़ की और ता' रीफ़ तेरे ही लिए है। बाज़ लोगों ने अ़रब के मुहावरे के मुताबिक़ इसे **वावे ज़ाइद** भी कहा है। बाज़ ने वाव हाल के लिए माना है, इस हदीष अबू हुरैरह (रज़ि.) से मा'लूम हुआ कि **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** कहना, ये रुकूअ़ में झुकने और इससे सर उठाने का ज़िक्र है और **रब्बना व लकल हम्द** कहना ये खड़े होकर ए'तिदाल पर आ जाने के वक़्त का ज़िक्र है। इसीलिए मशरुअ़ है कि इमाम हो या मुक़्तदी या मुनफ़रिद सब ही **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** फिर **रब्बना व लकल हम्द** कहें। इसलिये कि हज़रत (ﷺ) की नमाज़ इसी तरह नक़्ल की गई है और आपका इर्शाद है कि तुम उसी तरह नमाज़ पढ़ो जैसे तुमने मुझको पढ़ते हुए देखा है।

बाब तक्बीरे तह्रीमा में नमाज़ शुरू करते ही बराबर दोनों हाथों का (कँधों या कानों तक) उठाना

٨٣- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي التَّكْبِيرَةِ الأُولَى مَعَ الافْتِتَاحِ سَوَاءً

(735) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़ुह्री से, उन्होंने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने बाप (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूलल्लाह नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने दोनों

٧٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ: (أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ

M-09825696131

يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلاَةَ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)). وَكَانَ لاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

[أطرافه في : ٧٣٦، ٧٣٨، ٧٣٩].

हाथों को मोंढों तक उठाते, उसी तरह जब रुकूअ के लिए अल्लाहु अकबर कहते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते तो दोनों हाथ भी उठाते और रुकूअ से सर मुबारक उठाते हुए समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द कहते थे। सज्दे में जाते वक़्त रफ़उल यदैन नहीं करते थे।

(दीगर मक़ाम : 736, 738, 739)

٨٤- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا كَبَّرَ، وَإِذَا رَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ

बाब 84 : रफ़उल यदैन तक्बीरे तहरीमा के वक़्त, रुकूअ में जाते और रुकूअ से सर उठाते वक़्त (सुन्नत है)

٧٣٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ فِي الصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ، وَيَفْعَلُ ذَلِكَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

[راجع: ٧٣٥]

(736) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी। कहा कि हमको यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने बतलाया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े हुए तो तक्बीरे तहरीमा के वक़्त आपने रफ़उल यदैन किया। आपके दोनों हाथ उस वक़्त मोंढों तक उठे और उसी तरह जब आप रुकूअ के लिए तक्बीर कहते उस वक़्त भी रफ़उल यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते उस वक़्त भी करते। उस वक़्त आप कहते समिअल्लाहु लिमन हमिदह। अलबत्ता सज्दे में आप रफ़उल यदैन नहीं करते थे। (राजेअ : 735)

٧٣٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ: أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ

(737) हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह त्तिहान ने बयान किया ख़ालिद हुज़्ज़ाअ से। उन्होंने अबू क़िलाबा से कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिष़ सहाबी को देखा कि जब वो नमाज़ शुरू करते तो तक्बीरे तहरीमा के साथ रफ़उल यदैन करते, फिर जब रुकूअ में जाते तो उस वक़्त भी रफ़उल यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते तब भी करते और उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) भी इसी

M-09825696131

तरह किया करते थे।

اللهِ ﷺ صَنَعَ هَكَذَا.

बाब 85 : हाथों को कहाँ तक उठाना चाहिए

٨٥- بَابُ إِلَى أَيْنَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ؟

और अबू हुमैद सअ़दी (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने दोनों हाथों को मोंढों तक उठाया

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ فِي أَصْحَابِهِ: ((رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ)).

(738) हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि आप नमाज़ तक्बीरे तहरीमा से शुरू करते और तक्बीर कहते वक़्त अपने दोनों हाथों को मोंढों तक उठा कर ले जाते और जब रुकूअ के लिये तक्बीर कहते तब भी उसी तरह करते और जब समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहते तब भी उसी तरह करते और रब्बना व लकल हम्द कहते। सज्दा करते वक़्त या सज्दा से सर उठाते वक़्त इस तरह रफ़ड़ल यदैन नहीं करते थे।

(राजेअ़ : 735)

٧٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلاَةِ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ، وَإِذَا قَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) فَعَلَ مِثْلَهُ وَقَالَ: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلاَ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ.

[راجع: ٧٣٥]

बाब 86 : (चार रकअ़त नमाज़ में) क़अ़दा ऊला से उठने के बाद रफ़इ़ल यदैन करना

٨٦- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ

(739) हमसे अ़याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा कि हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने नाफ़ेअ से बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) जब नमाज़ में दाख़िल होते तो पहले तक्बीरे तहरीमा कहते और साथ ही रफ़इ़ल यदैन करते। इसी तरह जब वो रुकूअ़ करते तब और जब समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहते तब भी दोनों हाथों को उठाते और जब क़अ़द-ए-ऊला से उठते तब भी रफ़इ़ल यदैन करते। आपने इस काम को नबी करीम (ﷺ) तक पहुँचाया। (कि आँहज़रत ﷺ इसी तरह नमाज़ पढ़ा करते थे) (राजेअ़ : 735)

٧٣٩- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ: (أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلاَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ. وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللهِ ﷺ).

[راجع: ٧٣٥]

तश्रीह : तकबीरे तहरीमा के वक़्त और रुकूअ में जाते और रुकूअ से सर उठाते वक़्त और आख़री रकअ़त के

M-09825696131

बाब 87 : नमाज़ में दायाँ हाथ बाएँ पर रखना

٨٧- بَابُ وَضْعِ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فِي الصَّلاَةِ

(740) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़नी ने बयान किया इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अबू हाज़िम बिन दीनार से, उन्होंने सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से कि लोगों को हुक्म दिया जाता था कि नमाज़ में दायाँ हाथ बाईं कलाई पर रखें। अबू हाज़िम बिन दीनार ने बयान किया कि मुझे अच्छी तरह याद है कि आप उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) तक पहुँचाते थे। इस्माईल बिन अबी उवैस ने कहा ये बात आँहज़रत (ﷺ) तक पहुँचाई जाती थी यूँ नहीं कहा कि पहुँचाते थे।

٧٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُونَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ذِرَاعِهِ الْيُسْرَى فِي الصَّلاَةِ. قَالَ أَبُو حَازِمٍ لاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ يَنْمِي ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ إِسْمَاعِيْلُ: ((يُنْمَى ذَلِكَ)) وَلَمْ يَقُلْ ((يَنْمِي)).

तश्रीह़ : शैख़ुल ह़दीष़ ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं, **'लम यज़्कुर सहलुब्नु सअ़दिन फ़ी हदीषिही महल्ल वज़्इल्यदैनि मिनल जसद्दि व हुव इन्दना अलस्स़दरि लिमा वरद फ़ी ज़ालिक मिन अहादीष़ स़रीहतिन क़विय्यतिन फ़मिन्हा हदीषु वाइलिब्नि हुज्र क़ाल स़ल्लैतु मअन्नबिय्यि ﷺ फ़वुज़ूअ यदहुल्युम्ना अ़ला यदिहिल्युस्रा अ़ला स़दरिही अख़्रजहुब्नु ख़ुज़ैमत फ़ी स़ह़ीहिही ज़करहुल्हाफ़िज़ु बुलूग़ुल्मरामि वद्दिरायति वत्तल्ख़ीस़ि व फ़तहिल बारी वन्नववी फ़िल्ख़ुलास़ति व शर्हिल्मुहज़्ज़बि व शर्हि मुस्लिम लिल इहतिजाजि बिही अ़ला मा ज़हबत इलैहिश्शाफ़िइय्यतु मिन वज़्इल्यदैनि अलस्स़दरि व ज़िक्रुहुमा हाज़ल हदीष़ फ़ी मअ़रज़िल इहतिजाजि बिही सुकूतुहुमा अनिल कलामि फ़ीहि यदुल्लु अ़ला अन्न हदीष़ वाइलिन हाज़ाइन्दहुमा स़ह़ीहुन औ हसनुन क़ाबिलुन लिल्इहतिजाजि अल्ख़'** (मिर्आतुल मफ़ातीह़)

यानी ह़ज़रत सहल बिन सअ़द ने इस ह़दीष़ में हाथों के बाँधने की जगह का ज़िक्र नहीं किया और वो हमारे नज़दीक सीना है। जैसा कि इस बारे में कई अह़ादीषे क़वी और स़रीह़ मौजूद हैं। जिनमें एक ह़दीष़ वाइल बिन हुज्र की है। वो कहते हैं कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ी। आपने अपना दायाँ, हाथ बाएँ के ऊपर बाँधा और उनको सीने पर रखा। इस रिवायत को मुह़द्दिष़ इब्ने ख़ुज़ैमा ने अपनी स़ह़ीह़ में नक़ल किया है और ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने अपनी किताब बुलूग़ुल मराम और दिराया और तल्ख़ीस़ और फ़त्हुल बारी मे ज़िक्र फ़र्माया है। और इमाम नववी (रह़) ने अपनी किताब ख़ुलास़ा और शरह़े मुहज़्ज़ब और शरह़े मुस्लिम में ज़िक्र किया है और शाफ़िय्या ने इसी से दलील पकड़ी है कि हाथों को सीने पर बाँधना चाहिए। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर और अ़ल्लामा नववी (रह़) ने इस बारे में ह़दीष़ से दलील ली है और इस ह़दीष़ की सनद में उन्होंने कोई कलाम नहीं किया, लिहाज़ा ये ह़दीष़ उनके नज़दीक स़ह़ीह़ या ह़सन हुज्जत पकड़ने के क़ाबिल है।

इस बारे में दूसरी दलील वो ह़दीष़ है जिसे इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नदे अह़मद में रिवायत किया है। चुनाँचे फ़र्माते हैं, **'हद्दष़ना यह़्यब्नु सइदिन अन सुफ़्यान हद्दषना सम्माक अ़ न क़बीसा इब्नि हल्ब अ़न अबीहि क़ाल राइतु रसूलल्लाहि ﷺ यन्स़रिफ़ अन यमीनिही व अन यसरिही व राइतुहू यज़उ हाज़िही अ़ला स़दरिही व वस़फ़ यह़्या अल्युम्ना अ़लल युस्रा फ़ौक़ल्मफ़्स़ लि व रुवातु हाज़ल हदीषि कुल्लुहुम षिक़ातुन व इस्नादुहू मुत्तसिलुन'** (तुह़फ़तुल अह़्वुज़ी पेज नं. 216)

यानी हमसे यह़्या बिन सईद ने सुफ़्यान षौरी से बयान किया। वो कहते हैं कि हमसे सिमाक ने क़ुबैसा इब्ने वहब से बयान किया। वो अपने बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को देखा। आप अपने दाएँ और बाएँ जानिब सलाम

يَفْتَتِنُوا فِي صَلاَتِهِمْ، فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَتِمُّوا صَلاَتَكُمْ، فَأَرْخَى السِّتْرَ، وَتُوُفِّيَ مِنْ آخِرِ ذَلِكَ الْيَوْمَ. [راجع: ٦٨٠]

नमाज़ पूरी कर लो और पर्दा डाल लिया। उसी दिन चाश्त को आपने वफ़ात पाई।

M-09825696131

(राजेअ़ : 680)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा यूँ निकला कि सहाबा ने ऐन नमाज़ में इल्तिफ़ात किया क्योंकि अगर वो इल्तिफ़ात न करते तो आपका पर्दा उठाना क्यूँकर देखते और उनका इशारा कैसे समझते। बल्कि ख़ुशी के मारे हाल ये हुआ कि क़रीब था वो नमाज़ को भूल जाएँ और आँहज़रत (ﷺ) के दीदार के लिए दौड़ें। इसी हालत को उन लफ़्ज़ों से ता'बीर किया गया कि मुसलमानों ने ये क़स्द (इरादा) किया कि वो फ़ित्ने में पड़ जाएँ। बहरहाल ये मख़्सूस हालात हैं। वरना आम तौर पर नमाज़ में इल्तिफ़ात जाइज़ नहीं जैसा कि हदीषे साबिक़ा में गुज़रा। क़ुर्आन मजीद में इर्शादे बारी है **वक़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन** (अल् बक़र : 238) यानी नमाज़ में अल्लाह के लिए दिली तवज्जह के साथ फ़र्मांबरदार बन्दे बनकर खड़े हुआ करो। नमाज़ की रूह यही है कि अल्लाह को हाज़िर नाज़िर यक़ीन करके उससे दिल लगाया जाए। आयते शरीफ़ा **अल्लज़ीन हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन** (अल् मोमिनून : 2) का यही तक़ाज़ा है।

٩٥- بَابُ وُجُوبِ الْقِرَاءَةِ لِلإِمَامِ وَالْمَأْمُومِ فِي الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ، وَمَا يُجْهَرُ فِيهَا وَمَا يُخَافَتُ

बाब 95 इमाम और मुक़्तदी के लिए क़िरअत का वाजिब होना, हज़र और सफ़र हर हालत में, सिर्री और जह्री सब नमाज़ों में

क़िरअत से सूरह फ़ातिहा का पढ़ना मुराद है। जैसा कि अगली हदीस में आ रही है कि सूरह फ़ातिहा पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती

٧٥٥- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: شَكَا أَهْلُ الْكُوفَةِ سَعْدًا إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَعَزَلَهُ، وَاسْتَعْمَلَ عَلَيْهِمْ عَمَّارًا، فَشَكَوا حَتَّى ذَكَرُوا أَنَّهُ لاَ يُحْسِنُ يُصَلِّي. فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَقَالَ: يَا أَبَا إِسْحَاقَ إِنَّ هَؤُلاَءِ يَزْعُمُونَ أَنَّكَ لاَ تُحْسِنُ تُصَلِّي. قَالَ أَمَّا أَنَا وَاللهِ فَإِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي بِهِمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا أَخْرِمُ عَنْهَا، أُصَلِّي صَلاَةَ الْعِشَاءِ فَأَرْكُدُ فِي الأُولَيَيْنِ وَأُخِفُّ فِي الأُخْرَيَيْنِ. قَالَ : ذَاكَ الظَّنُّ بِكَ يَا أَبَا إِسْحَاقَ. فَأَرْسَلَ مَعَهُ رَجُلاً - أَوْ رِجَالاً -

(755) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अवाना वज़्ज़ाह यश्करी ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने जाबिर बिन समुरा (रज़ि.) से बयान किया, कहा कि अहले कूफ़ा ने हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) की हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) से शिकायत की। इसलिए हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उनको अलग करके हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) को कूफ़ा का हाकिम बनाया, तो कूफ़ा वालों ने सअ़द के बारे में यहाँ तक कह दिया कि वो तो अच्छी तरह नमाज़ भी नहीं पढ़ा सकते। चुनाँचे हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उनको बुला भेजा। आपने उनसे पूछा कि ऐ अबू इस्हाक़! इन कूफ़ावालों का ख़्याल है कि तुम अच्छी तरह नमाज़ नहीं पढ़ा सकते हो। इस पर आपने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! मैं तो इन्हें नबी करीम (ﷺ) ही की तरह नमाज़ पढ़ाता था, उसमें कोताही नहीं करता इशा की नमाज़ पढ़ाता तो उसकी पहली दो रकअ़त में (क़िरअत) लम्बी करता और दूसरी दो रकअ़तें हल्की पढ़ाता। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अबू इस्हाक़! मुझको तुमसे उम्मीद भी यही थी। फिर आपने हज़रत सअ़द (रज़ि.) के साथ एक या कई

बाब 95 इमाम और मुक़्तदी के लिए क़िरअत का वाजिब होना, हज़र और सफ़र हर हालत में, सिर्री और जह्री सब नमाज़ों में

٩٥- بَابُ وُجُوبِ الْقِرَاءَةِ لِلإِمَامِ وَالْمَأْمُومِ فِي الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ، وَمَا يُجْهَرُ فِيهَا وَمَا يُخَافَتُ

क़िरअत से सूरह फ़ातिहा का पढ़ना मुराद है। जैसा कि अगली हदीस में आ रही है कि सूरह फ़ातिहा पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती

M-09825696131

(756) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने बयान किया मह्मूद बिन रबीअ़ा से, उन्होंने ह़ज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स़ ने सूरह फ़ातिह़ा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं हुई।

٧٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह़ : इमाम के पीछे जहरी और सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना एक ऐसा मसला है जिसके षुबूत बहुत सी अह़ादीषे स़ह़ीह़ा से ष़ाबित है। बावजूद इस ह़क़ीक़त के फिर ये एक मअ़रका आरा बह्ष़ चली आ रही है। जिस पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं। जो ह़ज़रात इसके क़ाइल नहीं है। उनमें कुछ का ग़ुलू तो यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि वो इसे ह़रामे मुत्लक़ क़रार देते हैं और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने वालों के बारे में यहाँ तक कह जाते हैं कि क़यामत के दिन उनके मुँह मे आग के अंगारे भरे जाएँगे। नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन्हु। इसीलिए मुनासिब मा'लूम हुआ कि इस मसले की कुछ वज़ाह़त कर दी जाए ताकि क़ाइलीन और मानेईन के दरम्यान निफ़ाक़ की ख़लीज़ कुछ न कुछ कम हो सके।

यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) जो ह़दीष़ लाए हैं उसके ज़ेल में ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारकपुरी मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं,

'व सुम्मियत फ़ातिहतुल किताबि लिअन्नहू युब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मुसाहिफ़ि व युब्दउ बिक़िरअतिहा फ़िस्स़लाति व फ़ातिहतु कुल्लि शैइन मब्दउहूल्लज़ी युफ़्तहु बिही मा बअ़दहू इफ़्ततह फ़ुलानुन कज़ा इब्तदअ़ बिही क़ालब्नु ज़रीर फ़ी तफ़्सीरिही (जिल्द 1 स. 25) व सुम्मियत फ़ातितुल किताबि लिअन्नहा युफ़्ततहु बिकिताबतिहल मुसाहिफ़ व युक़्रा बिहा फ़िस्स़लाति फ़हिय फ़वातिहु लिमा यतलूहा मिन सुवरिल क़ुर्आनि फिल किताबि वल किराति व सुम्मियत उम्मुल क़ुर्आनि लितक़हुमिहा अ़ला सुवरि साइरिल क़ुर्आनि ग़ैरहा व तअख़्ख़ुरा मा सिवाहा फ़िल क़िराति वल किताबति अल्ख़' (अल् मिर्आत जिल्द नं. पेज नं. 583)

ख़ुलास़ा इस इबारत का ये कि सूरह अल्ह़म्दु शरीफ़ का नाम फ़ातिह़ातुल किताब इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन मजीद की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में क़िरात की इब्तिदा भी इसी से की जाती है। अ़ल्लामा इब्ने जरीर ने भी अपनी तफ़्सीर में यही लिखा है। इसको उम्मुल क़ुर्आन इसलिए कहा गया कि किताबत और क़िरात मे ये इसकी तमाम सूरतों पर मुक़द्दम है और सारी सूरतें इसके बाद हैं। ये ह़दीष़ इस अम्र पर दलील है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिह़ा फ़र्ज़ है और ये नमाज़ के अरकान में से है। जो इसे न पढ़े उसकी नमाज़ स़ह़ीह़ न होगी। शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देह्लवी ने भी अपनी मशहूर किताब **ह़ुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा** (जिल्द 2 पेज नं. 4) पर इसे नमाज़ का अहम रुक्न तस्लीम किया है। इसलिए कि ये ह़दीष़ आम है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो चाहे नफ़्ल, और वो शख़्स़ इमाम हो या मुक़्तदी, या अकेला। यानी किसी शख़्स़ की कोई नमाज़ भी बग़ैर फ़ातिह़ा पढ़े नहीं होगी।

चुनाँचे मशहूर शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रत अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह़) शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 2 पेज नं. 439 में इस ह़दीष़ की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं। **'अय फ़ी कुल्लि रकअ़तिन मुन्फ़रिदन औ इमामन औ मामूमन सवाउन असर्रल्इमामु औ जहर'** यानी इस ह़दीष़ का मक़्स़द ये है कि हर रकअ़त में (हर नमाज़ी को) ख़्वाह अकेला हो या इमाम, या मुक़्तदी, ख़्वाह आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना ज़रूरी है।

नीज़ इसी त़रह़ अ़ल्लामा किरमानी (रह़) फ़र्माते हैं,

'व फ़िल हदीष़ि (अय हदीषु उ़बादत) दलीलुन अ़ला अन्न क़िरातल्फ़ातिहति वाजिबतुन अलल इमामि वल मुन्फ़रिदि वल मामूमि फ़िस्स़लवाति कुल्लिहा' (उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द नं. 3 पेज नं. 63) यानी ह़ज़रत उ़बादा (रज़ि) की ये ह़दीष़ इस अम्र पर स़ाफ़ दलील है कि सूरह फ़ातिह़ा का पढ़ना इमाम और अकेले और मुक़्तदी सबके लिए तमाम नमाज़ों मे वाजिब है। नीज़ उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 3 पेज नं. 64 में लिखते हैं। ह़न्फ़ियों के मशहूर शारेह़

M-09825696131

(756) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने बयान किया मह़मूद बिन रबीअ़ा से, उन्होंने ह़ज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स़ ने सूरह फ़ातिह़ा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं हुई।

٧٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيْعِ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह़ : इमाम के पीछे जहरी और सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना एक ऐसा मसला है जिसके षुबूत बहुत सी अह़ादीषे स़ह़ीह़ा से ष़ाबित है। बावजूद इस ह़क़ीक़त के फिर ये एक मअ़रका आरा बह़ष़ चली आ रही है। जिस पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं। जो ह़ज़रात इसके क़ाइल नहीं है। उनमें कुछ का ग़ुलू तो यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि वो इसे ह़रामे मुत्लक़ क़रार देते हैं और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने वालों के बारे में यहाँ तक कह जाते हैं कि क़यामत के दिन उनके मुँह मे आग के अंगारे भरे जाएँगे। नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन्हु। इसीलिए मुनासिब मा'लूम हुआ कि इस मसले की कुछ वज़ाह़त कर दी जाए ताकि क़ाइलीन और मानेईन के दरम्यान निफ़ाक़ की ख़लीज़ कुछ न कुछ कम हो सके।

यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) जो ह़दीष़ लाए हैं उसके ज़ेल में ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारकपुरी मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं,

'व सुम्मियत फ़ातिहतुल किताबि लिअन्नहू युब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मुसाहिफ़ि व युब्दउ बिक़िरअतिहा फ़िस्स़लाति व फ़ातिहतु कुल्लि शैइन मब्दउहूल्लज़ी युफ़्तहु बिही मा बअ़दहू इफ़्ततह फ़ुलानुन कज़ा इब्तदअ बिही क़ालब्नु ज़रीर फ़ी तफ़्सीरिही (जिल्द 1 स. 25) व सुम्मियत फ़ातितुल किताबि लिअन्नहा युफ़्ततहु बिकिताबतिहल मुसाहिफ़ व युक़्रा बिहा फ़िस्स़लाति फ़हिय फ़वातिहु लिमा यतलूहा मिन सुवरिल क़ुर्आनि फिल किताबि वल किराति व सुम्मियत उम्मुल कुआनि लितक़द्दुमिहा अ़ला सुवरि साइरिल क़ुर्आनि ग़ैरहा व तअख़्ख़ुरा मा सिवाहा फ़िल क़िराति वल किताबति अल्ख़' (अल् मिर्आत जिल्द नं. पेज नं. 583)

ख़ुलास़ा इस इ़बारत का ये कि सूरह अल्ह़म्दु शरीफ़ का नाम फ़ातिह़ातुल किताब इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन मजीद की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में क़िरात की इब्तिदा भी इसी से की जाती है। अ़ल्लामा इब्ने जरीर ने भी अपनी तफ़्सीर में यही लिखा है। इसको उम्मुल क़ुर्आन इसलिए कहा गया कि किताबत और क़िरात मे ये इसकी तमाम सूरतों पर मुक़द्दम है और सारी सूरतें इसके बाद हैं। ये ह़दीष़ इस अम्र पर दलील है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिह़ा फ़र्ज़ है और ये नमाज़ के अरकान में से है। जो इसे न पढ़े उसकी नमाज़ स़ह़ीह़ न होगी। शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देह्लवी ने भी अपनी मशहूर किताब **ह़ुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा** (जिल्द 2 पेज नं. 4) पर इसे नमाज़ का अहम रुक्न तस्लीम किया है। इसलिए कि ये ह़दीष़ आ़म है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो चाहे नफ़्ल, और वो शख़्स़ इमाम हो या मुक़्तदी, या अकेला। यानी किसी शख़्स़ की कोई नमाज़ भी बग़ैर फ़ातिह़ा पढ़े नहीं होगी।

चुनाँचे मशहूर शारेहे बुख़ारी ह़ज़रत अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह़) शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 2 पेज नं. 439 में इस ह़दीष़ की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं। **'अय फ़ी कुल्लि रकअ़तिन मुन्फ़रिदन औ इमामन औ मामूमन सवाउन असर्रल्इमामु औ जहर'** यानी इस ह़दीष़ का मक़्स़द ये है कि हर रकअ़त में (हर नमाज़ी को) ख़्वाह अकेला हो या इमाम, या मुक़्तदी, ख़्वाह आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना ज़रूरी है।

नीज़ इसी त़रह़ अ़ल्लामा किरमानी (रह़) फ़र्माते हैं,

'व फ़िल हदीष़ि (अय हदीषु उ़बादत) दलीलुन अ़ला अन्न क़िरातल्फ़ातिहति वाजिबतुन अलल इमामि वल मुन्फ़रिदि वल मामूमि फ़िस्स़लवाति कुल्लिहा' (उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द नं. 3 पेज नं. 63) यानी ह़ज़रत उ़बादा (रज़ि) की ये ह़दीष़ इस अम्र पर स़ाफ़ दलील है कि सूरह फ़ातिह़ा का पढ़ना इमाम और अकेले और मुक़्तदी सबके लिए तमाम नमाज़ों मे वाजिब है। नीज़ उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 3 पेज नं. 64 में लिखते हैं। ह़न्फ़ियों के मशहूर शारेह़

M-09825696131

ख़बर दी। आप (ﷺ) ने उनको बुलाकर पूछा कि ऐ फ़लाँ! तुम्हारे साथी जिस तरह कहते हैं इस पर अमल करने से तुमको कौनसी रुकावट है और हर रकअत में इस सूरह को ज़रूरी क़रार देने का सबब क्या है। उन्होंने कहा कि हुज़ूर! मैं इस सूरह से मुहब्बत करता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस सूरह की मुहब्बत तुम्हें जन्नत में ले जाएगी।

أَنْ يَؤُمَّهُمْ غَيْرُهُ- فَلَمَّا أَتَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرُوهُ الْخَبَرَ، فَقَالَ: ((يَا فُلاَنُ، مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَفْعَلَ مَا يَأْمُرُكَ بِهِ أَصْحَابُكَ، وَمَا يَحْمِلُكَ عَلَى لُزُومِ هَذِهِ السُّورَةِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ؟)) فَقَالَ: إِنِّي أُحِبُّهَا. قَالَ: ((حُبُّكَ إِيَّاهَا أَدْخَلَكَ الْجَنَّةَ)).

आपने उनके इस फ़ेअ़ल पर सुकूत फ़र्माया बल्कि तहसीन फ़र्माई। ऐसी अहादीष़ को तक़रीरी कहा गया है।

(775) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबुल वाइल शक़ीक़ बिन मुस्लिम से सुना कि एक शख़्स अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मैंने रात एक रकअ़त में मुफ़स्सल की कोई सूरत पढ़ी। आपने फ़र्माया कि क्या इस तरह (जल्दी-जल्दी) पढ़ी जैसे शे'र पढ़े जाते हैं। मैं उन हम-मा'नी सूरतों को जानता हूँ जिन्हें नबी करीम (ﷺ) एक साथ मिलाकर पढ़ते थे। आपने मुफ़स्सल की बीस सूरतों का ज़िक्र किया। हर रकअ़त के लिए दो-दो सूरतें।

(दीगर मक़ाम : 4996, 5043)

٧٧٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ مَسْعُودٍ فَقَالَ: قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ اللَّيْلَةَ فِي رَكْعَةٍ. فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ الشِّعْرِ. لَقَدْ عَرَفْتُ النَّظَائِرَ الَّتِي كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرُنُ بَيْنَهُنَّ. فَذَكَرَ عِشْرِينَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ، سُورَتَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ.

[طرفاه في : ٤٩٩٦، ٥٠٤٣].

बाब 107 : पिछली दो रकआत में सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़ना

١٠٧- بَابُ يَقْرَأُ فِي الأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

(776) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन अबी कष़ीर के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से, उन्होंने अपने बाप अबू क़तादा (रज़ि.) से कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की पहली दो रकअ़तों में सूरह फ़ातिहा और दो सूरतें पढ़ते थे और आख़िरी दो रकअ़तों में सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़ते। कभी-कभी हमें एक आयत सुना भी दिया करते थे और पहली रकअ़त में क़िरअत दूसरी रकअ़त से ज़्यादा करते थे। अ़स्र और सुबह की नमाज़ों मे भी आपका यही मअ़मूल था (हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है)

٧٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ فِي الأُولَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ، وَفِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُخْرَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ، وَيُسْمِعُنَا الآيَةَ، وَيُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى مَا لاَ يُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ، وَهَكَذَا فِي الْعَصْرِ، وَهَكَذَا فِي

M-09825696131

लम्बी करते थे और दूसरी रकअ़त में हल्की। सुबह की नमाज़ में भी आप उसी तरह करते थे। (राजेअ़ : 759)

وَيُقَصِّرُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ، وَيَفْعَلُ ذَلِكَ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ. [راجع: ٧٥٩]

बाब 111 : (जहरी नमाज़ों में) इमाम का बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना

١١١- بَابُ جَهْرِ الإِمَامِ بِالتَّأْمِينِ

मस्नून है और अ़त्ता बिन अबी रबाह ने कहा कि आमीन एक दुआ है और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) और उन लोगों ने जो आपके पीछे (नमाज़ पढ़ रहे) थे, इस ज़ोर से आमीन कही कि मस्जिद गूंज उठी और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) इमाम से कह दिया करते थे कि आमीन से हमें महरूम न रखना और नाफ़ेअ़ ने कहा कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) आमीन कभी नहीं छोड़ते थे और लोगों को उसकी तर्ग़ीब भी दिया करते थे। मैंने आपसे उसके बारे में एक हदीष़ भी सुनी थी।

وَقَالَ عَطَاءٌ: آمِينَ دُعَاءٌ. أَمَّنَ ابْنُ الزُّبَيْرِ وَمَنْ وَرَاءَهُ حَتَّى إِنَّ لِلْمَسْجِدِ لَلَجَّةً. وَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُنَادِي الإِمَامَ: لاَ تَفُتْنِي بِآمِينَ. وَقَالَ نَافِعٌ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ لاَ يَدَعُهُ، وَيَحُضُّهُمْ، وَسَمِعْتُ مِنْهُ فِي ذَلِكَ خَيْرًا.

(780) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान के वास्ते से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसकी आमीन मलाइका की आमीन के साथ हो गई उसके तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएँगे। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आमीन कहते थे।

(दीगर मक़ाम : 2402)

٧٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَمَّنَ الإِمَامُ فَأَمِّنُوا، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((آمِينَ)).

[طرفه في : ٢٤٠٢].

बाब 112 : आमीन कहने की फ़ज़ीलत

١١٢- بَابُ فَضْلِ التَّأْمِينِ

(781) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने अबुज़्ज़िनाद से ख़बर दी, उन्होंने अअ़रज से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब कोई तुममें से आमीन कहे और फ़रिश्तों ने भी उसी वक़्त आसमान पर आमीन कही। इस तरह एक की आमीन दूसरे की आमीन के साथ मिल गई तो उसके

٧٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ آمِينَ، وَقَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ فِي السَّمَاءِ آمِينَ، فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ

पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। M-09825696131 ذَنْبِه)).

अलहम्दु शरीफ़ के ख़ात्मे पर फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं। सिर्री में पस्त आवाज़ से और जहरी में बुलन्द आवाज़ से, पस जिस नमाज़ी की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल गई, उसका बेड़ा पार हो गया। अल्लाह पाक हर मुसलमान का बेड़ा पार लगाए।

बाब 113 : मुक़्तदी का आमीन बुलन्द आवाज़ से कहना

١١٣ - بَابُ جَهْرِ الْمَأْمُومِ بِالتَّأْمِينِ

(782) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़नी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान के गुलाम सुमय से, उन्होंने अबू स़ालेह सम्मान से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन' कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसने फ़रिश्तों के साथ आमीन कही उसके पीछे के तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। सुमय के साथ इस ह़दीष़ को मुहम्मद बिन अ़म्र ने भी अबू सलमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया। और नुऐ़म मज्मर ने भी अबू हुरैरह (रज़ि .) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम : 4475)

٧٨٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّيْنَ﴾ فَقُولُوا: آمِيْنَ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَنُعَيْمٌ الْمُجْمِرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في : ٤٤٧٥].

मुक़्तदी इमाम की आमीन सुनकर आमीन कहेंगे, इसी से मुक़्तदियों के लिए आमीन बिल जहर का इ़ष्बात हुआ। बनज़रे इंस़ाफ़ मुत़ालआ़ करने वालों के लिए यही काफ़ी है। तअ़स्सुबे मसलकी का दुनिया में कोई इ़लाज नहीं।

तश्रीह : जहरी नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा के इख़्तिमाम पर इमाम और मुक़्तदियों के लिए बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना ये भी एक ऐसी बह़ष़ है जिस पर फ़रीक़ैन ने कितने ही स़फ़्ह़ात स्याह (कागज़ काले) कर डाले हैं । यही नहीं बल्कि इस पर बड़े—ब ड़े फ़सादात भी हो चुके हैं। मुह़तरम बिरादराने अह़नाफ़ ने कितनी मसाजिद से आमीन बिल जहर के आ़मिलीन को निकाल दिया, मारा-पीटा और मामला सरकारी अ़दालतों तक पहुँचा है। यही वजह हुई कि इस जंग को ख़त्म करने के लिए अहले ह़दीष़ ह़ज़रात ने अपनी मसाजिद अलग ता'मीर कीं और इस त़रह़ ये फ़साद कम हुआ। अगर ग़ौर किया जाए तो अ़क़्लन व नक़्लन ये झगड़ा हर्गिज़ न होना चाहिए था। लफ़्ज़े आमीन का मत़लब ये है कि ऐ अल्लाह! मैंने जो दुआएँ तुझसे की हैं उनको क़ुबूल फ़र्मा ले। ये लफ़्ज यहूद व नस़ारा में भी मुस्तअ़मल (प्रयुक्त Used) रहा और इस्लाम में भी इसे इस्ते'माल किया गया। जहरी नमाज़ों मे इसका ज़ोर से कहना कोई अम्रे क़बीह़ न था। मगर स़द अफ़सोस कि कुछ उ़लम—ए—सू ने राई को पहाड़ बना दिया। नतीजा ये हुआ कि मुसलमानों में सर फुटव्वल हुई और अ़र्से के लिये दिलों में काविश पैदा हो गई।

सय्यदना ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने यहाँ बाब मुनअ़क़िद करके और उसके तह़त अह़ादीष़ लाकर इस बहष़ का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी बहुत से लोग तफ़्सीलात का शौक़ रखते हैं। लिहाज़ा हम इस बारे में एक तफ़्सीली मक़ाला पेश कर रहे हैं जो मुत्तह़िदा (अखण्ड) भारत के एक ज़बरदस्त फ़ाज़िल उस्ताज़ ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह स़ाह़ब रोपड़ी (रह़) के ज़ोरे क़लम का नतीजा है। इसमें दलाइल के साथ साथ उन पर ए'तिराज़ाते वारिदा के भी काफ़ी शाफ़ी जवाबात दिये गये हैं। चुनाँचे ह़ज़रत मौलाना स़ाह़ब क़द्दस सिर्रुहु फ़र्माते हैं :

बुलन्द आवाज़ से आमीन कहने के बारे में अह़ादीष़ व आष़ार और उ़लमा-ए-अह़नाफ़ के फ़तावे

M-09825696131

अह़ादीष़ : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) फ़र्माते हैं, **'कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा तला ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन क़ाल आमीन ह़त्ता यस्मअ़ मंय्यलीहि मिनस्सफ़्फ़िल अव्वलि'** (अबू दाऊद पेज नं. 134 तबअ़ देहली)

तर्जुमा : रसूलुल्लाह (ﷺ) जब **ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन** पढ़ते तो आमीन कहते। यहाँ तक कि जो पहली सफ़ में आपके नज़दीक थे, वो सुन लेते।

इस ह़दीष़ पर ह़नफ़िया की त़रफ़ से दो ए'तिराज़ होते हैं,

एक ये कि इस ह़दीष़ की इस्नाद में बिश्र बिन राफ़ेअ़ अल ह़ारिष़ी अबुल अस्बात़ एक रावी है। इसके बारे में नस्बुर्राया जिल्द 1 पेज नं. 371 में अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी लिखते हैं, **'ज़अ़अफ़हुल् बुख़ारी वत्तिर्मिज़ी वन्नसइ व अह़मद वब्नु मईन वब्नु ह़िब्बान'** इसको इमाम बुख़ारी, तिर्मिज़ी, नसाई, अह़मद, इब्ने मुईन और इब्ने ह़िब्बान (रह़) ने ज़ईफ़ कहा है।

दूसरा ए'तिराज़ ये है कि एक रावी अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्मे अबू हुरैरह (रज़ि) है। जो बिश्र बिन राफ़ेअ़ का उस्ताज़ है, इसके बारे में ज़ेलई (रह़) लिखते हैं : कि उसका ह़ाल मा'लूम नहीं और बिश्र बिन राफ़ेअ़ के सिवा उससे किसी ने रिवायत नहीं की। यानी ये मज्हूलुल ऐ़न है, उसकी शख़्सियत का पता नहीं।

जवाब ए'तिराज़े अव्वल : ख़ुलाशा तज़हीबुल कमाल के पेज नं. 41 में बिश्र बिन राफ़ेअ़ के बारे में लिखा है, **वष़्षक़हू इब्नु मईन व इब्नु अदी व कालल बुख़ारी वला युताबउ अलैहि** यानी इब्ने मुईन और इब्ने अ़दी ने इसको षि़क़ा कहा है और इमाम बुख़ारी (रह़) ने कहा है। इसकी मुवाफ़क़त नहीं की जाती।

इससे मा'लूम हुआ कि कोई ज़ईफ़ कहता है और कोई षि़क़ा और ये भी मा'लूम हुआ कि ज़ईफ़ कहने वालों ने ज़ुअफ़ की वजह बयान नहीं की और ऐसी जरह़ को जरह़े मुब्हम कहते हैं और उसूल का क़ायदा है :

षि़क़ा कहने वालों के मुक़ाबले में ऐसी जरह़ का ए'तिबार नहीं। हाँ अगर वजह ज़ुअफ़ बयान कर दी जाती तो ऐसी जरह़ बेशक तअ़दील पर मुक़द्दम होती और ऐसी जरह़ को जरह़े मुफ़स्सर कहते हैं।

फिर इमाम बुख़ारी (रह़) का कहना कि इसकी मुवाफ़क़त नहीं की जाती। ये बहुत हल्की जरह़ है। ऐसे रावी की ह़दीष़ ह़सन दर्ज़े से नहीं गिरती। ग़ालिबन इसी लिए अबू दाऊद (रह़) और मुंज़री ने इस पर सुकूत किया है और इससे दूसरे ए'तिराज़ का जवाब भी निकल आया क्योंकि अबू दाऊद जिस ह़दीष़ पर सुकूत करते हैं। वो उनके नज़दीक अच्छी होती है और मज्हूलुल ऐ़न की रिवायत ज़ईफ़ होती है। पस अबू अ़ब्दुल्लाह मज्हुलुल ऐ़न न हुआ, वरना सुकूत न करते। अ़लावा उसके अ़ल्लामा ज़ेलई (रह़) को ग़लती लगी है, ये मज्हूल नहीं। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़) तक़्रीब में लिखते हैं। मक़्बूल यानी उसकी ह़दीष़ मोतबर है।

इमाम दारे क़ुत्नी (रह़) कहते हैं। इस ह़दीष़ की इस्नाद ह़सन है। मुस्तदरक ह़ाकिम में है कि ये ह़दीष़ बुख़ारी मुस्लिम की शर्त़ पर स़ह़ीह़ है। इमाम बैहक़ी कहते हैं। ह़सन स़ह़ीह़ है। (नैलुल औतार जिल्द 2 पेज नं. 117 त़बअ़ मिस्र)

तम्बीह : नस़बुर्राया जिल्द 1 पेज नं. 371 के ह़ाशिये में लिखा है कि इसकी इस्नाद में इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन अ़लअ़ला ज़ुबैदी ज़ईफ़ है।

मगर जो जरह़ मुफ़स्सर ष़ाबित नहीं हुई। इसलिए दारे क़ुत्नी ने इसको ह़सन कहा है और ह़ाकिम ने स़ह़ीह़ और बैहक़ी

M-09825696131

फ़र्मा रहे हैं।

ग़ालिबन उस ज़माने का वाक़िया है कि जब आप फ़ज्र में अ़ब्दुल मलिक पर क़ुनूत पढ़ते थे। अ़ब्दुल मलिक भी इब्ने ज़ुबैर (रज़ि) पर क़ुनूत पढ़ता था और जिस त़रह़ के ह़ालात इस ज़माने में थे उसमें मुबालग़ा और बेएह़तियात़ उ़मूमन हो जाया करती है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा 3 पेज नं. 135)

इस बेतुकी राय ज़नी पर अहले इंसाफ़ ख़ुद नज़र डाल सकेंगे कि ये कहाँ तक दुरुस्त है। अव्वल तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) का आमीन बिल जेहर कहना ख़ास़ नमाज़े फ़ज्र में किसी रिवायत में मज़्कूर नहीं है। हो सकता है कि इस वाक़िये का ता'ल्लुक़ मग़्रिब या इ़शा से भी हो। फिर अल्ह़म्दु शरीफ़ के ख़ात्मे पर आमीन बिल जेहर का अ़ब्दुल मलिक पर क़ुनूत पढ़ने से क्या ता'ल्लुक़? क़ुनूत का मह़ल दूसरा है फिर मुबालग़ा और बे एह़तियाती को ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) जैसे जलीलुल क़द्र स़ह़ाबी की त़रफ़ मन्सूब करना एक बड़ी जुर्अत है और भी इसी क़िस्म की बेतुकी बातें की जाती हैं। अल्लाह पाक ऐसे उ़लमा–ए–किराम को नेक हिदायत दे कि वो अम्रे ह़क़ को तस्लीम करने के लिए दिल खोलकर तैयार हों और बेजा तावीलात से काम लेकर आज के ता'लीमयाफ़्ता रोशन ख़्याल लोगों को हंसने का मौक़ा न दें **अल्लाहुम्म वफ़्फ़िक़्ना लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा, आमीन।**

बाब 114 : जब स़फ़ तक पहुँचने से पहले ही किसी ने रुकूअ़ कर लिया (तो उसके बारे में क्या हुक्म है?)

١١٤– بَابُ إِذَا رَكَعَ دُوْنَ الصَّفِّ

(783) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम बिन यह़्या ने ज़ियाद बिन ह़स्सान अ़अलम से बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत ह़सन (रह.) से, उन्होंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ (नमाज़ पढ़ने के लिए) गए, आप उस वक़्त रुकूअ़ में थे। इसलिए स़फ़ तक पहुँचने से पहले ही उन्होंने रुकूअ़ कर लिया, फिर इसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तुम्हारा शौक़ और ज़्यादा करे लेकिन दोबारा ऐसा न करना।

٧٨٣– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنِ الأَعْلَمِ – وَهُوَ زِيَادٌ – عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ : أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ رَاكِعٌ فَرَكَعَ قَبْلَ أَنْ يَصِلَ إِلَى الصَّفِّ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((زَادَكَ اللهُ حِرْصًا، وَلاَ تَعُدْ)).

तश्रीह़ : त़बरानी की रिवायत में यूँ है कि अबूबक्र उस वक़्त मस्जिद में पहुँचे कि नमाज़ की तक्बीर हो चुकी थी, ये दौड़े और त़ह़ावी की रिवायत में है कि दौड़ते हुए हांपने लगे, उन्होंने मारे जल्दी के स़फ़ में शरीक होने से पहले ही रुकूअ़ कर दिया। नमाज़ के बाद जब आँह़ज़रत (ﷺ) को ये ह़ाल मा'लूम हुआ तो आपने फ़र्माया कि आइन्दा ऐसा न करना।

कुछ अहले इ़ल्म ने इससे रुकूअ़ में आने वालों के लिए रकअ़त के हो जाने पर दलील पकड़ी है। औ़नुल मा'बूद शरह़े अबू दाऊद पेज नं. 332 में है, '**क़ालश्शौकानी फिन्नैलि लैस फ़ीहि मा यदुल्लु अ़ला मा ज़हबू इलैहि लिअन्नहू कमा लम यामुर्हु बिल आ़दति लम युन्क़ल अयज़न अन्नहू इअ़तद्द बिहा वद्दुआउ लहू बिल्हिर्सि ला यस्तल्ज़िमुल इअतिदादु बिहा लिअन्नल्कौन मअ़इमामि मामूरुन बिही सवाउन कानश्शैउल्लज़ी युदरिकुहुल्मूतिम मुअतद्दन बिही अम ला कमा फ़िल्हदीष़ इजाजिअतुम इलस़्स़लाति व नह़नु सुजूदुन फ़स्जुदू औ ला तउद्दूहा शैअन अ़ला अन्नन्नबिय्यु ﷺ क़द नहा अबा बक्रत अनिल्ऊदि इला मिष़्लि ज़ालिक वल्इहतिजाजु बिशैइन क़द नहा अन्हु ला यस़िह़्हु व क़द अजाब इब्नु हज्म फिल्मुहल्ला अ़न हदीष़ि अबी बक्रत फ़क़ाल अन्नहू ला हुज्जत लहुम फ़ीहि लिअन्नहू लैस फ़ीहि इज्तिराउन बितिल्कर्रअ़ति**'

ख़ुलास़ा ये कि बक़ौले अ़ल्लामा शौकानी इस ह़दीष़ से ये इस्तिदलाल स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि अगर ह़दीष़ में ये स़राह़त नहीं है कि आपने इसे उस रकअ़त के लौटाने का हुक्म नहीं फ़र्माया तो साथ ही मन्क़ूल ये भी नहीं कि इस रकअ़त को काफ़ी

तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को पैदा किया था। (राजेअ : 389) M-09825696131 الله مُحَمَّدًا ﷺ. [راجع: ٣٨٩]

यानी तेरा ख़ात्मा मआज़ल्लाह कुफ़्र पर होगा। जो लोग सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुख़ालफ़त करते हैं उनको इस तरह ख़राबी ख़ात्मे से डरना चाहिए। सुब्हानल्लाह अहले हदीष़ का जीना और मरना दोनों अच्छा। मरने के बाद आँहज़रत (ﷺ) के सामने कुछ शर्मिन्दगी नहीं। आपकी हदीष़ पर चलते रहे जब तक जिये ख़ात्मा भी हदीष़ पर हुआ। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम रह)

बाब 120 : रुकूअ में पीठ को बराबर करना। (सर ऊँचा-नीचा न रखना) अबू हमद (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने रुकूअ किया, फिर अपनी पीठ पूरी तरह झुका दी।

١٢٠- بَابُ اسْتِوَاءِ الظَّهْرِ فِي الرُّكُوعِ وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ فِي أَصْحَابِهِ: رَكَعَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ هَصَرَظَهْرَهُ

बाब 121 : रुकूअ पूरी तरह करने की और उसमें ए'तिदाल व तमानियत की (हद क्या है?)

١٢١- بَابُ حَدِّ إِتْمَامِ الرُّكُوعِ وَالاعْتِدَالِ فِيهِ، وَالاطْمَأْنِينَةِ

कुछ नुस्ख़ों में ये बाब अलग नहीं है और दरहक़ीक़त ये अगले ही बाब का एक जुज़ है और अबू हुमैद (रज़ि) की तअलीक़ इसके अव्वल जुज़ के बारे में है और बराअ की हदीष़ पिछले जुज़ से। अब इब्ने मुनीर का ए'तिराज़ दूर हो गया कि हदीष़ बाब के मुताबिक़ नहीं है, कज़ा क़ालल हाफ़िज़।

(792) हमसे बदल बिन महब्बर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे हकम ने इब्ने अबी लैला से ख़बर दी, उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से, उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) के रुकूअ व सुजूद, दोनों सज्दों के बीच का वक़्फ़ा और जब रुकूअ से सर उठाते तो तक़रीबन सब बराबर थे। सिवा क़ियाम और तशह्हुद के कुऊद के। (दीगर मक़ाम : 801, 820)

٧٩٢- حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمُحَبَّرِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْحَكَمُ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: (كَانَ رُكُوعُ النَّبِيِّ ﷺ وَسُجُودُهُ وَبَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ - مَا خَلاَ الْقِيَامَ وَالْقُعُودَ - قَرِيبًا مِنَ السَّوَاءِ).

[طرفاه في : ٨٠١، ٨٢٠].

क़ियाम से मुराद क़िरात का क़याम है और तशह्हुद का क़ऊद, लेकिन बाक़ी चार चीज़ें यानी रुकूअ और सज्दा और दोनों सज्दों के बीच में क़अदा और रुकूअ के बाद क़ोमा ये सब क़रीब क़रीब बराबर होते। हज़रत अनस (रज़ि) की रिवायत में है कि आप (ﷺ) रुकूअ से सर उठाकर इतनी देर तक खड़े रहते कि कहने वाला कहता आप भूल गये हैं। हदीष़ के मुताबक़त बाब के तर्जुम से इस तरह है कि इससे रुकूअ में देर तक ठहरना षाबित होता है। तो बाब का एक जुज़ यानी इत्मीनान इससे निकल आया और ए'तिदाल यानी रुकूअ के बाद सीधा खड़ा होना वो भी इस रिवायत से षाबित हो चुका। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं कि इस हदीष़ के कुछ तरीक़ों में जिनको मुस्लिम ने निकाला है ए'तिदाल लम्बा करने का ज़िक्र है। तो इससे तमाम अरकान का लम्बा करना षाबित हो गया।

बाब 122 : नबी करीम (ﷺ) का उस शख़्स को नमाज़ दोबारा पढ़ने का हुक्म देना जिसने रुकूअ पूरी तरह नहीं किया था

١٢٢- بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لاَ يُتِمُّ رُكُوعَهُ بِالإِعَادَةِ

बाब 122 : नबी करीम (ﷺ) का उस शख़्स को नमाज़ दोबारा पढ़ने का हुक्म देना जिसने रुकूअ पूरी तरह नहीं किया था

١٢٢- بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لاَ يُتِمُّ رُكُوعَهُ بِالإِعَادَةِ

(793) हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने उ़बैदुल्लाह उ़मरी से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। इतने में एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ने लगा। नमाज़ के बाद उसने आकर नबी करीम (ﷺ) को सलाम किया। आप (ﷺ) ने सलाम का जवाब देकर कहा कि वापस जाकर दोबारा नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। चुनाँचे उसने दोबारा नमाज़ पढ़ी और वापस आकर फिर आपको सलाम किया। आपने इस बार भी यही फ़र्माया कि दोबारा जाकर नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ पढ़ी। तीन बार इसी तरह हुआ। आख़िर उस शख़्स ने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको ह़क़ के साथ मबऊ़ष़ फ़र्माया। मैं तो इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। इसलिए आप मुझे सिखलाइए। आपने फ़र्माया जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो (पहले) तक्बीर कह फिर क़ुर्आन मजीद में से जो कुछ तुझसे हो सके पढ़, उसके बाद रुकूअ कर और पूरी तरह रुकूअ में चला जा। फिर सर उठा और पूरी तरह खड़ा हो जा। फिर जब तू सज्दा करे तो पूरी तरह सज्दा में चला जा। फिर (सज्दा से) सर उठाकर अच्छी तरह बैठ जा। दोबारा भी इसी तरह सज्दा कर। यही त़रीक़ा नमाज़ की तमाम (रक्अ़तों में) रख। (राजेअ : 757)

٧٩٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَرَدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ السَّلاَمَ فَقَالَ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ))، فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) (ثَلاَثًا) فَقَالَ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ فَمَا أُحْسِنُ غَيْرَهُ فَعَلِّمْنِي. قَالَ: ((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلاَةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ افْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلاَتِكَ كُلِّهَا)). [راجع: ٧٥٧]

तश्रीह़ : इसी ह़दीष़ को बरिवायत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ इब्ने अबी शैबा ने यूँ रिवायत किया है कि उस शख़्स ने रुकूअ और सज्दा पूरे त़ौर पर अदा नहीं किया था। इसलिए आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे नमाज़ लौटाने का हुक्म फ़र्माया। यही बाब का तर्जुमा है। ष़ाबित हुआ कि ठहर ठहरकर इत्मीनान से हर रुक्न का अदा करना फ़र्ज़ है। उस रिवायते बुख़ारी में ये है कि आपने उसे फ़र्माया कि पढ़ जो तुझे क़ुर्आन से आसान हो। मगर रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ की रिवायत इब्ने अबी शैबा में साफ़ यूँ मज़्कूर है, **ष़ुम्म इक़्रः बिउम्मिल क़ुर्आन व माशाअल्लाहु** यानी पहले सूरह फ़ातिह़ा पढ़ फिर जो आसान हो क़ुर्आन की तिलावत कर। इस तफ़्सील के बाद इस रिवायत से सूरह फ़ातिह़ा की अ़दमे रुक्नियत पर दलील पकड़ने वाला या तो तफ़्सीली रिवायात से नावाक़िफ़ है या फिर तअ़स्सुब का शिकार है।